

श्री माथुर चतुर्वेदी महापरिषद

वर्ष 01 अंक -2



मई 2023



कुल देवी महाविद्या मंदिर, मथुरा

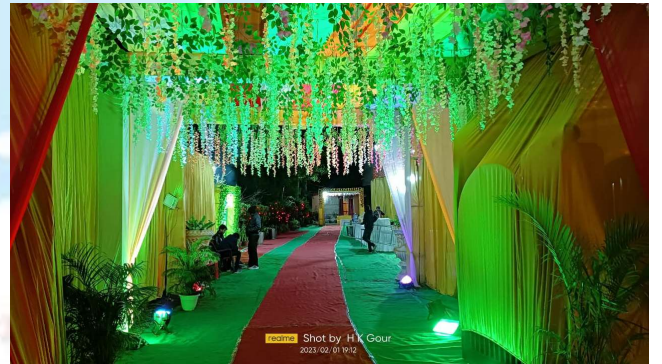
≡ समाज दर्पण ≡



≡ समाज दर्पण ≡



KC EVENT & CATERERS



Tarun Chaturvedi
9826530965

Madhur Chaturvedi
8871710051

Mayur Chaturvedi
8871710050

Address- 1. vashay samaj bhavan vneet kunj kolar
2. Gangour bhavan DK2 oblic16 near post office danish kunj

≡ समाज दर्पण ≡

Reg. No-AAWCA0902GF20229
BANK A/C No-4022002100016466
IFSC Code - PUNB0402200

Mob-9311006052
Email-ashokchaturvedi53@gmail.com



ASHOK HARISH CHAND FOUNDATION

TO RUN PROJECT-SENIOR CITIZEN, CHILD EDUCATION, HEALTH

Business Associate: SMC Global Securities Ltd (Deal in Share Market)

Insurance Advisor: HDFC Life Insurance Company Ltd

(Agency Code-HDF00484401)

General Insurance Advisor: New India Insurance Company Ltd

(Agency Code-AG00066425)

Health Insurance Advisor: Care Health Company Ltd (HP Code-RLH20514819)

Add - B-50 BALRAM NAGAR P.O LONI DIST. GHAZIABAD - 201102

AAA BROTHERS

SMC GLOBAL SECURITIES LTD.

ANKIT CHATURVEDI

Port Folio Management
& Technical Research Analyst

MOBILE NO: 9818478765

EMAIL ID: ankitchat@yahoo.com

Website: www.smcindiaonline.com



AXIS SECURITIES LTD.

SURABHI CHATURVEDI

Authorised Person of Axis
Securities Ltd.

BSE APO1316301144248

NSE AP2064005841

MOBILE NO: 9971045486

EMAIL ID: joychonu@gmail.com

Website: www.axisdirect.in



Services:- Equities, Commodities, online share trading, mutual funds, IPOs, FDs,
Insurance Broking, Investment Banking, PMS & Wealth Advisory

BUSINESS LEADER

- * PNB MetLife Life Insurance Co. Ltd.
- * HDFC Life Insurance Co. Ltd.
- * BIRLA SUN Life Insurance Co. Ltd.
- * BHARTIA AXA Life Insurance Co. Ltd.
- * TATA AIA Life Insurance Co. Ltd.
- * LIFE Insurance Corporation of India.

Office Address: B-50 BALRAM NAGAR, P.O. LONI-DIST. GHAZIABAD - 201102



अंक- 02

मई- 2023 वर्ष- 01

सभापति

नीरज चतुर्वेदी

मो0नं0 8529120404

Email- neeraj1965bjp@gmail.com

महामंत्री

प्रणव चतुर्वेदी (चेतन) (संगठन, कानपुर)

मो0नं0 9935533719

श्री निशीथ चतुर्वेदी, डबरा

मो0नं09977441400

श्री रोहित चतुर्वेदी

मो0नं0 9358111333

कोषाध्यक्ष

भारत चतुर्वेदी (कानपुर)

मो0नं0 9792115115

सम्पादक सलाहकार मण्डल

निशीथ चतुर्वेदी,

अमित पाण्डेय

संकेत चतुर्वेदी, गाजियाबाद

तरुण चतुर्वेदी, पुनीत चतुर्वेदी भोपाल

सम्पादक

अतुल वी0 एन0 चतुर्वेदी

मो0नं0 9412320994 (Whatsup No.)

Email-editor.magazine2023@gmail.com

पत्रिका से सम्बन्धित पत्र व्यवहार का पता-

237, सिविल लाइन्स इटावा

नोट- पत्रिका में प्रकाशित सामग्री लेखकों के व्यक्तिगत विचार हैं इसमें सम्पादक का कोई विधिक उत्तरदायित्व नहीं है। सभी विवादों के निस्तारण का न्याय क्षेत्र जयपुर राजस्थान होगा।

श्री माथुर चतुर्वेदी महापरिषद

सभापति की कलम से	08
महामंत्री की कलम से	09-10
संपादकीय	11
शुभ सन्देश	12-13
चतुर्वेदियों को जानें क्विज प्रतियोगिता-1	14
बदलते वक्त का एहसास हम और हमारा समाज	15
शब्दों की ताकत	16
संस्कार परिचय	17-19
समाज में बढ़त तलाक पर परिवार व समाज की भूमिका	20
माथुर चतुर्वेदी और गोत्र	21-25
कशमकश	26-28
श्री माथुर चतुर्वेदी महापरिषद राज0 की प्रदेश कार्यकारिणी	29
श्री माथुर चतुर्वेदी महापरिषद हरियाणा की प्रदेश कार्यकारिणी	30
श्री माथुर चतुर्वेदी महापरिषद मध्य प्रदेश की प्रदेश कार्यकारिणी	31-32
श्री माथुर चतुर्वेदी महापरिषद गुजरात एवं कर्नाटक की प्रदेश कार्यकारिणी	33
श्री माथुर चतुर्वेदी सभा कोलकता प्रदेश कार्यकारिणी	34
श्री माथुर चतुर्वेदी महिला महापरिषद की राष्ट्रीय कार्यकारिणी	35
श्री माथुर चतुर्वेदी महिला महापरिषद की राष्ट्रीय कार्यकारिणी	36
श्री माथुर चतुर्वेदी महापरिषद मुरैना जिला कार्यकारिणी	37
श्री माथुर चतुर्वेदी महापरिषद जहाँगीरपुर कासगंज की जिला कार्यकारिणी	38
श्री माथुर चतुर्वेदी महापरिषद करौली जिला कार्यकारिणी	39
सूचना	40
निवेदन	41
श्री माथुर चतुर्वेदी महापरिषद उत्तराखण्ड की प्रदेश कार्यकारिणी बैठक	42
लखनऊ में गोष्ठ/भूलसुधार	43
जनम चतुर्वेदी कुल लीना/मेशी माँ	44
गज़ल/चतुर्वेदी यशोगाथा	45
चौबे की मस्ती/पालागन	46
शोक संवेदना	47
मेथी मूंग का साग/सहयोग राशि सारिणी	48
मिलन का श्री गणेश कुछ ऐसा होगा कल्पित नहीं था	49
जनगणना एवं सदस्यता अभियान	50
गौरव के पल/विनीता चतुर्वेदी को मिला सम्मान	51

श्री माथुर चतुर्वेदी महापरिषद के लिए सभापति नीरज चतुर्वेदी द्वारा मुद्रक एच0आर0 एन्टरप्राइजेज द्वारा प्रकाशित, संपादक- अतुल वी.एन. चतुर्वेदी

सभापति की कलम से



हम सब अपना-अपना सोचते हैं। इस सोच से निकलकर हम कुछ अपने पास पड़ोस, परिवार, समाज की चिन्ता भी करे, तो मानव जीवन की सार्थकता पूर्ण हो सकती हैं। ये मेरा अपना विचार आपके विचार हेतु प्रस्तावित है।

हमारी सामाजिक एकजुटता के लिए संवाद का होना आवश्यक है।

हमारी संवादहीनता ही हमारी दूरी का कारण है।

स्वच्छ विचारों का आदान प्रदान ही प्रेम भाव जागृत कर सेतु निर्माण का कार्य करेगा।

चिन्ता का विषय है, हमारा सामाजिक सरोकार ही कम होता जा रहा है।

हमारा गमी ब शादी समारोह तक ही सीमित रह जाना ये महज औपचारिकता मात्र नजर आती हैं।

पंगत को छोड़, बफर के सफर ने अपनी आत्मीयता और मनुहार को अपनो से दूर कर दिया है।

हमें आवश्यकता है समय के बदलते परिवेश में जैसे हम पिकनिक पर जाते हैं उसी प्रकार वर्ष में दो बार सामाजिक एकत्रीकरण के कार्यक्रमों में भी सपरिवार अपनी उपस्थिति दर्ज करें।

इससे सामाजिक समरसता तो बढ़ेगी एवं संस्कारों को नवीन पीढ़ी में जीवंत बनाए रखा जा सकेगा। माता पिता के सामने, युवा पीढ़ी का मिलना-जुलना ही कई समस्याओं का हल है।

ऐसे कार्यक्रमों में हमारे बुजुर्गों के दर्शन उनका आशीर्वाद, और मार्गदर्शन हमारे अंदर एक नई ऊर्जा का संचार भी करेगा।

सामूहिक रूप से, साल के ऐसे दो सामाजिक त्यौहार अपने स्थानों पर अवश्य आयोजित करने का संकल्प ही हमारी कई समस्याओं का समाधान है।

समाजिक एकता के लिए सामाजिक संस्कृति दर्शन के लिए अपने पूर्वजों की पुण्य भूमि अपने गांव के साथ अपनी पैतृक भूमि मथुरा, अपनी कुलदेवियों व मां यमुना पूजन पूरे परिवार के साथ साल में एक बार करें व अपने गुरुजन का आशीर्वाद मिल जाना भी हमारी श्रेष्ठता का परिचायक नजर आएगा।

‘आजमाती है जिंदगी उसी को,
जो मुश्किल रास्तों पे चलना जानता है,
जिंदगी में जीत भी, उसी की होती है,
जो हारकर भी, मुस्करना जानता है’

सभी बंधु बहनों को सादर पालागन जय श्री कृष्णा।

आपका अपना
(नीरज चतुर्वेदी)
सभापति

महामंत्री की कलम से



आदरणीय सभी चतुर्वेदी समाज के बांधवों को सादर यथायोग्य पालागन एवं जय श्री कृष्णा ।

श्री माथुर चतुर्वेदी महापरिषद की प्रथम बैठक चंडीगढ़ में 9 अप्रैल 2023 को आयोजित हुई इस सफल आयोजन के लिये महापरिषद पंजाब के प्रदेश अध्यक्ष श्री किशन चतुर्वेदी जी ,श्री अनुराग चतुर्वेदी (टिल्लू जी) के साथ समस्त चंडीगढ़ निवासरत चतुर्वेदी परिवार के सदस्यों का हृदय से आभार व्यक्त करता हूं। कार्यक्रम अभूतपूर्व रूप से सफल हुआ जिसके लिये कहीं ना कहीं समस्त समाज की अभिलाषा के ही दर्शन हो रहे थे हम सभी महापरिषद के सदस्य खुद ही विस्मृत एवं हतप्रभ थे कारण जिसकी कल्पना स्वयं हम सभी को नहीं थी ऐसा समागम अभिभूत थे सभी उपस्थित सदस्य । इसके पश्चात संस्थापकों की 8 अप्रैल की बैठक में जिस प्रकार का सहयोग और उत्साह था उसका वर्णन में शब्दों में व्यक्त नहीं कर सकता बेहद आत्मीयता का अहसास था । वर्तमान में समाज की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुये और समाज की मूलभूत परिस्थितियों पर महापरिषद के आदरणीय संरक्षकों ,सभापति जी के साथ पदाधिकारियों का उदबोधन एवं अन्य सदस्यों के विचारों ने अहसास करा दिया की समाज अब पूर्ण रूप से एकीकृत होकर बृहद रूप से कार्य करने के लिये आकार ले चुका है। ये अंगड़ाई अब अवश्य ही कल के आगमन की पूर्व सूचना है। संविधान का विमोचन रात्रि कालीन 9 बजे से संविधान के समिति सदस्यों की बैठक श्री सतेन्द्र चतुर्वेदी जी संविधान समिति संयोजक के साथ विचार विमर्श के पश्चात संविधान को पूर्ण स्वरूप में रजिस्ट्रेशन हेतु सौंपा गया जिसकी जिम्मेदारी संरक्षक श्री एड. विवेकानंद चतुर्वेदी, (V-N-J) को अधिकृत किया गया। अगले दिन प्रातः पुनः द्वितीय सत्र प्रारम्भ हुआ जिसमें सभी सदस्यों का परिचय पद एवं निवास स्थान के साथ पंजाब प्रदेश के पुलिस महानिरीक्षक श्री राजेंद्र सिंह जी का आगमन एवं उनके द्वारा समाज के सदस्यों का पंजाब की पुण्य भूमि पर स्वागत और ऋषिकुल चतुर्वेदी समाज के सम्बन्ध में जो उदगार थे वो कहीं ना कहीं समाज की कीर्ति पताका का ही अनावरण करा रहे थे। कार्यक्रम राष्ट्रीय जनगणना प्रमुख एवं संयोजक श्री चंद्र प्रकाश चतुर्वेदी जी सी ए , मुम्बई (सी.पी.जी) के द्वारा जनगणना क्यों और उसके भविष्य में क्या परिणाम प्राप्त होंगे इस पर विस्तृत विचार व्यक्त किये वर्तमान में यदि समाज की जनसंख्या की यदि बात हो तो कोई भी सदस्य आज इसको सही तो क्या लगभग भी नहीं बता सकता जब हमें अपनी संख्या की ही पूर्ण जानकारी नहीं होगी तो भविष्य के कार्यक्रम किस प्रकार बनेंगे इसलिये इस महत्वपूर्ण कार्य में समाज की सहभागिता के लिये समाज के प्रत्येक सदस्य से प्रार्थना करता हूं। कार्यक्रम के इसी चरण में महापरिषद की पत्रिका का विमोचन हुआ जिसके लिये सम्पादक श्री अतुल वी.एन. चतुर्वेदी जी की मेहनत ने दर्शा दिया कि उनकी योग्यता हमारे समाज के साहित्यिक दर्शन का ही प्रतिबिम्ब है। कार्यक्रम में महिला शक्ति के उत्साह का अहसास राष्ट्रीय संयोजिका के द्वारा प्रभावी सम्बोधन के साथ सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रतिभावान समाज की युवा बेटियों का संस्कारिक नृत्य के साथ साथ सहभागिता श्री किशन जी की बेटि के पुत्र चि. मलय द्वारा एक ऐसा प्रदर्शन जो की कहीं ना कहीं ये अहसास करा गया की हमारी आगे आने वाली पीढ़ी कितनी प्रतिभावान है। मैं समस्त उपलब्ध सदस्यों का नाम नहीं लिख सकता हमारे सभी संरक्षकों ने अहसास करा दिया की तन,मन,धन किसी भी प्रकार की आवश्यकता पर समाज पीछे नहीं हटेगा। आवश्यकता सिर्फ सही दिशा में आगे बढ़ने की है। और उपस्थित सदस्यों ने भी ये आगाज करा दिया उनके मार्गदर्शन में समाज अब आगे बढ़ने को तैय्यार है। किसी भी त्रुटि के लिये जो मेरे लेख में रह गई हो जिसका उल्लेख में यहां ना कर सका हूं आशा है क्षमा कर देंगे। मैं सभी का हृदय से आभार व्यक्त करता हूं एवं सम्पूर्ण समाज से सकारात्मक दृष्टि से मार्गदर्शन का आहवाहन करता हूं। यहां सभी उपस्थित संरक्षकों, पदाधिकारियों सदस्यों का उल्लेख नहीं करना सम्भव नहीं अतः मैं सभी के प्रति कृतज्ञता से आभार व्यक्त करता हूं। पुनः महापरिषद बिना किसी द्वेष एवं भेदभाव के साथ समाज के लिये पारदर्शिता से कार्य करेगी।

प्रणव चतुर्वेदी "चेतन"

महामंत्री (संगठन) कानपुर

महामंत्री की कलम से



आदरणीय बंधु एवं भगिनी

सादर पालागन।

महापरिषद के गठन के अल्पसमय में संगठन की सफलता यह बता रही है कि सम्पूर्ण चतुर्वेदी समाज का इसे भरपूर सहयोग एवं आशीर्वाद प्राप्त है। अल्पकाल में 19 राज्यों में कार्यकारिणी गठन डिजिटल पत्रिका का विमोचन आप सभी के सहयोग एवं आशीर्वाद का परिणाम है। चंडीगढ़ में आयोजित प्रथम कार्यकारिणी बैठक की सफलता एक और इशारा देती है कि हम सभी सही रास्ते पर चल रहे हैं। समाज के सदस्यों का उत्साह देखकर लगता है कि शायद श्री माथुर चतुर्वेदी महापरिषद के गठन का विचार समाज के संयुक्त चिंतन का फल है जिसे वर्षों की तपस्या से पल्लवित किया गया है। संगठन के रूप में कार्य करने का असली समय अब आ रहा है हमारे सामने अनेक चुनौतियां हैं पहले उन्हें समझना है और योजनाबद्ध तरीके से उन पर काम शुरू करना है इसके लिए सबसे महत्वपूर्ण कार्य है जनगणना हेतु अधिकतम आंकड़े एकत्रित करना। इसके लिए समाज के हर व्यक्ति का सहयोग जरूरी है जनगणना के आंकड़े लेते समय एक बात सामने आई कि कुछ लोग समाज के व्यक्तियों को आंकड़े देने से रोक रहे हैं उनका कहना है कि जनगणना के आंकड़े देने से आप महापरिषद के सदस्य हो जाएंगे। यहां यह भ्रांति दूर करना जरूरी है कि जनगणना के आंकड़े पूरे समाज के एकत्रित किए जा रहे हैं जबकि सदस्यता हेतु "संकल्प पत्र" केवल उन्हीं सदस्यों से भरवाए जा रहे हैं जो श्री माथुर चतुर्वेदी महापरिषद की सदस्यता लेने हेतु इच्छुक हैं आप सभी से निवेदन है कि इस भ्रांति को दूर करने में मदद करें तथा अधिक से अधिक समाज के व्यक्तियों के आंकड़े जनगणना लिंक के माध्यम से फीड करवाएं, जनगणना के आंकड़े आने पर प्रारंभिक योजना बनाने में बहुत मदद होगी तथा सार्थक योजनाएं तैयार की जा सकेंगी। राज्य कार्यकारिणियों की बैठकें शुरू हो गई हैं राष्ट्रीय महिला एवं युवा कार्यकारिणियों की बैठकें भी जल्द ही आयोजित होंगी हमारे साथ योग्य एवं अनुभवी संरक्षक मंडल, सभापति महोदय, राष्ट्रीय कार्यकारिणी, राज्यों के अध्यक्ष तथा राज्य और जिला कार्यकारिणी सदस्यों की विशाल टीम है आप सभी से अनुरोध है कि समाज को एक धारा में लाने के लिए आप सभी अपने अपने भागीरथी प्रयास इसी प्रकार करते रहें इसी माह की डिजिटल पत्रिका में बच्चों तथा युवाओं के लिए दो प्रतियोगिताओं को आयोजित किया जाना बच्चों तथा युवाओं को समाज से जोड़ने में मील का पत्थर साबित होगा तथा इसमें पूछे जाने वाले प्रश्न और उनके उत्तर न केवल बच्चों तथा युवाओं को समाज के रीति रिवाजों से परिचित कराएंगे बल्कि हम सभी लाभान्वित होंगे।

समाज को झूठे वादे नहीं सार्थक परिणाम देने वाले रास्ते पर हम सब चल सकें यही प्रार्थना मां यमुना, कुलदेवी चर्चिका और महाविद्या देवी के श्री चरणों में निवेदित कर सम्पूर्ण चतुर्वेदी समाज के सहयोग एवं आशीर्वाद की प्रतीक्षा रहेगी आपके 'संकल्प पत्र' हमारे लिए ऊर्जा के श्रोत के रूप में कार्य करेंगे अतः अधिक से अधिक संकल्प पत्र भरवाकर संगठन को मजबूत करें।

जय श्री कृष्णा। राधे राधे।

आपका ही

निशीथ चतुर्वेदी

राष्ट्रीय महामंत्री, डबरा

संपादकीय



सभी को मेरा

यथायोग पालागन।

श्री माथुर चतुर्वेदी महापरिषद की डिजिटल पत्रिका का द्वितीय अंक यानि 'मई 2023' आपके समक्ष प्रस्तुत है। महापरिषद के समस्त आदरणीय संरक्षकगण एवं यशस्वी सभापति जी एवं उनकी ऊर्जावान टीम पूरी शक्ति एवं मन के साथ चतुर्वेदी बांधवों को एकत्रित करने में लगी हुई है जिसके लिए श्री माथुर चतुर्वेदी महापरिषद की राष्ट्रीय कार्यकारिणी ने देश के 19 राज्यों में प्रदेश अध्यक्ष मनोनीत करने के साथ ही साथ 15 राज्यों में कार्यकारिणी को घोषित भी कर दी है। प्रदेश कार्यकारिणी की बैठकें भी शुरू हो चुकी है। जिनकी जानकारियां आपको इस अंक में पढ़ने को मिलेंगी। समाज निर्माण में महिलाओं एवं युवा पीढ़ी की भी अधिक महत्वपूर्ण भूमिका है इसलिए महापरिषद ने राष्ट्रीय युवा परिषद और राष्ट्रीय महिला परिषद का गठन किया है। जिसकी विस्तृत जानकारी इस अंक में प्रकाशित की जा रही है। इस अंक में युवा पीढ़ी से जुड़ी प्रतियोगिता शुरू की जा रही है जिससे बच्चे अपने आप को पहचाने और समाज को जानें। जिसको दो आयु वर्ग में विभाजित किया गया है। विजेताओं को सम्मानित भी किया जाएगा। संपादक मंडल का प्रयास रहेगा कि एक

युवा विशेषांक एवं एक महिला विशेषांक भी प्रकाशित करें जिसमें इन दोनों ही वर्गों के लिए कैरियर, स्वास्थ्यवर्धक, मनोरंजन संबंधित जानकारियां साझा की जाएंगी और इनके प्रतिभा से आप सबको छुपी हुई प्रतिभाओं से परिचित कराया जाएगा। जिससे समाज को भी इनकी प्रतिभा का लाभ मिलेगा।

पत्रिका के लिए जो रुचि समाज की बढ़ी है उसके लिए आप सबका आभार। आप सबसे निवेदन है कि अपनी रचनाएं, उपलब्धियां, सूचनाएं तथा अपने अपने महत्वपूर्ण दिनों को यादगार बनाने एवं खुशियों में शामिल करने के लिए पत्रिका में विज्ञापन प्रकाशित कराके पत्रिका प्रकाशन में सहयोग करें।

पत्रिका के आगामी अंक युवा विशेषांक एवं महिला विशेषांक होंगे। पत्रिका के अगले अंकों के लिए हेतु आपकी स्वरचित रचनाएँ आमंत्रित हैं। आपकी रचनाएँ निम्नानुसार होनी चाहिए—

1—कहानियाँ (कहानियाँ अधिकतम 2500 शब्दों की हो)।

2—कविताएँ (अधिकतम आधा पृष्ठ)

3—श्री माथुर चतुर्वेदी समाज के इतिहास, रीति रिवाजों और संस्कृति पर लेख (अधिकतम 2500 शब्द)

4—बच्चों के लिए कहानी (अधिकतम 1000 शब्द), कविता, ज्ञानवर्धक लेख धपहेलियाँ

5—विज्ञान आधारित लेख (किसी वैज्ञानिक का शोध/जीवनी जाएगी। अधिकतम 2000 शब्द)

6—लघुकथा (अधिकतम 500 शब्द)

7—युवाओं के मन की बात युवा रचनाकारों द्वारा (युवा लेखक "वर्चुअल दुनिया— कितनी अपनी" विषय पर अपने विचार/रोचक अनुभव 'प्रेरणादायी घटना' अपेक्षायें आदि लिपिबद्ध करके भेज सकते हैं। (अधिकतम 1000 शब्द)

'रचना के चयन में सम्पादक मण्डल के निर्णय को अंतिम माना जाएगा।

'अपनी रचना 31 मई 2023 तक निम्नलिखित मेल आईडी editor.magazine2023@gmail.com पर अवश्य भेज दें।

सादर पालागन

अतुल वी0एन0 चतुर्वेदी

सम्पादक

मो0नं0 9412320994



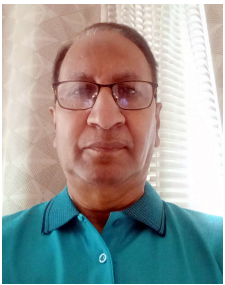
शुभ सन्देश

मुझे हार्दिक प्रसन्नता है कि नव-गठित "श्री माथुर चतुर्वेदी महापरिषद" का प्रथम अधिवेशन ६ अप्रैल २०२३ को चंडीगढ़ में सफलता से संपन्न हुआ। इस भव्य आयोजन के लिए पंजाब और चंडीगढ़ के प्रदेश अध्यक्ष तथा उनकी समस्त कार्यकारिणी उत्तम व्यवस्था के लिए साधुवाद के साथ भूरि-भूरि प्रशंसा के अधिकारी हैं। माथुर चतुर्वेदी रोजगार की खोज में अपने मूल स्थानों से निकलकर अब भारत के कौने-कौने में बस गए हैं। समय के साथ मूल स्थान से संबंध शिथिल होने के कारण स्वयं को समाज से अलग-थलग महसूस कर रहे थे। इस वजह से विखराव भी हो रहा था। ऐसे समय समाज के कुछ प्रबुद्ध जनों ने एक अखिल भारतीय संगठन का गठन करके समाज को एकजुट करने का सराहनीय प्रयास किया है। मैं हरियाणा प्रदेश कार्यकारिणी के सभी सदस्यों के साथ "श्री माथुर चतुर्वेदी महापरिषद" के राष्ट्रीय संरक्षक मंडल एवं माननीय सभापति जी का सादर अभिनन्दन करता हूँ कि उन्होंने माथुर चतुर्वेदियों के ७ गोत्रों तथा ६४ अल्लों को राष्ट्रीय कार्यकारिणी में समुचित प्रतिनिधित्व देते हुए भारत के सभी प्रान्तों को शामिल किया है। इसके साथ ही प्रांतीय कार्यकारिणी का गठन करके समाज के जन-जन तक पहुँचने और जोड़ने का महत्वपूर्ण कार्य भी किया है। अधिवेशन में भारी संख्या में लोग दूर-दूर से पहुँचे जो दर्शाता है कि अल्प समय में ही महापरिषद समाज में आशा तथा उमंग की लहर लाने में सफल हुई है। चंडीगढ़ अधिवेशन को सफल बनाने में भागीरथ परिश्रम लगा है। इस सफल प्रबंधन के लिए मैं पंजाब के प्रांतीय अध्यक्ष आदरणीय श्री किशन चतुर्वेदी का विशेष आभार प्रकट करता हूँ।

प्रथम अधिवेशन के शुभ अवसर पर महापरिषद डिजिटल पत्रिका का विमोचन भी अत्यंत सफल रहा। डिजिटल पत्रिका के प्रकाशन से महापरिषद के कार्य और योजनाएं जनसामान्य तक पहुँच सकेंगी। इसके साथ ही जनसामान्य की समस्याएँ एवं सुझाव भी महापरिषद के संज्ञान में आ सकेंगी। डिजिटल पत्रिका समाज सेवा एवं आपसी संवाद के अपने मिशन में पूर्ण सफल हो, इस मंगल कामना के साथ बहुत-बहुत वधाई तथा शुभकामनाएं प्रेषित करता हूँ।

पालागन, शुभेक्षु

डा. धीरज कुमार चतुर्वेदी, कुरुक्षेत्र/जहाँगीरपुर
रिटायर्ड प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, भौतिकी विभाग
कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र (हरियाणा)
अध्यक्ष, माथुर चतुर्वेदी महापरिषद हरियाणा

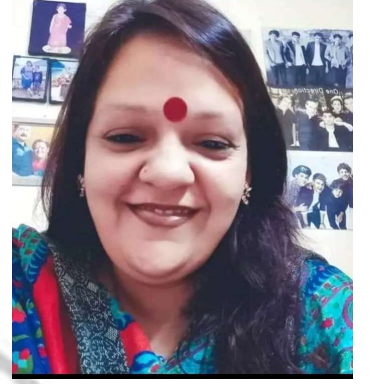


श्री माथुर चतुर्वेदी महापरिषद का जो प्रयास है कि सभी बान्धवों को एकत्रित करने का वह बड़ा ही सराहनीय और प्रशंसनीय है। श्री माथुर चतुर्वेदी महापरिषद द्वारा उन क्षेत्रों के भी बांधवों को संगठित किया जा रहा है जहाँ अभी तक समाज के लोग नहीं पहुँच पाये थे। इस कार्य के लिये मैं सभी को बहुत-बहुत साधुवाद देता हूँ और मंगल कामना करता हूँ कि यशस्वी सभापति नीरज चतुर्वेदी के नेतृत्व में समाज संगठित और एकत्रित हो।

सादर पालागन।

गिरिराज किशोर चतुर्वेदी (काका)
संरक्षक श्री माथुर चतुर्वेदी महापरिषद
कानपुर-मुम्बई

शुभ सन्देश



नमस्कार साथियों,

सर्वप्रथम उन सभी लोगों का धन्यवाद जिन्होंने आज श्री माथुर चतुर्वेदी महापरिषद की प्रथम आभासी बैठक में भाग लिया। मीटिंग मिनिट आपके साथ संक्षेप में साझा करना चाहूंगी।

आज महापरिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष नीरज चतुर्वेदी जी, प्रणव चतुर्वेदी जी, निशीथ चतुर्वेदी जी, आशीष चतुर्वेदी जी एवं सी0पी0 चतुर्वेदी जी के सान्निध्य में इस आभासी बैठक में सम्मिलित होने से महापरिषद के स्वरूप को समझने का मौका मिला। इस बैठक की अध्यक्षता श्री निशीथ चतुर्वेदी जी द्वारा की गई। बैठक में जुड़े सभी साथियों ने सर्वप्रथम अपना परिचय दिया। हमारी साथियों के मन में अनेकों संशय थे जिनका इन सभी बड़ों ने बारी-बारी निवारण किया।

श्री माथुर चतुर्वेदी महापरिषद और श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा के अंतर से शुरू हुए प्रश्नों पर महापरिषद की ओर से राष्ट्रीय अध्यक्ष नीरज चतुर्वेदी जी, संगठन की ओर से प्रणव जी, निशीथ जी और जनगणना प्रकोष्ठ से सी0पी0 भाईसाहब ने लगातार संशय दूर कर कार्यशैली, महापरिषद की दिशा और दशा, जिम्मेदारियां, कार्यक्रम और उनके क्रियान्वन पर रणनीति बनाने पर चर्चा की गई।

युवा प्रकोष्ठ के राष्ट्रीय संयोजक आशीष चतुर्वेदी जी ने युवाओं के सहयोग और भागीदारी पर विशेष ध्यान देने का आश्वासन देते हुए शिक्षा, रुचि अनुरूप व्यापार रोजगार आदि में उनकी सहायता करने का प्रबल इरादा जाहिर किया ताकि समाज में युवाओं की रुचि बने और वो अपनी योजनाओं, संशयों पर खुल कर चर्चा करें और महापरिषद उनका मार्गदर्शन कर सके।

जुलाई में राष्ट्रीय महिला प्रकोष्ठ के सेमिनार और अगस्त में मथुरा में होने वाली बैठक के विषय में चर्चा हुई।

महापरिषद की ओर से श्री नीरज चतुर्वेदी जी और सी.पी. चतुर्वेदी जी ने महिला प्रकोष्ठ से आग्रह किया है कि चतुर्वेदी बांधवों की जनगणना हेतु भेजे गए गूगल फॉर्म को भरकर इसमें सहयोग करें। इसी विषय पर महिला प्रकोष्ठ की राष्ट्रीय संयोजक होने के कारण मैं स्वयं भी आपसे अनुरोध करती हूँ कि प्रत्यक्ष रूप से फॉर्म भरना चाहें तो मुझसे संपर्क कर सकते हैं। इस समय के लिए इतना ही। अगली बार से बिन्दुबार में मीटिंग मिनिट साझा करूंगी।

धन्यवाद

निकिता चतुर्वेदी
राष्ट्रीय संयोजक
श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा



शुभ सन्देश

श्रीमती प्रीति चतुर्वेदी कानपुर श्री माथुर चतुर्वेदी महिला परिषद की राष्ट्रीय प्रभारी मनोनीत। श्री माथुर चतुर्वेदी महापरिषद के सभापति श्री नीरज चतुर्वेदी ने श्री मति प्रीति चतुर्वेदी कानपुर को श्री माथुर चतुर्वेदी महिला परिषद का राष्ट्रीय प्रभारी के पद पर मनोनीत किया गया है। हार्दिक बधाई शुभकामनाएं।

प्रीति चतुर्वेदी
महामंत्री संगठन
श्री माथुर चतुर्वेदी महापरिषद

‘चतुर्वेदियों को जानो’ क्विज प्रतियोगिता- 1

(श्री माथुर चतुर्वेदी समाज के बच्चों-8 से 18 वर्ष आयु वर्ग हेतु)

आपको जानकर हर्ष होगा कि श्री माथुर चतुर्वेदी महापरिषद द्वारा, अपनी डिजीटल पत्रिका के माध्यम से इस बदलते सामाजिक परिवेश में हमारे बच्चों को अपनी संस्कृति से जोड़े रखने के लिए ‘चतुर्वेदी को जानो’ क्विज प्रतियोगिता प्रारंभ करने का निर्णय लिया है।

हमारी चतुर्वेदी संस्कृति एवं राष्ट्रीय संस्कृति से संबंधित हर अंक में 10 प्रश्न पूछे जाएंगे। प्रश्नों के जबाब अंक प्रकाशित होने के 10 दिन में निम्न किसी एक को व्हाट्सएप पर भेजना होगा।

1. श्री ज्ञान चतुर्वेदी-संयोजक 7879874705
2. श्री अतुल वी एन चतुर्वेदी-संपादक 9412320994
3. श्रीमति गंगारानी-सदस्या 6398020348
4. श्री मुकेश चौबे-सदस्य 7587116559
5. श्री सुधीर चतुर्वेदी-सदस्य 8097701529

- नोट:-**
1. प्रतियोगी अपने उत्तर के साथ पासपोर्ट साइज फोटो, जन्मतिथि प्रमाणपत्र अवश्य भेजें।
 2. प्रथम तीन विजेताओं का नाम फोटो सहित अगले अंक में प्रकाशित होगा।
 3. प्रथम पुरस्कार रु.501, द्वितीय रु. 251 एवं तृतीय रु.101 महापरिषद द्वारा दिए जाएंगे।
 4. निर्णायक मंडल का निर्णय सबको मान्य होगा।

आप सभी से निवेदन है कि बच्चों को प्रतियोगिता में भाग लेने हेतु प्रोत्साहित करें। धन्यवाद संयोजक

क्विज क्रमांक-1

- प्रश्न 1. हमारा सामाजिक संबोधन क्या है?
(ए) जय श्रीकृष्ण (बी) नमस्ते (सी) पालागन (डी) राम राम
- प्रश्न 2. हमारी कुलदेवियों के मंदिर कहां स्थित हैं?
(ए) बनारस (बी) मथुरा (सी) हरिद्वार (डी) जम्मू-कश्मीर
- प्रश्न 3. इनमें से कौनसा संगठन सामाजिक है?
(ए) कांग्रेस (बी) भाजपा (सी) महापरिषद (डी) बीजेडी
- प्रश्न 4. हमारी पूज्य आराध्य नदी कौनसी है?
(ए) कावेरी (बी) यमुना (सी) चंबल (डी) गंगा
- प्रश्न 5. चतुर्वेदी कितने वेद के ज्ञाता माने गए हैं?
(ए) दो वेद (बी) तीन वेद (सी) चार वेद (डी) एक वेद
- प्रश्न 6. इनमें से कौनसा श्रीकृष्ण का नाम नहीं है?
(ए) बांके बिहारी (बी) कौशल्यानंदन (सी) मुरली मनोहर (डी) मधुसूदन
- प्रश्न 7. श्रीकृष्ण का जन्मस्थान कहां है?
(ए) अयोध्या (बी) द्वारका (सी) वृंदावन (डी) मथुरा
- प्रश्न 8. इनमें से कौनसा शहर हमारे समाज का गढ़ नहीं है?
(ए) मैनपुरी (बी) सूरत (सी) आगरा (डी) कानपुर
- प्रश्न 9. इनमें से किसका वध श्रीकृष्ण ने नहीं किया?
(ए) पूतना (बी) कंस (सी) जयद्रथ (डी) शिशुपाल
- प्रश्न 10. इनमें कौन महापरिषद का संरक्षक नहीं है?
(ए) सुखदेव चतुर्वेदी (बी) महेश चतुर्वेदी (सी) ब्रजमोहन चतुर्वेदी (डी) सी.पी. चतुर्वेदी

बदलते वक्त का एहसास : हम और हमारा समाज

जीवन में जब एक ठहराव की स्थिति आती है, तो मस्तिष्क चिन्तन की ओर मुड़ जाता है। आज मेरे साथ भी यही हुआ और योग के बाद ध्यान में मन इतिहास के पन्नों को पलटते पलटते बहुत पीछे चला गया। विचार अपने इतिहास को खोजने लगे।

मन मथुरा चला गया। फिर ये विचार आया कि हम यहाँ कैसे आये। फिर अपने चोबिया पाडे की बनावट और वास्तु स्थिति के बारे में मन सोचने लगा कि हम यहां किस तरह से बसे हुए हैं।

चौबिया पाडे की बनावट अगर हम देखें तो अपने आप में अद्भुत है। जिसका पूरा श्रेय हमारे पूर्वजों को जाता है। उनकी दूरदर्शिता और सम्पूर्ण समाज को साथ में रखने की योजना अपने आप में बहुत कुछ कहती है।

अगर आप ध्यान से चोबिया पाडे की भौगोलिक स्थिति को देखें तो आप पायेंगे कि यह शहर के मध्य में उसी प्रकार स्थित है जैसे घर के आंगन में स्वस्तिक होता है। चारों तरफ से सुरक्षित एक पहाड़ी पर स्थित। चारों ओर शहर का बाजार, एक तरफ से श्री वृन्दावन से आती हुई अपनी यमुना मैय्या की अविरल धारा, पास में अपने द्वारिकाधीश का मंदिर। मन्दिर में भी चौबिया पाडे की तरफ का दरवाजा ताकि अपने समाज के लोग सीधे मन्दिर में प्रवेश कर सकें।

अगर हम और विस्तार से सोचें और समाज की वसाहत के बारे में जानने की कोशिश करें तो आप देखेंगे कि किस तरह से हम बसे हुए हैं। पाठक, तिवारी, ककोर, छाँका, सरदार, अञ्जुमिया, चौबे वंश इत्यादि सभी अपने-अपने मोहल्लों में एक साथ एवं पास पास बसे हुए हैं।

मैं भी अगर सोचूँ तो हमारे पूर्वज नगला पायसा में 'छे पौरी' में बसे हुए थे। सारा परिवार उन्हीं 6 पोरियों में समाया हुआ था। सबके अपने-अपने घर थे और सुख-दुख में सभी एक आवाज में साथ थे। आज अगर सोचो तो कितना अद्भूत माहौल था। किसी के यहां भी शादी विवाह हो, हर किसी पौरी पर बंधन वार लगता था। ऐसा लगता था जैसे हर घर में शादी है।

अगर हम और विस्तार से सोचें तो हम पायेंगे कि सम्पूर्ण समाज एक ही जगह स्थित था। अपने-अपने गली

और मोहल्ले का सभी ध्यान रखते थे। हर मोहल्ले में एक मन्दिर था, जो कि शायद आज भी है। हर मोहल्ले में एक बैठक, अथाई, कमरा या चोपार हुआ करती थी। हर मोहल्ले में कुआ था। हमारे अधिकतर पूर्वज कुए का या जमुना जी का ही पानी पीते थे।

जनेऊ का घुराडेल, शादी में अज्ञोनी, अपने चोबिया पाडे में ही शर्गास्त घूमते थे। घूरा पूजन, माता पूजन, भैरों सभी चोबिया पाडे में ही थे और हैं भी। चूँकि कुम्हार भी चोबिया पाडे में ही बसाये हुए थे इसीलिए चाक पूजन भी यहीं हो जाया करता था। शादी, जनेऊ के समय बहुत से परिवार दैनी या त्योद बाँटा करते थे, उस समय घर घर जाकर बांटते थे और समाज का रजिस्टर बनता था, जो हर अगली दैनी या त्योद के साथ ही नचकंजम भी हो जाता था। ये परम्परा आज भी हैं, लेकिन पहले से काफी कम हो गयी हैं।

शादी ब्याह भी घरों में ही होते थे। अगर बेटा की बारात भी हो तो वो भी अडोस पडोस की छतों पर ही जिमाई जाती थी। किसी को कोई परेशानी नहीं होती थी।

वसाहत इस तरह थी कि सब एक साथ हर किसी के सुख दुःख में सहभागी थे। अगर किसी घर में गर्मी हो जाय तो पूरा मोहल्ला साथ होता था और जब तक अन्तिम यात्रा न निकल जाए तब तक किसी के घर भी चूल्हा नहीं जलता था।

समाज में दिनचर्या भी एक दम अलग थी। सुबह सुबह जमुना जी जाना, बगीची अखाड़े के लिए निकलना। मुझे आज भी याद है कि सुबह चार बजे से भजन गाते हुए लोग निकलना शुरू हो जाते थे। लोग आवाज पर समय का अंदाज लगा लेते थे। एक आवाज तो आज भी मेरे कानों में गूँजती है। वो आवाज थी मेरे परिवार के मेरे बड़े भाई कुंजन पहलवान की, जो चौराहे से सालिग पहलवान को लगाते थे। और पीछे से आवाज आती थी 'आयौ'।

क्या आनन्द की अनुभूति होती थी।

दोपहर को भांग ठण्डाई के लिए मोहल्ले में लोग इकट्ठा होते थे और दुनिया भर की बातों पर बहस होती थी। भांग ठण्डाई के बाद लोग अपनी अपनी बगीची

≡ समाज दर्पण ≡

अखाड़े के लिए निकल जाते थे और शाम को हलवाई से रबड़ी मलाई लेकर घर में घुसते थे। और जल्दी ब्यारु करी और फिर विश्राम ।

साल के 6 महीना जिजमानी की मेहनत भी रहती थी। 3 महीने की रहामत और 3 महिने मथुरा में यात्री परदेशी देखना। उसमें ब्रिज यात्रा का अपना ही आनन्द और कठिन मेहनत भी होती थी। जो आज भी कायम है।

इतिहास के पन्नों से जब ध्यान भंग हुआ तो वर्तमान स्थिति का आभास हुआ। और दिमाग ये सोचने पर मजबूर हुआ कि आज हम कहां हैं। क्या हम उसी समाज का हिस्सा हैं जिसकी कल्पना हमारे पूर्वजों ने की थी।

लेकिन आज लगता है कि पहले जैसा अब कुछ नहीं है। हम बदल चुके हैं हमारी परिस्थितियां बदल चुकी है। हमारा आहार, व्यवहार, चाल चलन, सब बदल चुका है ।

लेकिन अब वक्त आ गया है कि हम अपने सामाजिक जीवन को फिर से देखने की कोशिश करें। उन मूल्यों को फिर से स्थापित करने की कोशिश करें जो हमारे पूर्वजों ने बनाये थे ।

समाज के हित की कामना के साथ,



आप सभी का शुभाकांक्षी
सी पी चतुर्वेदी

!! शब्दों की ताकत !!

एक नौजवान चीता पहली बार शिकार करने निकला। अभी वो कुछ ही आगे बढ़ा था कि एक लकड़बग्घा उसे रोकते हुए बोला, "अरे छोटू, कहाँ जा रहे हो तुम?" "मैं तो आज पहली बार खुद से शिकार करने निकला हूँ!", चीता रोमांचित होते हुए बोला। "हा-हा-हा-, लकड़बग्घा हंसा," अभी तो तुम्हारे खेलने-कूदने के दिन हैं, तुम इतने छोटे हो, तुम्हे शिकार करने का कोई अनुभव भी नहीं है, तुम क्या शिकार करोगे! लकड़बग्घे की बात सुनकर चीता उदास हो गया।

दिन भर शिकार के लिए वो बेमन इधर-उधर घूमता रहा, कुछ एक प्रयास भी किये पर सफलता नहीं मिली और उसे भूखे पेट ही घर लौटना पड़ा। अगली सुबह वो एक बार फिर शिकार के लिए निकला। कुछ दूर जाने पर उसे एक बूढ़े बन्दर ने देखा और पुछा, "कहाँ जा रहे हो बेटा?" "बंदर मामा, मैं शिकार पर जा रहा हूँ।" चीता बोला। बहुत अच्छे " बन्दर बोला, "तुम्हारी ताकत और गति के कारण तुम एक बेहद कुशल शिकारी बन सकते हो। जाओ तुम्हे जल्द ही सफलता मिलेगी।"

यह सुन चीता उत्साह से भर गया और कुछ ही समय में उसने एक छोटे हिरन का शिकार कर लिया। मित्रों, हमारी जिन्दगी में "शब्द" बहुत मायने रखते हैं। दोनों ही दिन चीता तो वही था, उसमे वही स्फूर्ति और वही ताकत थी पर जिस दिन उसे डिस्करेज किया गया वो असफल हो गया।

शिक्षा- इस छोटी सी कहानी से हम तीन जरूरी बातें सीख सकते हैं-

पहली, हमारा प्रयास होना चाहिए कि हम अपने "शब्दों" से किसी को प्रोत्साहित करें, हतोत्साहित नहीं। वास्तव में, इसका ये मतलब नहीं कि हम उसे उसकी कमियों से अवगत न कराये, या बस झूठ में ही एन्करेज करें।

दूसरी, हम ऐसे लोगों से बचें जो हमेशा निगेटिव सोचते और बोलते हों, और उनका साथ करें जिनका सकारात्मक दृष्टिकोण हो।

तीसरी और सबसे अहम बात, हम खुद से क्या बात करते हैं, आपसी वार्तालाप में हम कौन से शब्दों का प्रयोग करते हैं इसका सबसे ज्यादा ध्यान रखें, क्योंकि ये "शब्द" बहुत ताकतवर होते हैं, क्योंकि ये "शब्द" ही हमारे विचार बन जाते हैं, और ये विचार ही हमारी जिन्दगी की हकीकत बन कर सामने जब आते हैं, इसलिए दोस्तों, शब्द की शक्ति को पहचानिये, जहाँ तक हो सके पॉजिटिव वर्ड्स का प्रयोग करिये, इस बात को समझिए कि ये आपकी जिन्दगी बदल सकते हैं। शब्द/अक्षर बृह्म है, इनकी ताकत पहचानिये।

नीमा सुधीर चतुर्वेदी

प्रवक्ता

श्री माथुर चतुर्वेदी महापरिषद एवं महिला प्रकोष्ठ महाराष्ट्र

संस्कार परिचय

मनु ने गर्भाधान, पुंसवन, सीमन्तोन्नयन, जातकर्म, नामकरण, निष्क्रमण, अन्नप्राशन, चूडकर्म, उपनयन, केशांत, समावर्तन, विवाह और श्मशान, संस्कारों का उल्लेख किया है। याज्ञवल्क्य ने भी इन्हीं संस्कारों का वर्णन किया है। केवल केशांत का वर्णन उसमें नहीं मिलता है, ।

व्यास स्मृति में सोलह संस्कारों का वर्णन हुआ है।

गर्भाद्या मृत्युपर्यन्ताः संस्काराः षोडशैव हि ।

वक्ष्यन्ते तं नमस्कृत्यान्तविद्यं परेश्वरम् ।।...

स्वामी दयानन्द सरस्वती

विभिन्न धर्मग्रंथों में संस्कारों के क्रम में थोड़ा-बहुत अन्तर है, लेकिन प्रचलित संस्कारों के क्रम में गर्भाधान, पुंसवन, सीमन्तोन्नयन, जातकर्म, नामकरण, निष्क्रमण, अन्नप्राशन, चूडकर्म, विद्यारंभ, कर्णवेध, यज्ञोपवीत, वेदारम्भ, केशान्त, समावर्तन, विवाह तथा अन्त्येष्टि ही मान्य है। सोलह संस्कार निम्न हैं.....

१- गर्भाधान संस्कारः- उत्तम सन्तान की प्राप्ति के लिये प्रथम संस्कार। हमारे शास्त्रों में मान्य सोलह संस्कारों में गर्भाधान पहला है। गृहस्थ जीवन में प्रवेश के उपरान्त प्रथम कर्तव्य के रूप में इस संस्कार को मान्यता दी गई है। गार्हस्थ्य जीवन का प्रमुख उद्देश्य श्रेष्ठ सन्तानोत्पत्ति है। उत्तम संतति की इच्छा रखनेवाले माता-पिता को गर्भाधान से पूर्व अपने तन और मन की पवित्रता के लिये यह संस्कार करना चाहिए। वैदिक काल में यह संस्कार अति महत्वपूर्ण समझा जाता था।

२- पुंसवन संस्कारः- गर्भस्थ शिशु के बौद्धि एवं मानसिक विकास हेतु गर्भाधान के पश्चात् दूसरे या तीसरे महीने किया जाने वाला द्वितीय संस्कार। गर्भस्थ शिशु के मानसिक विकास की दृष्टि से यह संस्कार उपयोगी समझा जाता है। गर्भाधान के दूसरे या तीसरे महीने में इस संस्कार को करने का विधान है। हमारे मनीषियों ने सन्तानोत्कर्ष के उद्देश्य से किये जाने वाले इस संस्कार को अनिवार्य माना है। गर्भस्थ शिशु से सम्बन्धित इस संस्कार को शुभ नक्षत्र में सम्पन्न किया जाता है। पुंसवन संस्कार का प्रयोजन स्वस्थ एवं उत्तम संतति को जन्म देना है।

३- सीमन्तोन्नयन संस्कारः- माता को प्रसन्नचित्त

रखने के लिये, ताकि गर्भस्थ शिशु सौभाग्य सम्पन्न हो पाये, गर्भाधान के पश्चात् आठवें माह में किया जाने वाला तृतीय संस्कार। सीमन्तोन्नयन को सीमन्तकरण अथवा सीमन्त संस्कार भी कहते हैं। सीमन्तोन्नयन का अभिप्राय है सौभाग्य संपन्न होना। गर्भपात रोकने के साथ-साथ गर्भस्थ शिशु एवं उसकी माता की रक्षा करना भी इस संस्कार का मुख्य उद्देश्य है। इस संस्कार के माध्यम से गर्भिणी स्त्री का मन प्रसन्न रखने के लिये सौभाग्यवती स्त्रियां गर्भवती की मांग भरती हैं। यह संस्कार गर्भ धारण के छठे अथवा आठवें महीने में होता है।

४- जातकर्म संस्कारः- नवजात शिशु के बुद्धिमान, बलवान, स्वस्थ एवं दीर्घजीवी होने की कामना हेतु किया जाने वाला चतुर्थ संस्कार। नवजात शिशु के नालच्छेदन से पूर्व इस संस्कार को करने का विधान है। इस दैवी जगत् से प्रत्यक्ष सम्पर्क में आनेवाले बालक को मेधा, बल एवं दीर्घायु के लिये स्वर्ण खण्ड से मधु एवं घृत वैदिक मंत्रों के उच्चारण के साथ चटाया जाता है। यह संस्कार विशेष मन्त्रों एवं विधि से किया जाता है। दो बूंद घी तथा छह बूंद शहद का सम्मिश्रण अभिमंत्रित कर चटाने के बाद पिता यज्ञ करता है तथा नौ मन्त्रों का विशेष रूप से उच्चारण के बाद बालक के बुद्धिमान, बलवान, स्वस्थ एवं दीर्घजीवी होने की प्रार्थना करता है। इसके बाद माता बालक को स्तनपान कराती है।

५- नामकरण संस्कारः- नवजात शिशु को उचित नाम प्रदान करने हेतु जन्म के ग्यारह दिन पश्चात् किया जाने वाला पंचम संस्कार। जन्म के ग्यारहवें दिन यह संस्कार होता है। हमारे धर्माचार्यों ने जन्म के दस दिन तक अशौच (सूतक) माना है। इसलिये यह संस्कार ग्यारहवें दिन करने का विधान है। महर्षि याज्ञवल्क्य का भी यही मत है, लेकिन अनेक कर्मकाण्डी विद्वान इस संस्कार को शुभ नक्षत्र अथवा शुभ दिन में करना उचित मानते हैं। नामकरण संस्कार का सनातन धर्म में अधिक महत्व है। हमारे मनीषियों ने नाम का प्रभाव इसलिये भी अधिक बताया है क्योंकि यह व्यक्तित्व के विकास में सहायक होता है। तभी तो यह कहा गया है राम से बड़ा राम का नाम हमारे धर्म विज्ञानियों ने बहुत शोध कर नामकरण संस्कार का आविष्कार किया। ज्योतिष विज्ञान तो नाम के आधार पर ही भविष्य की रूपरेखा तैयार करता है।

३ समाज दर्पण ३

६- निष्क्रमण संस्कारः- शिशु के दीर्घकाल तक धर्म और मर्यादा की रक्षा करते हुए इस लोक का भोग करने की कामना के लिये जन्म के तीन माह पश्चात् चौथे माह में किया जाने वाला षष्ठम संस्कार। देवी जगत् से शिशु की प्रगाढ़ता बढ़े तथा ब्रह्माजी की सृष्टि से वह अच्छी तरह परिचित होकर दीर्घकाल तक धर्म और मर्यादा की रक्षा क

देवी जगत् से शिशु की प्रगाढ़ता बढ़े तथा ब्रह्माजी की सृष्टि से वह अच्छी तरह परिचित होकर दीर्घकाल तक धर्म और मर्यादा की रक्षा करते हुए इस लोक का भोग करे यही इस संस्कार का मुख्य उद्देश्य है।

निष्क्रमण का अभिप्राय है बाहर निकलना। इस संस्कार में शिशु को सूर्य तथा चन्द्रमा की ज्योति दिखाने का विधान है। भगवान् भास्कर के तेज तथा चन्द्रमा की शीतलता से शिशु को अवगत कराना ही इसका उद्देश्य है। इसके पीछे मनीषियों की शिशु को तेजस्वी तथा विनम्र बनाने की परिकल्पना होगी। उस दिन देवी-देवताओं के दर्शन तथा उनसे शिशु के दीर्घ एवं यशस्वी जीवन के लिये आशीर्वाद ग्रहण किया जाता है। जन्म के चौथे महीने इस संस्कार को करने का विधान है। तीन माह तक शिशु का शरीर बाहरी वातावरण यथा तेज धूप, तेज हवा आदि के अनुकूल नहीं होता है इसलिये प्रायः तीन मास तक उसे बहुत सावधानी से घर में रखना चाहिए। इसके बाद धीरे-धीरे उसे बाहरी वातावरण के संपर्क में आने देना चाहिए। इस संस्कार का तात्पर्य यही है कि शिशु समाज के सम्पर्क में आकर सामाजिक परिस्थितियों से अवगत हो।

७- अन्नप्राशन संस्कारः- शिशु को माता के दूध के साथ अन्न को भोजन के रूप में प्रदान किया जाने वाला जन्म के पश्चात् छठवें माह में किया जाने वाला सप्तम संस्कार। इस संस्कार का उद्देश्य शिशु के शारीरिक व मानसिक विकास पर ध्यान केन्द्रित करना है। अन्नप्राशन का स्पष्ट अर्थ है कि शिशु जो अब तक पेय पदार्थों विशेषकर दूध पर आधारित था अब अन्न जिसे शास्त्रों में प्राण कहा गया है उसको ग्रहण कर शारीरिक व मानसिक रूप से अपने को बलवान व प्रबुद्ध बनाए। तन और मन को सुदृढ़ बनाने में अन्न का सर्वाधिक योगदान है। शुद्ध, सात्विक एवं पौष्टिक आहार से ही तन स्वस्थ रहता है और स्वस्थ तन में ही स्वस्थ मन का निवास होता है। आहार शुद्ध होने पर ही अन्तरूकरण शुद्ध होता है तथा मन, बुद्धि, आत्मा सबका पोषण होता है।

इसलिये इस संस्कार का हमारे जीवन में विशेष महत्व है। हमारे धर्माचार्यों ने अन्नप्राशन के लिये जन्म से छठे महीने को उपयुक्त माना है। छठे मास में शुभ नक्षत्र एवं शुभ दिन देखकर यह संस्कार करना चाहिए। खीर और मिठाई से शिशु के अन्नग्रहण को शुभ माना गया है। अमृतरु क्षीरभोजनम् हमारे शास्त्रों में खीर को अमृत के समान उत्तम माना गया है।

८- चूडघकर्म (मुंडन) संस्कारः- शिशु के बौद्धिक, मानसिक एवं शारीरिक विकास की कामना से जन्म के पश्चात् पहले, तीसरे अथवा पाँचवें वर्ष में किया जाने वाला अष्टम संस्कार। चूडघकर्म को मुंडन संस्कार भी कहा जाता है। हमारे आचार्यों ने बालक के पहले, तीसरे या पांचवें वर्ष में इस संस्कार को करने का विधान बताया है। इस संस्कार के पीछे शुचिता और बौद्धिक विकास की परिकल्पना हमारे मनीषियों के मन में होगी। मुंडन संस्कार का अभिप्राय है कि जन्म के समय उत्पन्न अपवित्र बालों को हटाकर बालक को प्रखर बनाना है। नौ माह तक गर्भ में रहने के कारण कई दूषित किटाणु उसके बालों में रहते हैं। मुंडन संस्कार से इन दोषों का सफाया होता है। ज्योतिष शास्त्र के अनुसार इस संस्कार को शुभ मुहूर्त में करने का विधान है। वैदिक मंत्रोच्चारण के साथ यह संस्कार सम्पन्न होता है।

९- विद्यारम्भ संस्कारः- जातक को उत्तमोत्तम विद्या प्रदान के की कामना से किया जाने वाला नवम संस्कार। विद्यारम्भ संस्कार के क्रम के बारे में हमारे आचार्यों में मतभिन्नता है। कुछ आचार्यों का मत है कि अन्नप्राशन के बाद विद्यारम्भ संस्कार होना चाहिये तो कुछ चूडघकर्म के बाद इस संस्कार को उपयुक्त मानते हैं। मेरी राय में अन्नप्राशन के समय शिशु बोलना भी शुरू नहीं कर पाता है और चूडघकर्म तक बच्चों में सीखने की प्रवृत्ति जगने लगती है। इसलिये चूडघकर्म के बाद ही विद्यारम्भ संस्कार उपयुक्त लगता है। विद्यारम्भ का अभिप्राय बालक को शिक्षा के प्रारम्भिक स्तर से परिचित कराना है। प्राचीन काल में जब गुरुकुल की परम्परा थी तो बालक को वेदाध्ययन के लिये भेजने से पहले घर में अक्षर बोध कराया जाता था। माँ-बाप तथा गुरुजन पहले उसे मौखिक रूप से श्लोक, पौराणिक कथायें आदि का अभ्यास करा दिया करते थे ताकि गुरुकुल में कठिनाई न हो। हमारा शास्त्र विद्यानुरागी है। शास्त्र की उक्ति है सा विद्या या विमुक्तये अर्थात् विद्या वही है जो मुक्ति दिला सके।

ॐ समाज दर्पण ॐ

विद्या अथवा ज्ञान ही मनुष्य की आत्मिक उन्नति का साधन है। शुभ मुहूर्त में ही विद्यारम्भ संस्कार करना चाहिये।

१०— कर्णवेध संस्कारः— जातक की शारीरिक व्याधियों से रक्षा की कामना से किया जाने वाला दशम संस्कार। हमारे मनीषियों ने सभी संस्कारों को वैज्ञानिक कसौटी पर कसने के बाद ही प्रारम्भ किया है। कर्णवेध संस्कार का आधार बिल्कुल वैज्ञानिक है। बालक की शारीरिक व्याधि से रक्षा ही इस संस्कार का मूल उद्देश्य है। प्रकृति प्रदत्त इस शरीर के सारे अंग महत्वपूर्ण हैं। कान हमारे श्रवण द्वार हैं। कर्ण वेधन से व्याधियां दूर होती हैं तथा श्रवण शक्ति भी बढ़ती है। इसके साथ ही कानों में आभूषण हमारे सौन्दर्य बोध का परिचायक भी है।

यज्ञोपवीत के पूर्व इस संस्कार को करने का विधान है। ज्योतिष शास्त्र के अनुसार शुक्ल पक्ष के शुभ मुहूर्त में इस संस्कार का सम्पादन श्रेयस्कर है।

११— यज्ञोपवीत (उपनयन) संस्कारः— जातक की दीर्घायु की कामना से किया जाने वाला एकादश संस्कार। यज्ञोपवीत अथवा उपनयन बौद्धिक विकास के लिये सर्वाधिक महत्वपूर्ण संस्कार है। धार्मिक और आधात्मिक उन्नति का इस संस्कार में पूर्णरूपेण समावेश है। हमारे मनीषियों ने इस संस्कार के माध्यम से वेदमाता गायत्री को आत्मसात करने का प्रावधान दिया है। आधुनिक युग में भी गायत्री मंत्र पर विशेष शोध हो चुका है। गायत्री सर्वाधिक शक्तिशाली मंत्र है।

यज्ञोपवीत परमं पवित्रं अर्थात् यज्ञोपवीत जिसे जनेऊ भी कहा जाता है अत्यन्त पवित्र है। प्रजापति ने स्वाभाविक रूप से इसका निर्माण किया है। यह आयु को बढ़ानेवाला, बल और तेज प्रदान करनेवाला है। इस संस्कार के बारे में हमारे धर्मशास्त्रों में विशेष उल्लेख है। यज्ञोपवीत धारण का वैज्ञानिक महत्व भी है। प्राचीन काल में जब गुरुकुल की परम्परा थी उस समय प्रायः आठ वर्ष की उम्र में यज्ञोपवीत संस्कार सम्पन्न हो जाता था। इसके बाद बालक विशेष अध्ययन के लिये गुरुकुल जाता था। यज्ञोपवीत से ही बालक को ब्रह्मचर्य की दीक्षा दी जाती थी जिसका पालन गृहस्थाश्रम में आने से पूर्व तक किया जाता था। इस संस्कार का उद्देश्य संयमित जीवन के साथ आत्मिक विकास में रत रहने के लिये बालक को प्रेरित करना है।

१२— वेदारम्भ संस्कारः— जातक के ज्ञानवर्धन की

कामना से किया जाने वाला द्वादश संस्कार। ज्ञानार्जन से सम्बन्धित है यह संस्कार। वेद का अर्थ होता है ज्ञान और वेदारम्भ के माध्यम से बालक अब ज्ञान को अपने अन्दर समाविष्ट करना शुरू करे यही अभिप्राय है इस संस्कार का। शास्त्रों में ज्ञान से बढ़कर दूसरा कोई प्रकाश नहीं समझा गया है। स्पष्ट है कि प्राचीन काल में यह संस्कार मनुष्य के जीवन में विशेष महत्व रखता था। यज्ञोपवीत के बाद बालकों को वेदों का अध्ययन एवं विशिष्ट ज्ञान से परिचित होने के लिये योग्य आचार्यों के पास गुरुकुलों में भेजा जाता था। वेदारम्भ से पहले आचार्य अपने शिष्यों को ब्रह्मचर्य व्रत कापालन करने एवं संयमित जीवन जीने की प्रतिज्ञा कराते थे तथा उसकी परीक्षा लेने के बाद ही वेदाध्ययन कराते थे। असंयमित जीवन जीने वाले वेदाध्ययन के अधिकारी नहीं माने जाते थे। हमारे चारों वेद ज्ञान के अक्षुण्ण भंडार हैं।

१३— केशान्त संस्कारः— गुरुकुल से विदा लेने के पूर्व किया जाने वाला त्रयोदश संस्कार। गुरुकुल में वेदाध्ययन पूर्ण कर लेने पर आचार्य के समक्ष यह संस्कार सम्पन्न किया जाता था। वस्तुतः यह संस्कार गुरुकुल से विदाई लेने तथा गृहस्थाश्रम में प्रवेश करने का उपक्रम है। वेद—पुराणों एवं विभिन्न विषयों में पारंगत होने के बाद ब्रह्मचारी के समावर्तन संस्कार के पूर्व बालों की सफाई की जाती थी तथा उसे स्नान कराकर स्नातक की उपाधि दी जाती थी। केशान्त संस्कार शुभ मुहूर्त में किया जाता था।

१४— समावर्तन संस्कारः— गृहस्थाश्रम में प्रवेश करने की कामना से किया जाने वाला चतुर्दश संस्कार। गुरुकुल से विदाई लेने से पूर्व शिष्य का समावर्तन संस्कार होता था। इस संस्कार से पूर्व ब्रह्मचारी का केशान्त संस्कार होता था और फिर उसे स्नान कराया जाता था। यह स्नान समावर्तन संस्कार के तहत होता था। इसमें सुगन्धित पदार्थों एवं औषधादि युक्त जल से भरे हुए वेदी के उत्तर भाग में आठ घडघें के जल से स्नान करने का विधान है। यह स्नान विशेष मन्त्रोच्चारण के साथ होता था। इसके बाद ब्रह्मचारी मेखला व दण्ड को छोड़ देता था जिसे यज्ञोपवीत के समय धारण कराया जाता था। इस संस्कार के बाद उसे विद्या स्नातक की उपाधि आचार्य देते थे। इस उपाधि से वह सगर्व गृहस्थाश्रम में प्रवेश करने का अधिकारी समझा जाता था। सुन्दर वस्त्र व आभूषण धारण करता था तथा आचार्यों एवं गुरुजनों से आशीर्वाद ग्रहण कर अपने घर के लिये विदा होता था।

३ समाज दर्पण ३

१५- पाणिग्रहण संस्कार:- पति-पत्नी को परिणय-सूत्र में बाँधने वाला पंचदश संस्कार। प्राचीन काल से ही स्त्री और पुरुष दोनों के लिये यह सर्वाधिक महत्वपूर्ण संस्कार है। यज्ञोपवीत से समावर्तन संस्कार तक ब्रह्मचर्य व्रत के पालन का हमारे शास्त्रों में विधान है। वेदाध्ययन के बाद जब युवक में सामाजिक परम्परा निर्वाह करने की क्षमता व परिपक्वता आ जाती थी तो उसे गृहस्थ धर्म में प्रवेश कराया था। लगभग पच्चीस वर्ष तक ब्रह्मचर्य का व्रत का पालन करने के बाद युवक परिणय सूत्र में बंधता था।

हमारे शास्त्रों में आठ प्रकार के विवाहों का उल्लेख है- ब्राह्म, दैव, आर्ष, प्रजापत्य, आसुर, गन्धर्व, राक्षस एवं पैशाच। वैदिक काल में ये सभी प्रथाएं प्रचलित थीं। समय के अनुसार इनका स्वरूप बदलता गया। वैदिक काल से पूर्व जब हमारा समाज संगठित नहीं था तो उस समय उच्छृंखल यौनाचार था। हमारे मनीषियों ने इस उच्छृंखलता को समाप्त करने के लिये विवाह संस्कार की स्थापना करके समाज को संगठित एवं नियमबद्ध करने का प्रयास किया। आज उन्हीं

के प्रयासों का परिणाम है कि हमारा समाज सम्य और सुसंस्कृत है।

१६- अन्त्येष्टि संस्कार:- मृत्योपरान्त किया जाने वाला षष्ठदश संस्कार। अन्त्येष्टि को अंतिम अथवा अग्नि परिग्रह संस्कार भी कहा जाता है। आत्मा में अग्नि का आधान करना ही अग्नि परिग्रह है। धर्म शास्त्रों की मान्यता है कि मृत शरीर की विधिवत् क्रिया करने से जीव की अतृप्त वासनायें शान्त हो जाती हैं। हमारे शास्त्रों में बहुत ही सहज ढंग से इहलोक और परलोक की परिकल्पना की गयी है। जब तक जीव शरीर धारण कर इहलोक में निवास करता है तो वह विभिन्न कर्मों से बंधा रहता है। प्राण छूटने पर वह इस लोक को छोड़ देता है। उसके बाद की परिकल्पना में विभिन्न लोकों के अलावा मोक्ष या निर्वाण है। मनुष्य अपने कर्मों के अनुसार फल भोगता है। इसी परिकल्पना के तहत मृत देह की विधिवत् क्रिया होती है।

अरुण चतुर्वेदी (बल्लो बाबू)
मथुरा

समाज में बढ़ते तलाक पर परिवार और समाज की भूमिका

विवाह के बाद आपसी मतभेद का मुद्दा पति-पत्नी की समझदारी से ही हल हो सकता है यदि वे दोनों समझदार हैं तो दुनिया की कोई भी ताकत उन्हें जुदा नहीं कर सकती और यदि बेबकूफ हैं तो उनसे समझदारी की उम्मीद भी कैसे

की जा सकती है परिवार और समाज पति-पत्नी की बेबकूफी के बाद ही हावी हो सकता है अन्यथा नहीं यदि वे ठान लें कि हमें साथ ही रहना है तो समस्यायें तो धीरे धीरे निबट ही जाती हैं। अलग होकर भी तो फिर किसी के साथ सामंजस्य बिठाना ही होगा तो अभी क्यों नहीं? हां यह भी सत्य है कि तलाक के सबसे गम्भीर परिणाम पति-पत्नी को ही भुगतना पड़ते हैं। अपने लोग भी बाद में ताने मारने से नहीं चूकते और 90% जोड़ों को बाद में अपनी गलतियों का अहसास होता है। वैसे भी यदि पति-पत्नी की बेबकूफी की वजह से रिश्ता तलाक तक पहुंचा है तो परिवार या समाज के लोग कब तक समझौते करायेंगे? सामंजस्य तो



उन्हें ही बिठाना होगा यह विवाह गुड्डा गुड्डिया का खेल तो नहीं था दो परिवारों का अपने अपने पूर्वजों की उपस्थिति में (आव्हान एवं पूजन द्वारा आमन्त्रित) आयोजित संस्कार था। कैसे इतनी आसानी से आप उनकी उपस्थिति में लिये गये फ़ैसले की अवहेलना कर उनका अपमान कर सकते हैं सोचिये एक बार जरूर सोचिये

माथुर चतुर्वेदी और गोत्र

—डॉ० धीरज कुमार चतुर्वेदी



प्राचीन समय में प्रत्येक ब्राह्मण का धर्म था कि वह वेद तथा शास्त्रों का पठन वृ पाठन करे. अतएव आरंभ में सब ब्राह्मण एक थे, और उनमें गोत्र बचाकर संबंध हुआ करते थे। किन्तु धीरे-धीरे जब वह समस्त भारत में फैले तो जो ब्राह्मण जिस स्थान में बस गए, वहीं के नाम से प्रसिद्ध हो गए। सरस्वती नदी के आसपास रहने वाले 'सारस्वत', कान्यकुब्ज

देश (आज का कन्नौज) के ब्राह्मण 'कान्यकुब्ज', मिथिला के 'मैथिल', सरयू नदी के आसपास वाले 'सरयूपारीण', मालवा के 'मालवीय', जेजाकभक्ति के 'जुझौतिया', नर्मदा के तटवासी 'नार्मदीय' आदि कहलाने लगे. इसी प्रकार जो ब्राह्मण मथुरा मंडल में बस गए, वे 'माथुर ब्राह्मण' कहलाए. सामान्यतः प्रत्येक ब्राह्मण अपना एक वेद पढ़ता था। किन्तु जो एक वेद और पढ़े, उसकी विशिष्टता बतलाने के लिए वह 'द्विवेदी' कहलाने लगता था। इसी प्रकार तीन वेद पढ़ने वाले 'त्रिवेदी' और चारों वेद पढ़ने वाले 'चतुर्वेदी' कहलाते थे। प्रायः प्रत्येक देश के ब्राह्मणों में ऐसे विशिष्ट व्यक्ति होते थे जो दो, तीन या चार वेद पढ़कर द्विवेदी, त्रिवेदी या चतुर्वेदी की उपाधि प्राप्त कर लेते थे। आरंभ में यह उपाधि व्यक्तिगत थी, बाद में वंशानुगत हो गई. उदाहरण के लिए भारत के पूर्व प्रधान मंत्री स्व. लालबहादुर काशी विद्यापीठ के स्नातक होने के कारण अपने नाम के पीछे स्नातक की उपाधि 'शास्त्री' लगाते थे, जो उनकी व्यक्तिगत अर्जित उपाधि थी। किन्तु उनकी पत्नी ललिता शास्त्रीद्व और उनके पुत्र भी शास्त्री कहलाने लगे।

आजकल चतुर्वेदी 'ब्राह्मण जाति' का एक उपनाम है जो उनके लिए प्रयुक्त होता है जिनके पूर्वजों ने चारों वेदों को पढ़ा और उसमें पूर्णता प्राप्त कर ली है। इन्हें चौबे भी कहा जाता है। चतुर्वेदी उपनाम के लोग भारत के अनेक प्रान्तों में

पाए जाते हैं। सरयू नदी के क्षेत्र में इनको 'सरयूपारीण चतुर्वेदी ब्राह्मण' कहते हैं। उसी तरह मथुरा में रहने वाले अथवा किसी कारणवश मथुरा से निकलकर दूसरी जगह बसने वाले चतुर्वेदी "माथुर चतुर्वेदी" कहलाते हैं. मथुरा भगवान श्री कृष्ण की जन्मस्थली होने के कारण भारत के आध्यात्मिक और पवित्र शहरों में से एक है। पौराणिक मथुरा नगरी का उल्लेख प्राचीन ग्रन्थ 'बाल्मीकी रामायण' में मिलता है। उस समय यमुना नदी के किनारे घना वन हुआ करता था, जिस पर मधु दानव का आधिपत्य था। इसलिए इस वन को 'मधुवन' कहा जाता था. रामायण के अनुसार मधु दानव ने घोर तपस्या करके भगवान शिव को प्रसन्न किया और वरदान में ऐसा शस्त्र माँगा जिसके पास रहते हुए कोई भी उसको हरा नहीं सकता था। उसने यह भी वरदान माँगा कि उसके बाद यह अस्त्र उसके परिवार के पास रहे। भगवान शिव ने वरदान स्वरूप 'अजेय त्रिशूल' दिया. मधु की मृत्यु के बाद उसका लड़का लवणासुर 'अजेय त्रिशूल' के कारण अकारण ही दूसरे राजाओं तथा ऋषियों को सताने लगा. भयभीत ऋषी भगवान राम की शरण में गए और लवणासुर के आतंक को समाप्त करने की प्रार्थना की। श्रीराम ने छोटे भाई शत्रुघ्न को यह भार सौंपा तथा लवणासुर को, जब उसके पास अजेय त्रिशूल न हो, युद्ध के लिए ललकार कर मारने की सलाह दी. महामुनि भार्गव ने शत्रुघ्न को जानकारी दी कि लवणासुर जब शिकार के लिए जाता है तभी वह त्रिशूल को मंदिर में रखकर जाता है। अतः इस ही समय उसका वध किया जा सकता है। इस प्रकार लवणासुर का अंत कर शत्रुघ्न ने यमुना किनारे का जंगल साफ करके अपनी राजधानी बसायी। इस नगरी का नाम मथुरा पड़ा, जो कालान्तर में मदुरा और फिर मथुरा हो गया।

माथुर चतुर्वेदी अपने गोरे रंग-रूप एवं विशिष्ट खान-पान के कारण दूसरे ब्राह्मणों से अलग पहचान रखते हैं। ब्राह्मण होने के कारण ये पक्के शाकाहारी हैं तथा आमतौर पर प्याज तथा लहसुन से परहेज रखते हैं। सिगरेट तथा अल्कोहल जैसे ब्यसन से भी दूर रहते हैं। अपना विशिष्ट खान-पान तथा आचार-विचार बनाये रखने के लिए माथुरों ने शादी-ब्याह का रिश्ता सिर्फ माथुर चतुर्वेदियों तक

ॐ समाज दर्पण ॐ

ही सीमित रखा। दूसरी तरफ अन्य चतुर्वेदियों ने शादी-ब्याह का सम्बन्ध पूरे ब्राह्मण समाज के साथ रखा। इस कारण आज भी माथुर चतुर्वेदी अपने अलग व्यक्तित्व के कारण दूसरों से प्रथक पहचान रखते हैं।

माथुरों का गोरा रंग और सुन्दर नाक-नक्स होने के कारण कई इतिहासकारों का मत है कि हजारों साल पहले मध्य एशिया की कठिन परिस्थितियों के कारणवश वहां के लोग छोटे-छोटे समूह में भारत आकर बसते रहे तथा यहाँ का धर्म अपनाकर यहीं के हो गए। उन्हीं में से कुछ लोग वेद शास्त्रों में पारंगत होकर ब्राह्मण बन गए। कुछ लोग मानते हैं कि चतुर्वेदियों के पूर्वज सिकंदर की सेना में पुजारी थे। यह ऐतिहासिक तथ्य है कि सिकंदर के समय कुछ ग्रीक अवश्य भारत में बस गए थे और उनमें से कितनों ने ही वैष्णव धर्म स्वीकार कर लिया था। विदिशा का हेलिओदोरस स्तंभ इस बात का साक्षी है। यूनानी हेलिओदोरस ने वहां वैष्णव धर्म स्वीकार करने पर विष्णु के मंदिर के सामने गरुणध्वज स्थापित किया था। यूनानी यहाँ के रहन-सहन और रीति-रिवाजों में इतना घुल-मिल गए कि उनका स्वतंत्र अस्तित्व नहीं रह गया। लेकिन माथुर चतुर्वेदियों का जिक्र गौतम बुद्ध तथा महाभारत काल में भी आता है, जो सिकंदर से काफी पहले है। मथुरा विश्व के प्राचीन नगरों में से एक है, तथा प्रथमक्षेत्र मथुरा को स्थापित करने का श्रेय माथुर ब्राह्मणों को है। अतः चतुर्वेदी समाज अति प्राचीन है। मथुरा का इतिहास क्रम वेदादि शास्त्रों में वर्णित है। वराह पुराण के प्रमाणों में माथुरों को दूसरे चारों वेद जानने वाले ब्राह्मणों से श्रेष्ठ कहा है। माथुरों को भगवान विष्णु ने अपना ही परम पूज्यनीय स्वरूप बतलाया है। माथुरों को चारों वेदों के मंत्र और वेदाधिकार होने के कारण "चतुर्वेदी" पदवी से विभूषित किया गया। संवत् ८३०० वि. के भगवान विष्णु की नामावली में इन्हें विष्णु रूप मानकर, चतुरात्मा चतुरभास्य चतुर्वेदी विदेक पात अर्थात् चारों वेदों की आत्मा, चारों वेदों के ज्ञाता, चारों वेदों के देवभाव के ज्ञाता चतुर्भुज भगवान का स्वरूप चतुर्वेदी ही है। इस उल्लेख से यह भी स्पष्ट है कि प्राकृत भाषा विस्तार युग से ही माथुर ब्राह्मण "चतुर्वेदी" के अपभ्रंस रूप में साधारण जनता में "चंड विज्ज" या "चोबेजी" कहे जाने लगे थे। चतुर्वेदियों का "चोबेजी" या "चौबे" संशोधन बहुत प्राचीन और एतिहासिक है। चोबेजी प्रधान रूप से मथुरा के ब्राह्मणों के समस्त सामूहिक वर्ग का संबोधन करने

के रूप में प्रयुक्त होता रहा है। खासकर उस काल में जब दूसरे ब्राह्मण दुबे, तिवाड़ी, भट्ट मिस्सर, पांडे आदि से युक्त थे तथा द्विवेदी, त्रिवेदी उनकी एक शाखा मात्र थी।

गोत्र प्रणाली— हिन्दू धर्म में गोत्र का विशेष स्थान है। जब भी हम पूजा में बैठते हैं अथवा लड़का लड़की की शादी की बात करते हैं, पंडितजी हमसे हमारा गोत्र पूछते हैं। इससे मन में कई तरह के प्रश्न उठते हैं। गोत्र प्रणाली क्या है? हम गोत्र प्रणाली क्यों अपनाते हैं? लड़का-लड़की की शादी में हम दोनों का गोत्र क्यों जानना चाहते हैं, यह शादी में क्यों जरूरी है? पिता से पुत्र को ही गोत्र क्यों जाता है, लड़की को क्यों नहीं? कैसे/क्यों लड़की का गोत्र शादी के बाद बदल जाता है, इसके पीछे क्या तर्क है? गोत्र प्रणाली भारत में हजारों वर्षों से क्यों है? इन सारे प्रश्नों का उत्तर आज आधुनिक विज्ञान के द्वारा दिया जा सकता है।

गोत्र (जेनेटिक) के पीछे की साइंस और कुछ नहीं है बल्कि आधुनिक विज्ञान की 'जीन मैपिंग' है। यह देखना दिलचस्प होगा कि कैसे हमारी प्राचीन गोत्र प्रणाली 'जेनेटिक साइंस' पर आधारित है। असल में गोत्र संस्कृत के दो शब्दों से मिलकर बना है, गौ (यानि गाय) और = (यानि ओसारा)। इसलिए गोत्र का मतलब है 'गाय का ओसारा', अर्थात् गाय रखने के लिए प्रयुक्त छप्पर जिस तरह ओसारा गाय की रक्षा करता है उसी तरह गोत्र एक पुरुष वंश की रक्षा करता है। वायोलोजिकल साइंस के अनुसार मनुष्य के शरीर में २३ जोड़े गुणसूत्र होते हैं (एक जोड़े में एक गुणसूत्र पिता से और एक माता से आता है)। इन २३ जोड़े गुणसूत्र में से एक गुणसूत्र, लिंग गुणसूत्र कहलाता है जो लड़का या लड़की का लिंग निर्धारित करता है। पुरुष में 'XY' लिंग गुणसूत्र होते हैं और स्त्री में 'XX' गुणसूत्र विद्यमान होते हैं। स्त्री-पुरुष के संयोग में यदि पुरुष का X लिंग गुणसूत्र स्त्री के X लिंग से मिलता है तो इससे 'XX' जोड़ा बनेगा, अतः संतान लड़की के रूप में होगी। लेकिन जब पुरुष का X लिंग गुणसूत्र स्त्री के X लिंग गुण सूत्र से मिलकर विषेचन करेगा तो 'XY' जोड़ा बनेगा, इससे लड़के का जन्म होगा। इस तरह यह स्पष्ट है कि स्त्री किसी भी अवस्था में लड़के को उत्पन्न करने में समर्थ हो ही नहीं सकती। इसलिए समाज में फैली दुर्भावना कि लड़का न होने की स्थिति में पत्नी जिम्मेदार है, सर्वथा अनुचित है। हमने देखा कि पुरुष के 'XY' गुणसूत्र में X माता से आता है और Y पिता से। इस तरह Y सूत्र

अद्वितीय है क्योंकि यह मिश्रित नहीं होता, Y सूत्र x को दबा देता है इससे पुत्र केवल Y सूत्र ही पाता है, जो पिता से पुत्र को और फिर पौत्र को जाता है. इस तरह Y गुण सूत्र उस वंश के पुरुषों तक ही सीमित रहता है. महिलाएं कभी भी Y गुण सूत्र नहीं पाती। अतः वंशावली की पहचान में Y गुण सूत्र प्रमुख भूमिका निभाता है।

चूंकि स्त्री कभी भी 'Y' गुण सूत्र नहीं पाती, उसका गोत्र वही होता है जो उसके पति का है. शादी से पहले लड़की का गोत्र पिता का होता है. शादी के समय माता-पिता कन्यादान करते समय पुत्री का हाथ वर को सौंप देते हैं, जिसका तात्पर्य है कि आज के बाद लड़की पिता का गोत्र त्यागकर वर का गोत्र अपना रही है। माता-पिता आशीर्वाद देते हैं कि अब वर का गोत्र अपनाकर उस गोत्र के वंश वृद्धि में सहायक बने। इस तरह 'कन्यादान' में माता-पिता सिर्फ कन्या का गोत्र दान करते हैं, कन्या नहीं. कुछ लोगों में मिथ्या धारणा है कि 'कन्यादान' के बाद लड़की पराई हो गयी, अब उसकी किसी भी चीज का प्रयोग उनके लिए बर्जित है। वह लड़की के घर का पानी भी नहीं पीते. लड़की कोई वस्तु नहीं है जिसका आपने दान कर दिया। शादी एक पवित्र बन्धन है, शादी के बाद भी लड़की परिवार का अभिन्न अंग है. इसीलिए सरकार भी मानती है कि शादी के बाद भी पिता की संपत्ति पर लड़की का उतना ही अधिकार है जितन लड़के का। इसके साथ ही माता-पिता की सेवा भी लड़का-लड़की की एक समान जिम्मेदारी है।

भारत में गोत्र पद्धति बहुत प्राचीन है। इससे मूल पिता और मूल परिवार का पता चलता है। गोत्र मूल रूप से ब्राह्मणों के उन सात वंशों से संबंधित होता है, जो अपनी उत्पत्ति सप्त ऋषियों (सात ऋषि) से मानते हैं. ये सात ऋषि थे दृ अत्रि, भारद्वाज, भृगु, गौतम, कश्यप, वशिष्ठ और विश्वामित्र. इसमें आठवां गोत्र अगस्त्य भी जोड़ा गया। बाद में अनेक प्रभावशाली ऋषि हुए जिनके नाम पर भी गोत्र रखे गए। इस तरह गोत्रों की संख्या बढ़ती रही। आज छोटे स्तर पर ऋषियों से जोड़कर हमारे देश में कुल 99५ गोत्र पाए जाते हैं। यह गोत्र सभी वर्णों और जातियों में हैं। मनुस्मृति के अनुसार हिन्दू धर्म में चार वर्ण माने जाते हैं— ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र गोत्र सबसे पहले आया फिर कर्म के अनुसार वर्ण व्यवस्था तय हुई। यही वजह है कि सभी गोत्र सभी

जातियों और वर्णों में हैं। गोत्र का इस्तेमाल आमतौर पर विवाह संबंधों और धार्मिक कार्यों में होता है। गोत्र को एक तरह से रक्त संबंध भी माना जाता है, इसलिए मान्यता है कि एक ही गोत्र में विवाह नहीं होना चाहिए।

शादी के लिए सिर्फ विवाह योग्य लड़के-लड़की का गोत्र ही नहीं मिलाया जाता, बल्कि माँ और दादी का गोत्र भी मिलाते हैं। इसका अर्थ है कि तीन पीढ़ी में कोई भी गोत्र समान नहीं होना चाहिए। यदि गोत्र समान होते हैं तो शादी न करने की सलाह दी जाती है. शास्त्रों में एक ही गोत्र में विवाह करने पर प्रतिबन्ध इसलिए लगाया गया क्योंकि यह मान्यता है कि एक ही गोत्र या कुल में विवाह होने पर दंपति की संतान अनुवांशिक दोष के साथ उत्पन्न होती है. आधुनिक विज्ञान भी इस बात की पुष्टि करती है। इस तरह हमारे महान ऋषियों ने गोत्र प्रणाली अपनाकर भावी संतानों को अनुवांशिक दोष से बचाया और Y क्रोमोसोम की रक्षा भी की. प्राचीन समय में हमारे ऋषियों को जेनेटिक विज्ञान का अद्भुत ज्ञान था। उन्होंने हजारों साल पहले ही जीन मैपिंग कर दी थी।

माथुरों के गोत्र— हमारे देश में महान वैदिक परंपरा रही है. इसके लिए हमारे मनीषियों, ऋषियों ने कितनी अच्छी परम्परा शुरू की थी कि विभिन्न संस्कारों का प्रारंभ संकल्प पाठ से कराते थे, जिसके अंतर्गत अपने पिता, प्रपिता, पितामह, प्रपितामह के साथ-साथ गोत्र, प्रवर, आदि का परिचय भी दिया जाता था. माथुरों की शादियों में वैदिक परंपरा अनुसार आगौनी (स्वागत बारात), शाखोच्चार तथा पहना प्रमुख समारोह होते थे। शाखोच्चार में वर - वधू के गुरुजी दोनों तरफ के वंशों के गोत्र, प्रवर, अल्ल, वेद, शाखा और कुलदेवी का विस्तृत वर्णन करते थे इससे समाज के सभी लोगों को अपने कुल के गोत्र, प्रवर, वेद, शाखा, कुलदेवी और अल्ल आदि का ज्ञान हो जाता था। आज आधुनिकता की चकाचौंध में सारे समारोह समाप्त हो गए हैं। इसकी वजह से युवा पीढ़ी महान वैदिक परंपरा से अनभिज्ञ होती जा रही है. इस लेख का उद्देश्य आने वाली पीढ़ियों को अपने गोत्र, प्रवर, वेद, शाखा, कुल-देवी और अल्ल से अवगत कराना है। यह जानना जरूरी है कि यह क्यों और कैसे बने और इनकी उपयोगिता क्या है। गोत्र के विषय में हम ऊपर पहले ही चर्चा कर चुके हैं। सभी जानते हैं कि हम किसी न किसी ऋषि की ही

ॐ समाज दर्पण ॐ

संतान हैं। गोत्र का अर्थ है कि हमारा जन्म किस ऋषिकुल में हुआ है, जिस ऋषि से वंश परंपरा प्रारंभ होती है, उस वंश का गोत्र भी वहीं से प्रचलित होता है। माथुर चतुर्वेदियों के सात गोत्र हैं। इन सात गोत्रों के नाम, गोत्रकार ऋषियों की परंपरा में इस प्रकार हैं:

- | | |
|-------------------|-----------------|
| १. दक्ष गोत्र | २. कुत्स गोत्र |
| ३. वशिष्ठ गोत्र | ४. भार्गव गोत्र |
| ५. भारद्वाज गोत्र | ६. धौम्य गोत्र |
| ७. शौश्रवस गोत्र | |

संभवतः एक गोत्र के लोग उस ऋषि की संतान हैं, जिनके नाम पर गोत्र है। प्रत्येक गोत्र के साथ 'प्रवर' भी हैं, जिसमें उन विशिष्ट ऋषियों के नाम हैं जो उस गोत्र में उल्लेखनीय महत्त्व के हुए। गोत्रकार ऋषि के वंश में अपने कर्मों द्वारा कोई व्यक्ति ऋषि होकर महान हो गया है, जो उसके नाम से आगे वंश चलता है। अतः मूल ऋषि के गोत्र के बाद जिस महान ऋषि का नाम आता है उसे प्रवर कहते हैं। मूल ऋषि के कुल में तीन, पांच या सात आदि महान ऋषि हो चले हैं। गोत्रों के साथ प्रवरों के नाम इस प्रकार हैं:

- | गोत्र | प्रवर |
|-------------------|---|
| १. दक्ष गोत्र | आत्रेय, गाविष्ठर (गाविर), पौर्वातिध |
| २. कुत्स गोत्र | अन्गीरासा, मान्धाता, कौत्स |
| ३. वशिष्ठ गोत्र | वशिष्ठ इंद्र, प्रमदा, भरदवासु |
| ४. भार्गव गोत्र | भार्गव, च्यवन, आप्पवान, और्व, जामदग्न्य |
| ५. भारद्वाज गोत्र | आंगिरस, बार्हस्पत्य, भारद्वाज |
| ६. धौम्य गोत्र | कश्यप, आवत्सर, नैध्रुव |
| ७. शौश्रवस गोत्र | विश्वामित्र, देवरात, औताला |

प्रवर का मतलब एक साधारण उदाहरण से आसानी से समझा जा सकता है। श्रीराम सूर्यवंश में हुए क्योंकि इस वंश के प्रथम पुरुष सूर्य थे। इसके बाद इक्ष्वाकु प्रसिद्ध राजा हुए, तो उनके नाम से भी इस वंश का नाम इक्ष्वाकु वंश पड़ गया। आगे चलकर इसी वंश में रघु राजा प्रसिद्ध हो गए। तो आगे चलकर इनके नाम से ही रघुवंश प्रचलित हो गया।

वेद— वेदों की रचनाएं ऋषियों के अंतःकरण से प्रकट हुई थीं। उस काल में शिलाओं के अलावा लिखने का और कोई साधन नहीं था। ऐसे में उनकी ऋचाओं की रक्षा और संवरक्षण हेतु एक परंपरा का प्रचलन हुआ। वह यह कि ऋचाओं को सुनाकर ही दूसरे को याद कराया जाए, और

इस तरह कंठस्त कर ली जाए। ऋषियों द्वारा दिए इस ज्ञान को वेद कहते हैं। प्रारंभ में एक ही वेद था जिसका आकार समय के साथ बड़ा होता गया। महाभारत काल (द्वापर युग) में वेद इतना बड़ा हो गया था कि किसी एक ऋषि को उसको पढ़ना-पढ़ाना कठिन हो गया था। इसलिए महर्षि वेद ब्यास ने वेद को चार भागों में विभक्त कर दिया था, और एक-एक वेद की जिम्मेदारी अपने चार शिष्यों को सौंप दी थी। चार वेदों के नाम हैं— ऋग्वेद, सामवेद, यजुर्वेद और अथर्व वेद। यद्यपि प्रत्येक चतुर्वेदी चारों वेदों का अध्ययन करता था, तथापि वह अन्य ब्राह्मणों की तरह एक वेद का विशेष अध्ययन करता था। चूंकि चारों वेद कोई एक ऋषि याद नहीं रख सकता था इसलिए गोत्रकार ऋषियों ने जिस वेद का अध्ययन, अध्यापन, प्रचार, प्रसार, आदि किया उसकी रक्षा का भार उनकी संतान पर पड़ता गया। अतएव यह वेद उस गोत्र का वेद कहलाता है।

शाखा— ऋषियों ने प्रत्येक एक गोत्र के लिए एक वेद के अध्ययन की परंपरा डाली थी। समस्या यह थी कि इसके हजारों मंत्रों को कोई एक ही कैसे याद करके रखे, और कैसे वह अपनी अगली पीढ़ी को हस्तांतरित करें। कालांतर में जब एक व्यक्ति उसके गोत्र के लिए निर्धारित वेद पढ़ने में असमर्थ हो गया तो ऋषियों ने वैदिक परंपरा को जीवित रखने के लिए शाखाओं का निर्माण किया। इस प्रकार प्रत्येक गोत्र के लिए अपने वेद की एक शाखा का पूर्ण अध्ययन करना आवश्यक कर दिया। अतः उन्होंने जिस शाखा का अध्ययन किया, वह उस वेद की शाखा के नाम से पहचाना गया।

कुलदेवी— वेद की शाखा की तरह से सूत्र होता है। व्यक्ति जब शाखा के अध्ययन में भी असमर्थ हो गया, तब उस गोत्र के परवर्ती ऋषियों ने उन शाखाओं को सूत्र रूप में बाँट दिया। प्रत्येक वेद या शाखा का पठन-पाठन करने वाले किसी विशेष देव की आराधना करते हैं, वही उनका कुल देवता या उनके आराध्य देव हैं। इसी प्रकार प्रत्येक गोत्र की कुलदेवी होती थी। उसके श्रौत कर्म जिस सूत्र के अनुसार होते थे, उसका भी उल्लेख किया जाता था। इसका ज्ञान अगली पीढ़ी को उनकी कुलदेवी के द्वारा दिया जाता है। अधिकांश चतुर्वेदियों (दक्ष गोत्र, कुत्स गोत्र, वशिष्ठ गोत्र, धौम्य गोत्र, शौश्रवस गोत्र और भार्गव गोत्र) का वेद— ऋग्वेद, शाखा—आश्वलायनी और कुलदेवी—महाविद्या है। सिर्फ भारद्वाज गोत्र का वेद—सामवेद, शाखा—रायनी और कुलदेवी—चर्चिका

ॐ समाज दर्पण ॐ

है. दोनों ही कुलदेवी के मंदिर मथुरा में विद्यमान हैं।

इसके अलावा ब्राह्मणों में दिशा, द्वार, शिखा, पाद, आदि भेद भी होते हैं. उक्त अंतिम भेद से पता लगाया जा सकता है कि यह व्यक्ति किस कुल का है, कौन से वेद की कौन सी शाखा के कौन से सूत्र और कौन से सूत्र के कौन से देव के ज्ञान को संवरक्षित करने वाला है। वर्तमान में यह जानकारी बहुत कम ब्राह्मणों को ही रह गई है लेकिन यदि कोई यह जानना चाहे तो अंतिम भेद यदि जान ले तो प्रथम पर पहुंचा जा सकता है।

अल्ल रु 'अल्ल' उपनाम को कहते हैं। सात गोत्र वाले माथुर चतुर्वेदी चौंसठ (६४) उपनामों या 'अल्लों' में विभक्त हैं। उपनाम अथवा 'अल्ल', वंश के विशिष्ट कार्य के आधार पर रखे गए हैं या ये उन गाँवों के नामों पर हैं जिनमें ये वंश उस समय रहते थे। ये सभी गाँव ब्रज में मथुरा के आसपास हैं। एक गाँव में एक ही गोत्र के लोग बस गए थे, इसलिए एक अल्ल के सभी लोग एक गोत्र के हैं। माथुरों की विभिन्न अल्ल इस प्रकार हैं।

गोत्र	अल्ल
१. दक्ष गोत्र (४)	ककोर, पैंचरे, पुरवेऊ, दक्ष
२. कुत्स गोत्र (५)	मेहारी, खलहरे, अरेठिया, संतैरे, शांडिल्य
३. वशिष्ठ गोत्र (८)	निनावली, काबो, बहिया, जोनमाने, डाहरू, हरोलिया, डुंडवार, पैठवाल
४. भार्गव गोत्र (१२)	दीक्षित, दरर, गेंदवार, गुगौलिया, गोंहजे, कनेरे, तर्र, घेहरिया, सकना, चतुरमुर्र, आमरे, मकनियाँ
५. भारद्वाज गोत्र (१५)	पांडे, पाठक, रावत, कारेनाग तिवारी, नसवारे, बीसा तिवारी, चौपोली तिवारी, भामले, अजामियाँ, कोहरे, दिआचाट तिवारी, सड्डु भेंसरे, गुनार, सिकरोरी, पिलहोली
६. धौम्य गोत्र (१०)	लापसे, भरतवार, तिलभने, मोरे, घरवारी, चंद्रपेखी, जोजले, सुकल, ब्रह्मपुरिया, सोती

७. शौश्रवस गोत्र (१०) पुरोहित, छिरोरा, घोरमई, मिश्र चक्रेरी, बुदौआ, तोपजाने, चंद्रसे, चंदपुरिया, बैसांदर, सुभावली

८. इन उपनामों से स्पष्ट है कि जिन गाँवों के नामों पर ये नाम पड़े हैं वे भाषा की दृष्टि से पूर्व मध्ययुग के हैं. उनके नामों का भाषाशास्त्रीय अध्ययन किया जाए तो मोटे तौर से उस युग का पता लग सकता है जब इनके मूल नाम पड़े. प्राकृत से जब ब्रज या खड़ी बोली का विकास हुआ तो कई जगह 'र' का 'ल' हो गया। प्राकृत में 'भामर' शब्द है जिसका अर्थ है—मधु या शहद (भ्रमरी का बनाया हुआ). प्राकृत में 'भामरे', हिंदी में 'भामले' का अर्थ हुआ, 'भामर' का निवासी। इसी प्रकार गुनार (प्राकृत गुण, हिंदी गुना मिष्टान विशेष से संबंधित), गुगौलिया (प्राकृत गुग्गल से संबंधित), गोंहजे (गोंह प्राकृत में गाँव का मुखिया), कनेरे (प्राकृत सकन्न दृ विद्वान से संबंधित), डुंडवार (प्राकृत डुंडुअ पुराना या बड़ा घंटा से संबंधित). इसी प्रकार दूसरे नामों का भाषाशास्त्रीय अध्ययन किया जा सकता है. अतएव ऐसा मानना है कि ये अल्लें दसवीं सदी के लगभग बनी और तब से प्रचलित हुई।

डा. धीरज कुमार चतुर्वेदी
भूतपूर्व प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, भौतिकी विभाग
कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र (हरियाणा)

रविन्द्र कुमार चतुर्वेदी जिलाध्यक्ष नियुक्त



बून्दी। अखिल भारतीय माथुर चतुर्वेदी महापरिषद बून्दी की एक बैठक आहूत की गई जिसमें महापरिषद के संरक्षक एवं अधिवक्ता रंगबल्लभ चतुर्वेदी ने अध्यक्षता की। महापरिषद के प्रवक्ता अनिल चतुर्वेदी ने बताया कि बैठक में अखिल भारतीय माथुर चतुर्वेदी महापरिषद बून्दी के लिए सर्वसम्मति से रविन्द्र कुमार चतुर्वेदी को जिलाध्यक्ष बनाया गया। बैठक में पं० संदीप चतुर्वेदी, नवीन चतुर्वेदी, ध्रुव चतुर्वेदी, राजेश चतुर्वेदी सहित समाज के गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे। सभी ने नवनियुक्त जिलाध्यक्ष रविन्द्र कुमार चतुर्वेदी को बधाई दी।

कश्मकश

कहानीकार— गंगा रानी चतुर्वेदी

बिहारी पंडित आज बहुत खुश थे बार—बार अपनी डायरी और पत्रा जिसमें फलादेश व तिथियां जानी जाती हैं। उसे देखे जा रहे थे। पत्नी प्रमिला उनके चेहरे के हाव भाव से जान गई थीं कि इन्हें आज किसी बड़े आदमी जिजमान के यहां जाना है, अच्छी दक्षिणा व कपड़े लत्ते भी मिलेंगे। इनसे बड़ी जीजी के यहां चलने के लिए कहती हूं। बहुत दिनों से वह बुला रही हैं और कह भी रहीं हैं। मेरी तबियत सही नहीं रहती।

उम्र भी हो रही है। ना जाने कब बुलावा आ जाए।

प्रमिला जी अपने पति के नजदीक गई और धीरे से कहने लगीं, अजी सुनते हो! मैं क्या कह रही थी। बड़ी जीजी कई बार बुला चुकी हैं। आज उस जिजमान के यहां से जो साड़ी कपड़ा लत्ता मिलेगा उसमें से कुछ उन्हें भी दे आएं और मिल भी आएं।

बिहारी पंडित जी के चेहरे पर एक साथ कई भाव आए और गए। अपनी पोथियों की तरफ मुंह करके कहने लगे!

ताल खुदे नहीं, मेढकों का टर्टराना शुरु हो गया।

प्रमिला जी को इस तरह इनका बोलना बुरा नहीं लगा क्यों कि इनकी हर दिन की ही बात थी। ये ठहरे संतोषी ब्राह्मण और गृहस्थी सिर्फ संतोष से नहीं चलती, फिर प्रमिला जी मन ही मन कुछ विचार करते हुए कहने लगी, ये जो तुम्हारी आदत है ना जरा सी बात पर खुश और कभी गुस्सा हो लेने की ये ठीक नहीं है। मुझे तो सारी दुनियांदारी देखनी पड़ती है। भला बुरा सब देखना पड़ता है। तुम्हें कोई फर्क ही नहीं पड़ता। आंखें गोल गोल घुमा कर प्रमिला जी ने कहा।

प्रमिला जी को बड़बड़ाते हुए देख पंडित जी ने कहा— भाग्यवान, क्या मिलेगा और क्या नहीं मिलेगा तुम्हें क्या पता। पंडितों की कोई बंधी आय तो होती नहीं, ना ही कोई फीस और नाही जुर्माना। सब राम भरोसे है। पहले से तुम्हें कैसे बता दूं कि, क्या मिलेगा क्या नहीं।

अब अगर तुम भी चलोगी तो दो जनों का टिकिट भाड़ा खर्च होगा और रास्ते में चाय पानी भी दो जनों का। बताओ तो क्या ये सही होगा। अपनी पुस्तक की ओर देखते हुए पंडित जी ने कहा।

प्रमिला जी ने सदा की तरह मुंह बनाते हुए कहा, तुम्हें शास्त्री ही बनना था। तुमने भी तो अपनी जिंदगी के कितने ही साल ये पढ़ाई करने में लगाए हैं। फिर भी हमें ना सरकार की तरफ से कुछ मिलता है और ना ही हम किसी से कुछ मांग कर सकते हैं। ये ही बस कथा भागवत, पूजा पाठ में जो मिल जाए, बस उसी में गुजारा करो। और तो और अब अपना बेटा भी शादी लायक हो रहा है। मैंने सुना है लोग पंडिताई करने वाले, धोती कुर्ता पहने वाले को अब बेटी देना नहीं चाहते।

पंडित जी ने हमेशा की ही तरह प्रमिला जी की बात इस कान से सुनी और दूसरे से निकालते हुए उनसे कहा— भाग्यवान कुछ जल पान दोगी या यूं ही!

प्रमिला जी अपने सिर पर पल्लू कर पंडित जी के लिए जलपान लेने रसोई की तरफ चल दी तब ही उन्होंने देखा, झुंझलाहट में सिर पर खींचा हुआ साड़ी का पल्लू फट गया गया है।

जल्दी से वह साड़ी को ऊपर की नीचे और नीचे की ऊपर करने लगी। वह नहीं चाहती थीं कि, पंडित जी सिर पर से फटा हुआ पल्लू देखें।

पंडित जी हांक लगाने लगे घर से ही ला रही हो या कुछ बाजार से मंगाया है जो इतनी देर लगा रही हो। अब वो कैसे बताएं कि साड़ी का उलट फेर कर रही हैं। थोड़ा सोचते हुए बोली, ये साड़ी तो अभी कुछ दिन पहले ही लेकर आए थे।

कौन सा कोई खरीद कर देता है। संदूक में रखी हुई जो उसे न पहननी हो वही साड़ी देते हैं लोग।

खैर छोड़ो, मन के विचारों को गर्दन के झटके से जमीन पर पटकते हुए प्रमिला जी ने पढेली पर से एक स्टील का डिब्बा निकाला जिसमें से कुछ मठरी और लड्डू निकाल कर प्लेट में रखे और एक ग्लास में पानी भरकर पंडित जी के आगे रख दिए। एक मूढे पर पंडित जी बैठ गए और सामने के स्टूल पर प्लेट और पानी रख दिया।

चलते वक्त पंडित जी ने जय गणेश की।

अपने चेहरे पर मुस्कान बिखेरते हुए पंडित जी ने कहा! भगवान ने चाहा तो और किसी दिन बड़ी जीजी से भी मिलने चले चलेंगे।

ॐ समाज दर्पण ॐ

प्रमिला जी दरवाजे तक कुछ कहने के लिए आई थी पर पंडित जी के चेहरे की मुस्कान को देखते हुए अपनी बात मन में ही रखे अंदर लौट आई। और सोचने लगी आज अगर पंडित जी को दक्षिणा में पांच हजार रुपए मिल जाएं तो कितना अच्छा हो। सोनई, हमारी और पंडित जी की बेटी, उसकी सोबर भी अब खतम होने पर आ रही है। तगा बंधा था, नामकरण हुआ था उसमें भी हम नहीं जा पाए थे। पंडित जी शहर से बाहर जो गए थे। दो जोड़ी कपड़े बेटा पुरुषोत्तम के हाथों भिजवा दिए थे।

अच्छा तो मैं क्या सोच रही थी। प्रमिला जी ने अपने आपको टोकते हुए कहा— अरे हॉ 'पांच हजार'

हॉ पांच हजार में उस बच्ची के लिए दो चांदी के हाथ के कड़े और बेटी दामाद को कपड़े तो आ ही जाएंगे। हां उसकी सास के लिए मेरे पास साड़ी रखी हुई है।

प्रमिला जी न जाने ऐसे कितने मनसूबे बांधे जा रही थी। वैसे ऐसा कुछ आज ही नहीं हो रहा था। जब भी पंडित जी किसी जिजमान के जाते थे, तब वह ऐसा ही कुछ न कुछ सोचती रहती थीं।

आज प्रमिला जी कुछ ज्यादा ही उत्सुक थीं, पंडित जी के चेहरे की मुस्कान उन्हें बार-बार याद दिलाती थी कि आज वह कुछ ज्यादा ही लेकर आएंगे।

सुबह से शाम हो गई और शाम रात में बदलती जा रही थी। प्रमिला जी की खुशी अब चिंता में बदलती जा रही थी। उन्हें पंडित जी की चिंता सताने लगी। वह कभी दरवाजे पर आती कभी घर के आंगन में पड़ी कुर्सी पर बैठ जाती। आज बेटा भी विद्यालय के आचार्य जी के साथ कहीं गया था। वह भी घर पर नहीं था।

रात के नौ बजे घर के दरवाजे पर दस्तक हुई। प्रमिला जी जल्दी से उठकर दरवाजे पर आई जैसे ही दरवाजा खोला सामने पंडित जी खड़े थे। उनकी हालत देख कर प्रमिला अवाक खड़ी उन्हें देखती रह गई। मुंह से एक शब्द भी निकले अस्त व्यस्त कपड़े जगह-जगह शरीर पर मिट्टी लगी पड़ी थी। आंखें ऐसे धंस रही थीं जैसे सुबह से पानी भी नसीब न हुआ हो।

अब घर में अंदर भी चलोगी कि दरवाजे पर ही खड़ा रखोगी। पंडित जी ने कहा।

ये क्या हालत हो रही है आपकी क्या हुआ। ऐसी हालत आपकी कैसे?

पंडित जी ने कहा— घर में चलो फिर बात करते हैं।

पंडित जी की हालत देख कर प्रमिला जी की आंखों में आंसू आ गए थे अपने पल्लू से आंखों पोंछती हुई जल्दी से पंडित जी के लिए पीने के लिए पानी लेकर आई और हाथ मुंह धोने के लिए एक पतीले में गर्म पानी होने के लिए चूल्हे पर रख दिया।

प्रमिला जी को कुछ पूंछते हुए नहीं बन रहा था। पंडित जी ने पानी पिया और निढाल से मूढ़े पर बैठ गए।

प्रमिला जी की निगाहें पंडित जी के थैले पर थीं। पंडित जी समझ गए, पर कुछ न बोले। बस इतना कहा— भागवान अब पास ही बैठी रहोगी या कुछ खाने पीने की व्यवस्था भी करोगी।

प्रमिला जी उठीं और गर्म पानी एक तसले में लेकर आई। उसमें पंडित जी के पैर धोने के लिए रखे। पैरों में जगह-जगह से खून निकल रहे थे।

प्रमिला जी पंडित जी के पैर धोते हुए कहने लगीं कितनी बार कहा है चमड़े के न सही कपड़े के जूते ही पहन लिया करो, नहीं ये तो संतोषी ब्राह्मण अपने हिसाब से ही चलेंगे।

पंडित जी प्रमिला को शांत करते हुए बोले, हम अपनी संस्कृति और सभ्यता-संस्कार के संवाहक हैं। हम ही अपने संस्कारों को लेकर नहीं चलेंगे तो दूसरा कोई क्यों चलेगा। देखती नहीं हो आजकल दुनिया में क्या-क्या हो रहा है। प्याज लहसुन तो छोड़ो मांस मदिरा का लोग सेवन करने लगे हैं।

प्रमिला जानती थीं कि बहस करने से कुछ नहीं होगा। थोड़ी देर शांत रहने के बाद उन्होंने पंडित जी से पूछा हुआ क्या ये तो बताओ?

पंडित जी ने एक गहरी सांस ली और बोलना शुरू किया।

यहां के बस स्टैंड से बस पकड़ कर हम राया तक बस से गए उसके बाद जिजमान के घर तक का रिक्शा कर लिया। जब हम उनके घर पहुंचे तो घर पर कोई नहीं था। सिर्फ नौकर था जिसने ये कहकर हमें दरवाजे से विदा कर दिया कि मेम साब घर पर नहीं हैं और साहब विदेश गए हुए हैं।

प्रमिला जी ने भुनभुनाते हुए कहा तुम कोई चोर उचक्का थे क्या, जो घर के अंदर भी नहीं बुलाया। चाय पानी

≡ समाज दर्पण ≡

भी नहीं पूछी। नास पीटा इतना भी नहीं जानता था कि पंडित जी कितनी दूर से आए हैं। कम से कम जलपान तो करा देता।

भागवान बुरा मत कहो। वो ठहरा नौकर आदमी जो मालिक ने कह दिया वही तो वो करेगा। पंडित जी ने कहा।

गर्दन को झटकते हुए प्रमिला जी ने कहा, मैं खूब जानती हूँ ऐसे नौकरों को जो घरों में रहते हैं। मालिक गए नहीं और उन्होंने माल मिठाई पर हाथ साफ किया।

पंडित जी ने हंसते हुए चुटकी ली, हाँ-हाँ तुम्हें तो नौकरों के बारे में बहुत जानकारी है।

प्रमिला जी ने गर्दन झुका ली और धीरे से कहा, वो अपनी पड़ोसन बैकुंठी है ना उसकी नातिन बहु जो आई है, उसके यहां से टी वी आया है। उसी में एक नाटक में मैंने देखा था।

अपनी बात पूरी करते हुए प्रमिला जी ने पूछा? कपड़ों में इतनी मिट्टी, लहू लुहान पैर ये कैसे हुए।

अरे कुछ नहीं तुम्हें तो पता है आजकल कॉलोनियों में कुत्ता पालने की होड़ लगी हुई है। गाय तो सब भूल ही चुके हैं। वहीं कॉलोनी में किसी ने अपना कुत्ता खुला छोड़ रखा था और तुम्हें तो मालूम है मुझे कुत्तों से बड़ा डर लगता है। कुत्तों का क्या भरोसा कब भौंकने लगें।

तो मतलब तुम गिर पड़े थे। तब ही पैरों में से खून, प्रमिला जी ने कहा।

प्रमिला जी नारियल तेल की डिब्बी ले आई थी। अब पानी में से पंडित जी के पैर बाहर निकालकर तेल लगाते हुए कहने लगी मैं तो पहले ही समझ गई थी। मेरी आज साड़ी सिर पर रखते समय सिर पर से ही फट गई थी।

अरे ये तो नई साड़ी है अभी तो तेल मील वालों की बहू ने दी थी।

मुंह बनाते हुए प्रमिला जी ने कहा! काहे की नई जाने कब कब की साड़ी निकाल कर देते हैं लोग। और वो साड़ी देते हैं जो उनके काम की नहीं होती।

तुम्हारी साड़ी फटने से मेरे साथ ऐसा नहीं हुआ पंडित जी ने कहा। पूरे आत्म विश्वास से कहा।

अच्छा तो बताओ वहां से लौटे कैसे। बिना कुछ खाए पिए ही हो सुबह से और मैं बेवकूफ इंतजार कर रही थी। आज तो पंडित जी अच्छा कुछ लेकर आएंगे। प्रमिला जी ने कहा।

किसी को कुछ कहने और सोचने की जरूरत नहीं है। जो होना था सो हो गया। अब जो भी घर में हो वह ले आओ। पंडित जी ने कहा।

प्रमिला रसोई में गई उसने तो सुबह अपने लिए भी निरी रोटी ही बनाई थी। अब क्या करे, तब ही उसे दलिया याद आया उसने जल्दी से दाल दलिया बनाया और परोस कर पंडित जी के सामने रख दिया।

दोनों ने वह दलिया खाया और सो गए। सुबह उठे तो पंडित जी ने प्रमिला से कहा, आज तो पड़ोसी विशंभर नाथ के यहां से अखबार ले आओ, कई दिनों से देश दुनिया की कोई खबर ही नहीं ली है।

प्रमिला विशंभर नाथ के यहां से अखबार लेकर आई। अखबार को हाथ में लेते ही पंडित जी बैठे से खड़े हो गए। प्रमिला भी अखबार को भौचक देखने लगी ऐसा क्या है इसमें जो आदमी बैठे से खड़ा हो गया।

आहिस्ता, आहिस्ता पंडित जी फिर से अपने मूढ़े पर बैठ कर अखबार जोर-जोर से पढ़ने लगे।

श्रीमती सुषमा देवी जी को ब्राह्मण महा सभा का अध्यक्ष मनोनित किया जाता है। श्रीमती सुषमा देवी ब्राह्मणों की दिशा व दशा दोनों ही बदलने में सक्षम हैं।

प्रमिला जी पूछने लगी, ये सुषमा देवी कौन हैं?

बड़े बुझे से मन से पंडित जी ने कहा! ये वही महिला हैं जिन्होंने मुझे कल बुलाया था। मैंने इनकी जन्म पत्री देखकर भविष्य वाणी की थी कि बहुत जल्दी तुम्हारा रूतवा बढ़ने वाला है। तुम्हारे घर में दिन दूनी रात चौगनी तरक्की होगी।

इनके साथ इनकी सहेली भी थी गंगा उसने मुझे उस दिन सौ रुपए दिए और घर बुलाने का वादा किया था।

सुषमा देवी तो! पंडित जी कुछ आगे कहते उससे पहले ही उन्हें टोकते हुए प्रमिला जी झल्लाकर कहने लगी— काहे की देवी जिसने तुम्हें इतना परेशान कर दिया।

पंडित जी इस समय प्रमिला जी से कुछ न कह सके। मौन रहकर अपने ईश्वर को याद करने लगे। हे भगवान शास्त्रों के ज्ञाता का ये हाल!



**स्व रचित-
गंगा रानी चतुर्वेदी
मथुरा**

श्री माथुर चतुर्वेदी महापरिषद राजस्थान की प्रदेश कार्यकारिणी

श्री माथुर चतुर्वेदी महापरिषद राजस्थान के अध्यक्ष श्री हृदयेश चतुर्वेदी ने महापरिषद के राष्ट्रीय संरक्षक—श्री अरुण चतुर्वेदी, पूर्व मंत्री, राज०सरकार, श्री धर्मगोपाल चतुर्वेदी एडवोकेट, भरतपुर, राष्ट्रीय सभापति श्री नीरज चतुर्वेदी, राष्ट्रीय महामंत्री—प्रदेश प्रभारी श्री प्रणव चतुर्वेदी कानपुर की सहमति से राजस्थान प्रदेश कार्यकारिणी का निम्नानुसार गठन किया है—

प्रदेश संरक्षक— श्री नरेन्द्र चतुर्वेदी (सेवानिवृत्त I.A.S. कोटा), श्री कुन्दन लाल चतुर्वेदी (पूर्व जागीरदार) विशनपुरा, जमवारामगढ़, श्री गौरव चतुर्वेदी—R.A.S. श्री कन्हैया लाल चतुर्वेदी जयपुर, श्री अजय पाठक पैन पैलेस जयपुर, श्री वरुण चतुर्वेदी हास्य कवि,

अध्यक्ष— श्री हृदयेश चतुर्वेदी

उपाध्यक्ष श्री गिरीश चतुर्वेदी, श्री संजय चतुर्वेदी 'कुक्कू', श्री योगेन्द्र चतुर्वेदी पूर्व तहसीलदार जयपुर, श्री प्रतापभानु चतुर्वेदी उदयपुर, श्री ओमप्रकाश चतुर्वेदी भवानीमंडी, श्री आर.एन. चतुर्वेदी अजमेर, प्रो०नीरज चतुर्वेदी जोधपुर, श्री सुरेश चतुर्वेदी करौली, श्री पंकज चतुर्वेदी भरतपुर, श्री के.सी.चतुर्वेदी कोटा, श्री दीपचंद चतुर्वेदी अजमेर।

महामंत्री— पीयूषपाणि चतुर्वेदी, नीलकमल चतुर्वेदी

संगठन मंत्री— राजेश चतुर्वेदी 'गुड्डू', नीरज चतुर्वेदी 'जॉय', दिनकर चतुर्वेदी, आलोक चतुर्वेदी, सुयश चतुर्वेदी उदयपुर, रामचन्द्र चतुर्वेदी भरतपुर, शोभित चतुर्वेदी बांदीकुई, रविन्द्र चतुर्वेदी चित्तौड़गढ़, गोविन्द चतुर्वेदी झालावाड़, सर्वेश्वर चतुर्वेदी जयपुर, अनूप चतुर्वेदी जयपुर, लवकुश चतुर्वेदी करौली,

मंत्री— सौरभ चतुर्वेदी जयपुर, नवनीत चतुर्वेदी जयपुर, गुँजन चतुर्वेदी जमवारामगढ़, पंकज चतुर्वेदी सवाई माधोपुर, शैलेश चतुर्वेदी भवानीमंडी, महेन्द्र चतुर्वेदी चित्तौड़गढ़, कौशल चतुर्वेदी कोटा, अनिल चतुर्वेदी भरतपुर, राजकुमार चतुर्वेदी करौली, सुरेश चतुर्वेदी टोंक, मुकेश चतुर्वेदी अजमेर, अरुण चतुर्वेदी उदयपुर, दिनेश चतुर्वेदी झालावाड़, दीपक चतुर्वेदी कोटा, ज्ञानेश चतुर्वेदी जयपुर, राजेश चतुर्वेदी करौली

सांस्कृतिक मंत्री— सुश्री अर्चना चतुर्वेदी शास्त्रीनगर जयपुर, श्रीमती भानू चतुर्वेदी गणपति नगर, जयपुर

महिला परिषद

संयोजक— श्रीमती रजनी चतुर्वेदी—जयपुर

सह—संयोजक— श्रीमती विमलेश चतुर्वेदी—जयपुर

सम्माननीया सदस्य— श्रीमती नेहा चतुर्वेदी जयपुर, श्रीमती

बबीता चतुर्वेदी जयपुर, श्रीमती मंजू चतुर्वेदी जयपुर, श्रीमती स्वेता चतुर्वेदी जयपुर, श्रीमती विभूति चतुर्वेदी जयपुर, श्रीमती इंदुबाला चतुर्वेदी भीलवाड़ा, श्रीमती प्रियंका चतुर्वेदी जयपुर, श्रीमती भारती चतुर्वेदी भरतपुर, श्रीमती आशा चतुर्वेदी कोटा।

युवा परिषद

संयोजक— श्री प्रदीप चतुर्वेदी

सह—संयोजक— रूपेश चतुर्वेदी

सम्माननीय सदस्य— वैभव चतुर्वेदी वैशालीनगर जयपुर, अमित चतुर्वेदी निवारू रोड, जयपुर, महेन्द्र चतुर्वेदी 'छोनु' गंगापोल जयपुर, सचिन चतुर्वेदी शास्त्रीनगर जयपुर, अनिल चतुर्वेदी बून्दी, प्रीत कमल चतुर्वेदी कोटा, आशुतोष चतुर्वेदी जयपुर, दिवांक चतुर्वेदी कोटा, शशांक चतुर्वेदी भीलवाड़ा, जयेन्द्र चतुर्वेदी जयपुर, कुलदीप चतुर्वेदी चित्तौड़गढ़

कार्यकारिणी सदस्य— हर्षकान्त चतुर्वेदी जयपुर, सुनील चतुर्वेदी भवानीमंडी, अमित चतुर्वेदी जयपुर, दीपांशु चतुर्वेदी भवानीमंडी, राजेन्द्र चतुर्वेदी छोटी सादड़ी, भाष्कर चतुर्वेदी हिंडौन, राम रछपाल चतुर्वेदी करौली, भरत चतुर्वेदी चित्तौड़गढ़, रमेश चतुर्वेदी करौली, अभिषेक चतुर्वेदी जयपुर, विशाल चतुर्वेदी हिंडौन, नरेन्द्र चतुर्वेदी करौली, शैलेश चतुर्वेदी, देवेन्द्र चतुर्वेदी करौली, वरुण चतुर्वेदी 'आशु' जयपुर, अरविन्द चतुर्वेदी करौली, सतीश चतुर्वेदी जयपुर।

विशेष आमंत्रित सदस्य— श्री अरुण चतुर्वेदी—राष्ट्रीय संरक्षक, श्री धर्मगोपाल चतुर्वेदी—राष्ट्रीय संरक्षक, श्री नीरज चतुर्वेदी—राष्ट्रीय सभापति, श्री व्यास चतुर्वेदी उप—सभापति भोपाल, श्री प्रणव चतुर्वेदी—राष्ट्रीय महामंत्री प्रदेश प्रभारी, श्री कुलदीप नाथ मिश्रा—राष्ट्रीय मंत्री, श्री नितिन चतुर्वेदी—राष्ट्रीय मंत्री निम्बाहेड़ा, श्री मिथलेश रावत कोटा, श्री अनिल चतुर्वेदी—मीडिया प्रबंधन मंत्री—उदयपुर, श्री नरेंद्र चतुर्वेदी—करौली जयपुर, श्री अनिल चतुर्वेदी—देवली, श्री लोकेश चतुर्वेदी कोटा, श्री चन्द्र शेखर चतुर्वेदी जयपुर।

विधिक परिषद— श्री नरेन्द्र चतुर्वेदी एडवोकेट जयपुर, श्री प्रशान्त चतुर्वेदी एडवोकेट जयपुर, श्री गोविन्द चतुर्वेदी एडवोकेट करौली, श्री वीरेन्द्र चतुर्वेदी एडवोकेट जयपुर, श्री गोपाल चौबे एडवोकेट कोटा, श्री अनिल चतुर्वेदी एडवोकेट जयपुर।

पीयूषपाणि चतुर्वेदी

महामंत्री

श्री माथुर चतुर्वेदी महापरिषद—राजस्थान

श्री माथुर चतुर्वेदी महापरिषद हरियाणा की प्रदेश कार्यकारणी

मैंने हरियाणा प्रदेश की कार्यकारिणी गठित निम्न प्रकार की है। जो आपके तथा माननीय राष्ट्रीय महामंत्री जी के अनुमोदन हेतु प्रस्तुत है—

विशेष आमंत्रित सदस्य

- श्री सुखदेव चतुर्वेदी राष्ट्रीय संरक्षक डबरा/उचाड़
- श्री नीरज चतुर्वेदी राष्ट्रीय सभापति जयपुर/हिंडोन
- श्री प्रणव चतुर्वेदी राष्ट्रीय महामंत्री कानपुर/मैनपुरी

संरक्षक

- श्री यतीन्द्र नाथ चतुर्वेदी गुरुग्राम/जहाँगीरपुर
- श्री भुवन चतुर्वेदी गुरुग्राम/मैनपुरी
- डा. शरद चतुर्वेदी गुरुग्राम/मथुरा
- श्रीमती गीता चतुर्वेदी गुरुग्राम/मैनपुरी
- श्रीमती पुष्पा देवी चतुर्वेदी गुरुग्राम/पुरा कन्हेरा
- श्री नरेश नाथ चतुर्वेदी गुरुग्राम/मथुरा

अध्यक्ष

- डा. धीरज कुमार चतुर्वेदी कुरुक्षेत्र/जहाँगीरपुर

उपाध्यक्ष

- श्री सुशील चतुर्वेदी पानीपत/दानपुर
- श्री अखिलेश चतुर्वेदी गुरुग्राम/करेंटी (प्रतापगढ़)
- श्रीमती रक्षा चतुर्वेदी भिवाड़ी/कमतरी
- श्री गोपाल चतुर्वेदी फरीदाबाद/झाँसी
- श्री अभय चतुर्वेदी (बिड़ू) गुरुग्राम/मैनपुरी
- श्री खगेश कुमार चतुर्वेदी गुरुग्राम/तालगांव

महामंत्री

- श्री अनिल चतुर्वेदी गुरुग्राम/मथुरा
- श्री गौतम चतुर्वेदी फरीदाबाद/होलीपुरा

महामंत्री (संगठन)

- श्री प्रणव चतुर्वेदी गुरुग्राम/मैनपुरी
- श्री अभय चतुर्वेदी गुरुग्राम/तरसोखर

महासचिव

- श्री आलोक पांडे गुरुग्राम/होलीपुरा

कोषाध्यक्ष

- श्री मनोज चतुर्वेदी गुरुग्राम/हिंडोन

मंत्री

- श्री नीलकांत चतुर्वेदी गुरुग्राम/जहाँगीरपुर
- श्रीमती प्रिया चतुर्वेदी पानीपत/होलीपुरा
- श्री संदीप चतुर्वेदी पंचकुला/फरौली

मीडिया प्रभारी

- श्रीमती प्रिया चतुर्वेदी गुरुग्राम/पुरा कन्हेरा
- श्रीमती अपर्णा चतुर्वेदी गुरुग्राम/जहाँगीरपुर

सांस्कृतिक कार्यक्रम

- श्रीमती राखी चतुर्वेदी गुरुग्राम/कमतरी
- श्री प्रशांत चतुर्वेदी गुरुग्राम/जयपुर
- श्रीमती अनुराधा पांडे गुरुग्राम/होलीपुरा
- श्रीमती हर्षिता चतुर्वेदी फरीदाबाद/मैनपुरी

संयोजक महिला प्रकोष्ठ

- श्रीमती पूनम चतुर्वेदी गुरुग्राम/मैनपुरी

संयोजक युवा प्रकोष्ठ

- श्री अंश चतुर्वेदी गुरुग्राम/मैनपुरी

कार्यकारिणी सदस्य

- डा. नितिन चतुर्वेदी पानीपत/मैनपुरी
- श्रीमती स्मिता चतुर्वेदी गुरुग्राम/मथुरा
- श्री मनीष चतुर्वेदी पानीपत/जहाँगीरपुर
- श्री रुचिर चतुर्वेदी फरीदाबाद/झाँसी
- श्री महेंद्र नाथ चतुर्वेदी करनाल/मथुरा
- श्री भारतेंदु चतुर्वेदी गुरुग्राम/बिजकौली (बाह)

महिला प्रकोष्ठ

- श्रीमती मृदुला चतुर्वेदी कुरुक्षेत्र/होलीपुरा
- श्रीमती ममता चतुर्वेदी गुरुग्राम/मथुरा
- श्रीमती सीमा चतुर्वेदी फरीदाबाद/होलीपुरा
- श्रीमती तन्वी चतुर्वेदी फरीदाबाद/मैनपुरी
- श्रीमती अल्का चतुर्वेदी करनाल/होलीपुरा
- श्रीमती स्वाती चतुर्वेदी गुरुग्राम/पुरा कन्हेरा

डा० धीरज कुमार चतुर्वेदी

अध्यक्ष

श्री माथुर चतुर्वेदी महापरिषद, हरियाणा

≡ समाज दर्पण ≡

श्री माथुर चतुर्वेदी महापरिषद मध्य प्रदेश की प्रदेश कार्यकारिणी

सादर पालागन

बड़े हर्ष के साथ सूचित किया जा रहा है कि श्री माथुर चतुर्वेदी महापरिषद की कार्यकारिणी का गठन किया जा चुका है।

पदनाम	नाम	प्रवासी	मो0नं0
विशेष आमंत्रित			
सभापति	श्री नीरज चतुर्वेदी	जयपुर	9523120404
महामंत्री संगठन	श्री प्रणव चतुर्वेदी	कानपुर	9935533719
राष्ट्रीय संरक्षक	श्री सुखदेव चतुर्वेदी	उचाड	7745955470
राष्ट्रीय महामंत्री	श्री निशीथ चतुर्वेदी	डवरा	9977441400
उपसभापति	श्री के. के. चतुर्वेदी	इन्दौर	9425064055
राष्ट्रीय मंत्री	श्री कृष्ण बिहारी चतुर्वेदी	विदिशा	9827385600
	श्री सुरेन्द्र चतुर्वेदी	ग्वालियर	8109857210
राष्ट्रीय सदस्य	श्री मनोज चतुर्वेदी	इन्दौर	9893313355
प्रभारी म.प्र.	श्री पियूष चतुर्वेदी	हल्दवानी	9568392406
राष्ट्रीय सदस्य	श्री गजेन्द्र नाथ चतुर्वेदी (एड.)	दमोह	9425095866
उपसभापति	श्री व्यास चतुर्वेदी	भोपाल	8989440561
मंत्री	श्री जन्मेश चतुर्वेदी	भोपाल	9826054517
संगठन मंत्री	श्री राजेश चन्द्र चतुर्वेदी	भोपाल	6264331133
राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्य	श्री पुनीत चतुर्वेदी	भोपाल	9406566276
संरक्षक	श्री मधुकर चतुर्वेदी	होशंगाबाद	9131767190
	श्री पियूष चतुर्वेदी	भोपाल	9827328056
	श्री आलोक चतुर्वेदी	कटनी	9425154127
	श्री अवनींद्र चतुर्वेदी	इन्दौर	9753210135
	श्री कौशल किशोर चतुर्वेदी (एड.)	भोपाल	9837801103
	श्री सत्यनारायण चतुर्वेदी	डवरा	9165615150
अध्यक्ष	तरुण चतुर्वेदी	गोपाल	9826530965
उपाध्यक्ष	डॉ. राजीव चतुर्वेदी	ग्वालियर	9425791024
	श्रीमती पूनम (चीना) चतुर्वेदी	गोपाल	9893435738
	श्री पंकज चतुर्वेदी (नेताजी)	भोपाल	9425004636
	श्री अयोध्यानाथ चतुर्वेदी	रीवा	9893458268
	श्री प्रशांत चतुर्वेदी	ग्वालियर	7772965777
	श्री पंकज चतुर्वेदी	भोपाल,	9826255075
	श्री श्यामलाल चतुर्वेदी (गुब्बी)	भिन्ड	9576377808

ॐ समाज दर्पण ॐ

महामंत्री	श्री विकास चतुर्वेदी	ग्वालियर	8821023614
	श्री नरेश चतुर्वेदी	भोपाल	9926002250
	डॉ. मुकेश चतुर्वेदी	ग्वालियर	9827386419
	श्रीमती सीमा (कृति) चतुर्वेदी	भोपाल	9426605297
	श्री पियूष चतुर्वेदी	इन्दौर	9828700164
	श्री रामनिवास चतुर्वेदी	गुरैना	9893001527
मंत्री	श्री वासुदेव चतुर्वेदी	नीमच	8989766586
	श्री मुकुल चतुर्वेदी	गुरैना	9399353272
	डॉ. मीनाक्ष चतुर्वेदी	भोपाल	9826023188
	श्री कैलाश नाथ चतुर्वेदी	इन्दौर	8109942800
	श्री अनुराग चतुर्वेदी	सागर	9425661672
	श्री धनेश कुमार चतुर्वेदी	भिन्द	7828195439
	श्री राजेन्द्र चतुर्वेदी राजरामपुरी	गुरैना	9691448864
संगठन मंत्री	श्री पंकज चतुर्वेदी	ग्वालियर	9329623263
	श्री धीरेन्द्र चतुर्वेदी	ग्वालियर	9828581647
	श्री दिलीप चतुर्वेदी	जबलपुर	9425188825
	श्री वैभव चतुर्वेदी	सागर	7999923690
	श्री अजय चतुर्वेदी	भोपाल	9301047835
	श्री जितेन्द्र चतुर्वेदी	भोपाल	7987530824
	श्री विवेक चतुर्वेदी	इन्दौर	9425319905
	श्रीमती अमिता चतुर्वेदी	जबलपुर	9109528772
	श्रीमती माया चतुर्वेदी	शिवपुरी	9926605519
	श्री सत्यम चतुर्वेदी	भोपाल	7048052492
	श्री उमेश चतुर्वेदी	ग्वालियर	8602786033
सांस्कृति कार्यक्रम मंत्री	श्री हरिमोहन चतुर्वेदी	भोपाल	9926320051
	श्री टीकेन्द्र नाथ चतुर्वेदी	ग्वालियर	9425772218
	श्री राजकुमार चतुर्वेदी	मंदसौर	9406640407
मीडिया प्रभारी	श्री गगन चतुर्वेदी	भोपाल	9826011175
मंत्री व्यवस्था प्रबंधन	श्री मधुर चतुर्वेदी	भोपाल	8871710051
सदस्य	श्री भूपेन्द्र कुमार चतुर्वेदी	रामपुर	8966054879
	श्री बसंत कुमार चतुर्वेदी	दतिया	7999477260
	श्री सतीश चतुर्वेदी	सिंगरौली	9425189988
	श्री मुकेश चतुर्वेदी	भोपाल	9300360655
	श्री राजेश चतुर्वेदी	भोपाल	9424071307
	श्री अभिनव चतुर्वेदी	विदिशा	702410933
	श्री गजेन्द्र नाथ चतुर्वेदी	उचाड, दतिया	9926294229
	श्री रजनीकांत चतुर्वेदी	कटनी	8630542476
	श्री राहुल चतुर्वेदी	भोपाल	8871972000
	श्री मृगेन्द्र नाथ चतुर्वेदी (संयो.वि.परि)	उचाड,दतिया	8959018385

श्री माथुर चतुर्वेदी महापरिषद गुजरात की प्रदेश कार्यकारिणी

श्री प्रकाश चन्द्र चतुर्वेदी ने अपनी कार्यकारिणी की घोषणा संरक्षक मंडल, सभापति श्री नीरज चतुर्वेदी महामंत्री श्री प्रणव चतुर्वेदी प्रभारी श्री देवानंद चतुर्वेदी, जलगांव एवं श्री राजकुमार पाठक राष्ट्रीय संगठन मंत्री की सहमति से निम्न प्रकार गठित कर की है।

- संरक्षक मंडल—
1. श्री रवीन्द्रनाथ चतुर्वेदी (अहमदाबाद)
 2. श्री रंगेश्वर चतुर्वेदी (बरोड़ा)
 3. श्री हरीश जी चतुर्वेदी (अहमदाबाद)
 4. श्री पृथ्वीनाथ चतुर्वेदी (बड़ौदा)
- अध्यक्ष— प्रकाश चतुर्वेदी (अहमदाबाद)
- उपाध्यक्ष—
1. श्री सतीश बल्लभ पाठक चतुर्वेदी (बरोड़ा)
 2. श्री गिरीश चतुर्वेदी (अहमदाबाद)
 3. श्री राकेश चतुर्वेदी (भरुच)
 4. श्री सौमित्र चतुर्वेदी (आनंद)
- महामंत्री—
1. श्री सत्येंद्र कुमार चतुर्वेदी (अहमदाबाद)
 2. श्री बसंत चतुर्वेदी (बरोड़ा)
- मंत्री—
1. श्री परेश चतुर्वेदी (अहमदाबाद)
 2. श्री प्रमोद चतुर्वेदी (अहमदाबाद)
 3. श्री जितेंद्र चतुर्वेदी (गांधी धाम)

4. श्री पवन सुभाष चतुर्वेदी (वापी)
 5. श्री जितेंद्र चतुर्वेदी (बरोड़ा)
 6. श्री रवि चतुर्वेदी (लाला मेंबर अहमदाबाद)
- संगठन मंत्री —
1. श्री विवेक चतुर्वेदी (भरुच)
 2. श्री अनूप चतुर्वेदी (बरोड़ा)
 3. श्री डॉ. आशीष चतुर्वेदी
 4. श्री पराग चतुर्वेदी (अंकलेश्वर)
- सांस्कृतिक कार्यक्रम मंत्री— श्री प्रदीप चतुर्वेदी (अहमदाबाद)
- मीडिया / आई. टी प्रबंधन— श्री ललित चतुर्वेदी (अहमदाबाद)
- मंत्री व्यवस्था प्रबंधन—
- विशेष आमंत्रित सदस्य —
1. श्री राजकुमार पाठक (अहमदाबाद)
 2. श्री चिरंजीव चतुर्वेदी (अहमदाबाद)
 3. श्री अजय चतुर्वेदी (अहमदाबाद)
 4. श्री ललित चतुर्वेदी (भरुच)
- सभी पदाधिकारियों एवं सदस्यों को हार्दिक बधाई शुभ कामनायें।
- प्रकाश चतुर्वेदी
प्रदेश अध्यक्ष— श्री माथुर चतुर्वेदी महापरिषद गुजरात

श्री माथुर चतुर्वेदी महापरिषद कर्नाटका की प्रदेश कार्यकारिणी

श्री माथुर चतुर्वेदी महापरिषद कर्नाटका, के प्रदेश अध्यक्ष श्री मृदुलकान्त चतुर्वेदी, बैंगलोर ने अपनी प्रदेश कार्यकारिणी की घोषणा निम्न प्रकार घोषित कर अनुमोदन हेतु प्रेषित की हैं।

- संरक्षक मंडल—
- श्री मनोज जी ,कमतरी /बैंगलोर
- श्री शशि कांत जी,कमतरी /बैंगलोर
- श्री सूरज प्रसादजी कायमगंज /बैंगलोर
- श्री ब्रह्म स्वरूपजी पाण्डे मैनपुरी /बैंगलोर
- श्री गोपाल कृष्ण जी बटेश्वर /बैंगलोर
- अध्यक्ष— श्री मृदुलकांत चतुर्वेदी, पुरा कन्हेरा /बैंगलोर
- उपाध्यक्ष—
- श्री गिरिजेश जी पुरा /शिमोगा
- श्री अमित चतुर्वेदी ,हिंडौन /बैंगलोर
- महामंत्री— श्री नवीनजी फरौली /बैंगलोर
- मंत्रीगण—
- श्री तरुण जी मिश्रा मैनपुरी /बैंगलोर
- श्री नितिन जी तालगांव /बैंगलोर

- संगठन मंत्री—
- श्री विकास जी चंद्रपुर /बैंगलोर
- श्री कुणाल जी कमतरी /बैंगलोर
- श्री दीपक चतुर्वेदी मथुरा /बैंगलोर
- सांस्कृतिक मंत्री— सुश्री शिल्पी पाण्डे मैनपुरी /बैंगलोर
- मंत्री व्यवस्था प्रबंधन—सी ए श्री पंकज चतुर्वेदी बैंगलोर
- कार्यकारिणी—
- श्री अविरलजी तरसोखर / बैंगलोर
- श्री निशांत जी आगरा /बैंगलोर
- श्री गिरिधारी जी मथुरा /बैंगलोर
- श्री अनिमेष जी (होलीपुरा /मैसूर
- श्री आलोक चतुर्वेदी ,मथुरा /बैंगलोर
- श्री अभिषेक चतुर्वेदी, होलीपुरा / बैंगलोर
- श्री अजय चतुर्वेदी, बेल्लारी
- श्री आदित्य चतुर्वेदी, मथुरा /बैंगलोर
- श्री अम्बुज पाण्डे मैनपुरी /बैंगलोर

श्री माथुर चतुर्वेदी सभा कोलकाता की प्रदेश कार्यकारणी

श्री माथुर चतुर्वेदी सभा, कोलकाता के दिनांक 16 अप्रैल 2023 को अनुष्ठित वार्षिक अधिवेशन में मुझे सभापति चुना गया जिसके लिए मैं समग्र समाज का आभारी हूँ। वर्ष 2023-24 कार्यकाल के लिए सभा की कार्यकारिणी निम्नलिखित है-

संरक्षक(सप्तर्षि)

- | | |
|-----------------------|------------|
| 1 श्री ईश्वरनाथ जी | जहांगीरपुर |
| 2 श्री उपेन्द्रनाथ जी | होलीपुरा |
| 3 श्री सतीश जी | जहांगीरपुर |
| 4 श्री गोकर्णनाथ जी | तालग्राम |
| 5 श्री तीरथनाथ जी | फरोली |
| 6 श्री नीलकमल जी | कायमगंज |
| 7 श्री सुधीर जी नेता | मैनपुरी |

- | | |
|----------------------|------------|
| श्री अनुज जी नंदू | सभापति |
| श्री राजेश जी मिश्रा | उपसभापति |
| श्री नीलोत्पल जी | उपसभापति |
| श्री अनुज जी | सचिव |
| श्री नितिन जी | उपसचिव |
| श्री जयदीप जी | कोषाध्यक्ष |
| श्री मनीष जी | संयोजक |

सदस्य कार्यसमिति

- 1 श्री प्रवीण जी
- 2 श्री उमाकान्त जी
- 3 श्री फतेहचन्द जी
- 4 श्री मुकेश जी गोवा बागान
- 5 श्री विकास जी हावड़ा
- 6 श्री रजत जी पुरा
- 7 श्री दुष्यंत जी
- 8 श्री हितेश जी
- 9 श्री रजनीकांत जी
- 10 श्री पंकज जी
- 11 श्री गौतम जी

विशेष आमंत्रित

- 1 श्री भुबनेश जी पुरा



- 2 डॉ विक्रम जी
- 3 श्री मुकेश जी चेतला
- 4 श्री राकेश जी मिश्रा
- 5 श्री किशन जी सिंकंदरपुर

महिला प्रकोष्ठ

- | | |
|-------------------|--------|
| श्रीमती प्रीति जी | संयोजक |
| श्रीमती नूतन जी | |
| श्रीमती अमिता जी | |
| श्रीमती नीति जी | |
| श्रीमती नेहा जी | |
| श्रीमती राखी जी | |
| श्रीमती श्वेता जी | |

युवा प्रकोष्ठ

- | | |
|-------------------|--------|
| श्री वैभव जी सोनू | संयोजक |
| श्री उत्सव जी | |
| श्री उत्कर्ष जी | |
| श्री सजल जी | |
| श्री प्रांजल जी | |

श्री माथुर चतुर्वेदी (महिला) महापरिषद की राष्ट्रीय कार्यकारणी

श्री माथुर चतुर्वेदी (महिला) महापरिषद की राष्ट्रीय कार्यकारणी की प्रथम सूची आपको समर्पित है। इस सूची में पूरा प्रयास किया गया है कि देश के कोने कोने से साथियों को जोड़ा जाए ताकि सब तक पहुंचा जा सके—

सह संयोजक

- 1- Anjali Chaturvedi- Agra
- 2- Sunilam Chaturvedi- Gwalior
- 3- Nutan Chaturvedi- Noida
- 4- Nidhi Chaturvedi- Agra
- 5- Meena Chaturvedi - Kolkata
- 6- Priyanka Chaturvedi- Delhi

सचिव

- 1- Dipti Chaturvedi- Lucknow
- 2- Dolly Chaturvedi- Delhi
- 3- Preeti Chaturvedi- Greater Noida
- 4- Deepa Mishra- Jaipur
- 5- Asha Chaturvedi- Kota
- 6- Mona Chaturvedi- Jamshedpur
- 7- Ranjana Chaturvedi- Lucknow
- 8- Asha Chaturvedi- Kota
- 9- Mona Chaturvedi- Jamshedpur
- 10- Ranjana Chaturvedi- Lucknow
- 11- Prachi Chaturvedi- Greater Noida
- 12- Vinita Chaturvedi- Etawah
- 13- Poonam Chaturvedi- Chandigarh

सह सचिव

- 1- Alka Chaturvedi- Gwalior
- 2- Bhavna Chaturvedi- Banaras
- 3- Rakhi Chaturvedi- Mumbai
- 4- Punam Chaturvedi- Bhopal
- 5- Shalini Chaturvedi- Lucknow
- 6- Sunita Chaturvedi- Agra
- 7- Shipra Chaturvedi- Lucknow

संयुक्त सचिव

- 1- Sharmila Chaturvedi- UK
- 2- Simantini Chaturvedi- jaipur
- 3- Vibha Chaturvedi- Delhi
- 4- Alka Chaturvedi- K
- 5- Richa chaube- Gondia
- 6- Rakhi Prasoon Chaturvedi- Mumbai
- 7- Sarika Chaturvedi- Nagpur
- 8- Rita Chaturvedi- Delhi
- 9- Honey Mishra- Mainpuri
- 10- Manisha Chaturvedi- Mainpuri

- 11- Chitra Chaturvedi- Kanpur
- 12- Parul Chaturvedi- Faridabad
- 13- Alankrita Chaturvedi- Gaziabad
- 14- Sarika Chaturvedi- Nagpur
- 15- Rita Chaturvedi- Delhi
- 16- Honey Mishra- Mainpuri
- 17- Manisha Chaturvedi- Mainpuri
- 18- Chitra Chaturvedi- Kanpur
- 19- Parul Chaturvedi- Faridabad
- 20- Alankrita Chaturvedi- Gaziabad

प्रवक्ता

- 1- Prachi Chaturvedi- noida
- 2- Neema Chaturvedi- Mumbai

संस्कृतिक मंत्री

- 1- Ranu Chaturvedi- greater Noida
- 2- Priyal Chaturvedi- Bhopal
- 3- Rakhi Chaturvedi- Indirapuram Gaziabad
- 4- Karuna Chaturvedi- Bhopal

कार्यकारणी सदस्य गण

- 1- Madhuri (Jaya) Chaturvedi- Patna
- 2- Sasmita Chaturvedi- Agra
- 3- Bhavna Chaturvedi- Delhi
- 4- Jyotsana Chaturvedi- lucknow
- 5- Vijaylakshmi Chaturvedi- Mumbai
- 6- Trupti Misra- Kolkata
- 7- Padma Chaturvedi- Haridwar
- 8- Manisha Chaturvedi- Pratapgarh
- 9- Pallavi Chaturvedi- Sahibabad
- 10- Poonam Chaturvedi- Gurugram
- 11- Bharti Chaturvedi
- 12- Ila Chaturvedi_ Gurugram
- 13- Manjul Chaturvedi_ Faridabad
- 14- Richa Chaturvedi_ Firozabad
- 15- Shubhangi Chaturvedi_ Bangaluru
- 16- Pinki Chaturvedi_ Delhi
- 17- Sapna Chaturvedi_ Karoli
- 18- Deepa Chaturvedi_ Mathura
- 19- Abha Chaturvedi_ Mumbai
- 20- Dr-Ruchi Chaturvedi
- 21- Sarika Chaturvedi_ Delhi
- 22- Kiran Chaturvedi_ Odisha
- 23- Ritu Chaturvedi_ Hyderabad
- 24- Kanchna Chaturvedi_ Chennai

संयोजक— श्रीमती निकिता चतुर्वेदी दिल्ली

9873184231

श्री माथुर चतुर्वेदी युवा महापरिषद की राष्ट्रीय कार्यकारिणी

आदरणीय संरक्षक मण्डल, आदरणीय सभापति महोदय श्री नीरज चतुर्वेदी जी, आदरणीय महामंत्री संगठन श्री प्रणव चतुर्वेदी जी एवं युवा महापरिषद के प्रभारी श्री रोहित चतुर्वेदी (आगरा) की सहमति से श्री माथुर चतुर्वेदी युवा महापरिषद की कार्यकारिणी निम्न प्रकार घोषित की गई है। सभी पदाधिकारियों एवं सदस्य महानुभावों को हार्दिक शुभकामनाएं एवं बधाई।

श्री माथुर चतुर्वेदी युवा महापरिषद की राष्ट्रीय कार्यकारिणी

- अध्यक्ष— आशीष चतुर्वेदी (मथुरा)
वरिष्ठ उपाध्यक्ष— श्री ज्ञानेंद्र चतुर्वेदी (प्रे. नोएडा)
उपाध्यक्ष— श्री विनीत चतुर्वेदी (मुंबई महाराष्ट्र)
उपाध्यक्ष— श्री निमिश चतुर्वेदी (चंडीगढ़)
महामंत्री— श्री प्रशांत चतुर्वेदी (कानपुर)
महामंत्री— श्री प्रतीक चतुर्वेदी (फिरोजाबाद)
महामंत्री— श्री कुंज बिहारी चतुर्वेदी (मथुरा)
मंत्री— श्री आदेश चतुर्वेदी (मथुरा)
मंत्री— श्री आशीष चतुर्वेदी (चंडीगढ़)
मंत्री— अबनेश मिश्रा (गुरुग्राम)
संयुक्त मंत्री— श्री प्रीत कमल चतुर्वेदी (कोटा)
संयुक्त मंत्री— श्री कमल चतुर्वेदी (बरेली)
संयुक्त मंत्री— श्री मयंक चतुर्वेदी (मंसूरी)
संयुक्त मंत्री— श्री धवल चतुर्वेदी (दिल्ली)
संयुक्त मंत्री— श्री गौरव चतुर्वेदी (लखनऊ)
संयुक्त मंत्री— श्री सिद्धार्थ चतुर्वेदी (लखनऊ)
संयुक्त मंत्री— श्री गौरव चतुर्वेदी (दिल्ली)
संगठन मंत्री/मीडिया प्रभारी— श्री सिद्धार्थ चतुर्वेदी (आगरा)
संगठन मंत्री— श्री सौरभ चतुर्वेदी (करेटी)
संगठन मंत्री— श्री प्रदीप चतुर्वेदी (जयपुर)

कार्यकारिणी सदस्य

- श्री आनंद चतुर्वेदी (विशाखापत्तनम आन्ध्र प्रदेश)
श्री गौरव चतुर्वेदी (बैंगलूरु कर्नाटक)
श्री सौरभ चतुर्वेदी (लखनऊ)
श्री हर्ष चतुर्वेदी (बनारस)
कुं श्रद्धा चतुर्वेदी (बनारस)
श्री अंकुर चतुर्वेदी (कानपुर)

- श्री प्रदीप चतुर्वेदी (मथुरा)
श्री विनायक चतुर्वेदी (आगरा)
श्री पवन चतुर्वेदी (बैंगलूरु कर्नाटक)
श्री रोहित चतुर्वेदी (आगरा)
श्री पल्लव चतुर्वेदी (गाजियाबाद)
श्री अतुल कुमार चतुर्वेदी (गांव सिलपोली,पुरा कनैरा,आगरा)
श्री प्रेम प्रकाश चतुर्वेदी (सुभाष गंज,डबरा, ग्वालियर)
श्री मयंक चतुर्वेदी (नागपुर)
श्री यश चतुर्वेदी (कानपुर)
श्री सलिल चतुर्वेदी (गुरुग्राम)
श्री गौरव चतुर्वेदी (लखनऊ)
श्री सुरभित चतुर्वेदी (कोटा)
श्री रमणीक चतुर्वेदी (कानपुर)
श्री प्रफुल चतुर्वेदी (आगरा)
श्री विकास चतुर्वेदी (ग्वालियर)
श्री संचित चतुर्वेदी (इटावा)
श्री रामकिशन पाठक एडवोकेट (मथुरा)
श्री रामकृष्ण चतुर्वेदी एडवोकेट (मथुरा)
श्री सुनील चतुर्वेदी (मथुरा)
श्री सार्थक चतुर्वेदी एडवोकेट (दिल्ली)
डॉ आनंद प्रोहित (दिल्ली)
श्री अजय चतुर्वेदी (मथुरा)
श्री चिरंजीव चतुर्वेदी (अहमदाबाद)
श्री नवीन चतुर्वेदी (ग्वालियर)

अभी श्री माथुर चतुर्वेदी युवा महापरिषद की कार्यकारिणी में सभी वरिष्ठ पदाधिकारीगणों की अनुमति से विस्तार होना है जिसमें सभी प्रदेशों में युवा पदाधिकारियों घोषित होना विचाराधीन है एवं जो नाम आधार कार्ड के साथ मुझ तक पहुंचने से रह गये हैं उनसे निवेदन है मेरे वाट्सअप नं 9458016680 पर शेयर कर दें।

आप सभी को अक्षय तृतीया पर्व की हार्दिक शुभकामनाएं पालागन एवं जय श्री कृष्ण।

आपका
आशीष चतुर्वेदी

≡ समाज दर्पण ≡

श्री माधुर चतुर्वेदी महापरिषद श्योरपुर, मुरैना म०प्र० की जिला कार्यकारिणी

पदनाम	नाम	प्रवासी	मो० नम्बर
संरक्षक सदस्य	श्री ब्रजेन्द्र चतुर्वेदी	रामपुर कलॉ	7067234651
	श्री रामस्वरूप चतुर्वेदी	रामपुर कलॉ	9691121018
	श्री हरिनन्दन चतुर्वेदी	रामपुर कलॉ	8999844303
	श्री रामेश्वर चतुर्वेदी	रामपुर कलॉ	8358839655
	श्री अशोक कुमार चतुर्वेदी	रामपुर कलॉ	9898428280
	श्री जगदीश प्रशाद चतुर्वेदी	रामपुर कलॉ	9981198657
	श्री ब्रजेश कुमार चतुर्वेदी	रामपुर कलॉ	9993995275
अध्यक्ष	श्री जानकी प्रसाद चतुर्वेदी	रामपुर कलॉ	9893972030
उपाध्यक्ष	श्री कौशल कुमार चतुर्वेदी	भवनपुर सेंथय	9165257821
उपाध्यक्ष	श्री विजय कुमार चतुर्वेदी	रामपुर कलॉ	9399573490
उपाध्यक्ष	श्री पवन कुमार चतुर्वेदी	बीरपुरश्योपुर	9425703208
उपाध्यक्ष	श्री नरहरी चतुर्वेदी	गोबरा	8959724239
महामंत्री	श्री धर्मेन्द्र चतुर्वेदी	राजा का तोर	9755076120
मंत्री	श्री अखिलेश चतुर्वेदी	विजयपुर श्योपुर	8305065630
मंत्री	श्री शिवकुमार चतुर्वेदी	रामपुरकलॉ	9111909190
मंत्री	श्री प्रभात चतुर्वेदी	रामपुरकलॉ	7067234651
कोषाध्यक्ष	श्री हरीश चतुर्वेदी	रामपुरकलॉ	9755241653
संगठन मंत्री	श्री अनिल कुमार चतुर्वेदी	वीरपुर श्योपुर	9713811515
सांस्कृतिक मंत्री	श्री शिवम चतुर्वेदी	रामपुरकलॉ	7909672472
व्यवस्था मंत्री	श्री उमाकान्त चतुर्वेदी	रामपुरकलॉ	9584931819
व्यवस्था मंत्री	श्री दिनेश चतुर्वेदी	रिद्धोरा मुरैना	7566302073
मीडिया प्रभारी	श्री धर्मेन्द्र चतुर्वेदी (अन्ना)	रामपुरकलॉ	9977671673
प्रवक्ता	श्री विजय चौबे	रामपुरकलॉ	9826968059
सह संयोजक	श्री महावीर प्रसाद चतुर्वेदी	सवलगाढ	7415403985
सह संयोजक	श्री उमेश चतुर्वेदी	गोबरा	9981198657
सदस्य	श्री मधुसूदन चतुर्वेदी	रामपुर	6266718534
	श्री संतोष चतुर्वेदी	रामपुर	9399872092
	श्री भोले चतुर्वेदी	सबलगाढ	9993770059
	श्री दिनेश चतुर्वेदी	रामपुरकलॉ	9977309062
	श्री अशोक चतुर्वेदी	रामपुरकलॉ	7354823417
	श्री पूरन चन्द्र चतुर्वेदी	रामपुरकलॉ	9977309062
	श्री राकेश चतुर्वेदी	रामपुरकलॉ	9131956044
	श्री धर्मवीर चतुर्वेदी	रामपुरकलॉ	9691121018
	श्री मनोज चतुर्वेदी	रामपुरकलॉ	7354035311
	श्री रविन्द्र चतुर्वेदी	रामपुरकलॉ	7415403985
	श्री रमाकान्त चतुर्वेदी	रामपुरकलॉ	7566034951
	श्री ललित चतुर्वेदी	रामपुरकलॉ	9977671673
	श्री सत्यमान चतुर्वेदी	मुरैना	9685484752
विशेष आमंत्रित	श्री भूपेन्द्र चतुर्वेदी	रामपुरकलॉ	8966054879
	श्री राम निवास चतुर्वेदी	मुरैना	9993061527
	श्री राजेन्द्र चतुर्वेदी		9691448864
	श्री मुकुल चतुर्वेदी		9399353272

श्री माथुर चतुर्वेदी महापरिषद जहाँगीरपुर, कासगंज की जिला कार्यकारणी

महोदय,

जहाँगीरपुर, जिला कासगंज (उ.प्र.) की कार्यकारिणी निम्न प्रकार गठित की है। यह कार्यकारिणी आपके तथा राष्ट्रीय महामंत्री (संगठन) के अनुमोदन हेतु प्रस्तुत है—

विशेष आमंत्रित सदस्य

१. श्री विनय कुमार चतुर्वेदी
सरंक्षक, श्री माथुर चतुर्वेदी महापरिषद
२. डा. धीरज कुमार चतुर्वेदी
अध्यक्ष, हरियाणा महापरिषद
३. श्री फतेह चन्द्र (टीटू) अध्यक्ष,
पश्चिम बंगाल महापरिषद
४. श्री नीरज चतुर्वेदी
सभापति, श्री माथुर चतुर्वेदी महापरिषद
५. श्री प्रणव चतुर्वेदी
महामंत्री (संगठन), श्री माथुर चतुर्वेदी महापरिषद

सरंक्षक

१. श्री ब्रिज किशोर चतुर्वेदी
२. श्री मथुरा प्रसाद चतुर्वेदी
३. श्री ब्रह्मानंद चतुर्वेदी
४. श्री रमाकांत चतुर्वेदी
५. श्री रामेश्वर दयाल चतुर्वेदी
६. श्री सुरेन्द्र नाथ चतुर्वेदी
७. श्री वीरेंद्र नाथ चतुर्वेदी
८. श्री फणीश चन्द्र चतुर्वेदी
९. श्री भूपेन्द्र नाथ चतुर्वेदी

अध्यक्ष — श्री किशोरी लाल चतुर्वेदी

उपाध्यक्ष

१. श्री अनूप चतुर्वेदी
२. श्री किशोर चतुर्वेदी
३. श्री नगेन्द्र नाथ चतुर्वेदी
४. श्री चैतन्य कुमार चतुर्वेदी
५. श्री धीरेन्द्र नाथ चतुर्वेदी
६. श्री धनेश (पिटू) कुमार चतुर्वेदी
७. श्री सुनील कुमार चतुर्वेदी
८. श्री उमेश चन्द्र (पुत्र चम्पाराम) चतुर्वेदी

महामंत्री

१. श्री अजय चतुर्वेदी
२. श्री गोविन्द चतुर्वेदी
३. श्री अजीत चतुर्वेदी
४. श्री नागेश (नानू) चतुर्वेदी

मंत्री

१. मुकुल (राजू) चतुर्वेदी
२. श्री मयंक (मिंकू) चतुर्वेदी
३. श्री गौरव चतुर्वेदी

मीडिया प्रभारी

१. श्री नक्षत्र चतुर्वेदी
२. श्री सत्यम चतुर्वेदी

कार्यकारिणी सदस्य

१. श्री राम नाथ चतुर्वेदी
२. श्री सत्येन्द्र (गुड्डू) चतुर्वेदी
३. श्री दलेन्द्र (डब्बू) चतुर्वेदी
४. श्री सौरभ चतुर्वेदी
५. श्री शशी कुमार चतुर्वेदी
६. श्री सुमंत चतुर्वेदी
७. श्री कौशल चतुर्वेदी
८. श्री आशीष चतुर्वेदी
९. श्री आलोक (चंचल) चतुर्वेदी

महिला प्रकोष्ठ

१. श्रीमती त्रिवेणी देवी चतुर्वेदी
२. श्रीमती राजकुमारी चतुर्वेदी
३. श्रीमती मंजुला देवी चतुर्वेदी
४. श्रीमती अनिता देवी चतुर्वेदी
५. श्रीमती प्रीती (पत्नी अनूप) चतुर्वेदी
६. श्रीमती उर्मिला देवी चतुर्वेदी
७. श्रीमती सविता देवी चतुर्वेदी
८. श्रीमती निशा देवी चतुर्वेदी
९. श्रीमती प्रीती (पत्नी गोविन्द) चतुर्वेदी
१०. श्रीमती लता चतुर्वेदी
११. श्रीमती अर्चना चतुर्वेदी
१२. श्रीमती पल्लवी चतुर्वेदी
१३. श्रीमती सुजाता चतुर्वेदी

श्री माधुर चतुर्वेदी महापरिषद् करौली राजस्थान की जिला कार्यकारणी

संरक्षक मंडल-

1. श्री सत्येन चतुर्वेदी करौली
2. श्री धर्मचंद चतुर्वेदी(सायपुर)
3. श्री चतुर्भुज चतुर्वेदी (सायपुर)
4. श्री जमुना लाल चतुर्वेदी (सायपुर)
5. श्री घनश्याम चतुर्वेदी सरपंच (रघुवंशी)

अध्यक्ष-

कैप्टेन श्री परमानंद चतुर्वेदी कीरतपुरा

उपाध्यक्ष-

1. श्री रामजीलाल चतुर्वेदी करौली
2. सूवेदार श्री टीकम चतुर्वेदी सायपुर
3. श्री स्वराज चतुर्वेदी हजारीपुरा
4. श्री नेमीचंद चतुर्वेदी गुनेसरी
5. श्री रामदास चतुर्वेदी रघुवंशी
6. श्री बालकृष्ण चतुर्वेदी रतनपुर
7. श्री जयप्रकाश चतुर्वेदी सेसरीपुरा

व्यवस्था प्रबंधन मंत्री-

श्री वैद्यनाथ चतुर्वेदी गुनेसरी

सह व्यवस्था प्रबंधन मंत्री-

श्री राघव चतुर्वेदी ब.।करौली

जिला मंत्री- श्री रतन जी, अध्यापक रतनपुर

सह मंत्री-

1. श्री रामजीलाल चतुर्वेदी सेसरीपुरा
2. श्री विजेन्द्र चतुर्वेदी रघुवंशी
3. श्री कैलाश चतुर्वेदी हजारीपुरा
4. श्री देवेन्द्र चतुर्वेदी कीरतपुरा
5. श्री बादशाह सेक्रेटरी चतुर्वेदी सायपुर
6. श्री कौशलेंद्र चतुर्वेदी करौली
7. श्री परमानंद चतुर्वेदी गुनेसरी

संगठन मंत्री -

1. श्री राजेश चतुर्वेदी रघुवंशी
2. श्री पूरन प्रताप चतुर्वेदी करौली
3. श्री सुनील चतुर्वेदी कंपाउंडर करौली (सायपुर)
4. श्री लोकेश चतुर्वेदी पुलिस गुनेसरी
5. श्री सुनील चतुर्वेदी (गब्बर) हजारीपुरा
6. श्री विष्णु चतुर्वेदी (उप.सर.) कीरतपुरा

7. श्री अशोक चतुर्वेदी सेसरीपुरा

सांस्कृतिक मंत्री-

1. पं.श्री हरस्वरूप चतुर्वेदी सायपुर
2. सूबेदार श्री मुरारीलाल चतुर्वेदी,सायपुर
- 3.श्री सुनील चतुर्वेदी कीरतपुरा
4. श्री गोपाल चतुर्वेदी सेसरीपुरा
5. श्री सुरेश चतुर्वेदी हजारीपुरा
6. श्री रामाधार चतुर्वेदी सायपुर

मीडिया प्रभारी- श्री मनमोहन चतुर्वेदी सायपुर

प्रवक्ता- श्री ललित चतुर्वेदी रतनपुर

युवा प्रकोष्ठ संयोजक-

श्री उमेश चतुर्वेदी रघुवंशी (पहलवान)

सह संयोजक-

1. श्री दिगंबर चतुर्वेदी फौजी गुनेसरी
2. श्री दयाराम चतुर्वेदी कीरतपुरा
3. श्री सुनील चतुर्वेदी सायपुर
4. श्री सुमित चतुर्वेदी मास्टर हजारीपुरा
5. श्री विजय चतुर्वेदी रतनपुर
6. श्री बृजलाल चतुर्वेदी सेसरीपुरा
7. श्री अंकुश चतुर्वेदी सायपुर
8. श्री हरिओम चतुर्वेदी कीरतपुरा
9. श्री लोकेश चतुर्वेदी श्री ब्रजमोहन गुनेसरी
10. श्री सुनील चतुर्वेदी सायपुर

महिला प्रकोष्ठ संयोजक-

श्रीमती कमला चतुर्वेदी (करौली)

सह संयोजक-

1. श्रीमती सपना चतुर्वेदी हिन्डौन

कार्यकारिणी सदस्य-

1. श्री अंगद चतुर्वेदी गुनेसरी
2. श्री हर वल्लभ चतुर्वेदी सायपुर
3. श्री मुकेश पटेल चतुर्वेदी सायपुर
4. श्री अशोक चतुर्वेदी, श्री रामगिलास जी
5. श्री शेखर चतुर्वेदी, श्री नत्थीलाल जी
6. श्री विकास चतुर्वेदी हिन्डौन सिटी
7. श्री बनवारी चतुर्वेदी रघुवंशी
8. श्री महेश चतुर्वेदी रघुवंशी

≡ समाज दर्पण ≡

9. श्री बृजभान चतुर्वेदी गुनेसरी
10. श्री अरुण चतुर्वेदी कीरतपुरा
11. श्री भगवत चतुर्वेदी कीरतपुरा
12. श्री विक्रम चतुर्वेदी हजारीपुरा
13. श्री रामरूप चतुर्वेदी कीरतपुरा
14. श्री परमानंद चतुर्वेदी रतनपुर
15. श्री कृष्ण कुमार चतुर्वेदी केलादेवी
16. श्री विजेंद्र चतुर्वेदी / श्री मुरारी चतुर्वेदी सायपुर
17. श्री बलवीर चतुर्वेदी कीरतपुरा
18. श्री शेखर चतुर्वेदी / श्री नत्थी लाल चतुर्वेदी सायपुर
19. श्री मोहन चतुर्वेदी / श्री कैलाशी सायपुर
20. श्री रेतीराम चतुर्वेदी कीरतपुरा
21. श्री राज कुमार चतुर्वेदी चतुर्वेदी पुलिस सायपुर
22. श्री दीपक चतुर्वेदी हिंडौन सिटी
23. श्री रामराज चतुर्वेदी रघुवंशी
24. श्री हरिचरण चतुर्वेदी कीरतपुरा
25. श्री केदार चतुर्वेदी मिहारी रघुवंशी

विशेष आमंत्रित सदस्य—

1. श्री रामस्वरूप चतुर्वेदी
2. श्रीसुरेश चतुर्वेदी, करौली
3. श्री राजकुमार चतुर्वेदी, कीरतपुरा
4. श्री नरेन्द्र चतुर्वेदी कीरतपुरा
5. श्री देवेन्द्र चतुर्वेदी, करौली
6. श्री रामरक्षपाल सेसरीपुरा
7. श्री रमेश चंद्र चतुर्वेदी हजारीपुरा
8. श्री अरविंद चतुर्वेदी गुनेसरी ।

सूचना

श्री माथुर चतुर्वेदी महापरिषद राजस्थान प्रदेश कार्यकारणी की मीटिंग 28,29 मई को करौली व कैला देवी में एवं हरियाणा प्रदेश कार्यकारणी की मीटिंग 4 जून को गुरुग्राम में निर्धारित

श्री माथुर चतुर्वेदी महापरिषद राजस्थान के प्रदेश अध्यक्ष श्री हृदयेश चतुर्वेदी ने जानकारी देते हुए बताया की राजस्थान प्रदेश कार्यकारणी की प्रथम बैठक 28, 5.2023शनिवार को साय 6बजे से एटक बोध ग्राम करौली (कैलादेवी) रोड़ पर स्थित परिसर में आयोजित होगी।

29.5.2023को दूसरे दिन प्रातः 8बजे से 10बजे तक मां कैला देवी धाम दर्शन, के बाद 11बजे से श्री माथुर चतुर्वेदी समाज का सम्मेलन व प्रतिभाओं का सम्मान समारोह आयोजित किया जाएगा। जिला कार्यकारणी का शपथ ग्रहण भी होगा। प्रदेश कार्यकारणी मीटिंग में राष्ट्रीय पदाधिकारी गणों को भी आमंत्रण है।

प्रदेश कार्यसमिति व जिला शाखा भी कार्यक्रम में आवश्यक रूप से उपस्थित रहेगी। कार्यक्रम के अयोजन हेतु निम्न समिती गठित की है—

1. श्री सत्येन चतुर्वेदी संयोजक
2. श्री कैप्टन परमानंद चतुर्वेदी जिला अध्यक्ष करौली।
3. श्री रामस्वरूप चतुर्वेदी राष्ट्रीय संगठन मंत्री
4. श्री सुरेश चतुर्वेदी महोली प्रदेश उपाध्यक्ष

समिति में और नाम जिला अध्यक्ष स्वयं विवेक से जोड़ने के लिए अधिकृत किए गए है ।

श्री माथुर चतुर्वेदी महापरिषद हरियाणा के प्रदेश अध्यक्ष श्री डा0 धीरज कुमार चतुर्वेदी ने जानकारी देते हुए बताया की हरियाणा प्रदेश कार्यकारणी की प्रथम बैठक 4.6.2023 रविवार को 11 बजे से सैक्टर 4 स्थित जिम क्लब गुरुग्राम में निर्धारित की गई है।

मीटिंग कार्यक्रम संयोजक श्री प्रणव चतुर्वेदी महामंत्री हरियाणा प्रदेश को बनाते हुए अयोजन समिति गठित करने के लिए अधिकृत किया गया है। मीटिंग में राष्ट्रीय पदाधिकारियों को भी निमंत्रण भेजा जा रहा है।

प्रदेश कार्यकारणी व स्थानीय श्री माथुर चतुर्वेदी समाज की उपस्थिति आवश्यक रहेगी। सभी को निमंत्रित किया जा रहा है।

प्रणव चतुर्वेदी

महामंत्री संगठन

श्री माथुर चतुर्वेदी महापरिषद

समाज दर्पण

निवेदन

कल 30 अप्रैल को जनगणना का प्रथम पड़ाव पूर्ण हुआ और द्वितीय आज 1 मई से शुरू हो रहा है।

और यह प्रक्रिया प्रति माह इसी तरह तब तक चलती रहेगी जब तक कि हम संपूर्ण माथुर चतुर्वेदी समाज को एक सूत्र में पिरो नहीं लेते हैं।

अभी तक हम अपने ही महापरिषद के ग्रुप में जनगणना से संबंधित मैसेज बार बार पोस्ट करते थे, लेकिन अब हमें अपने

ग्रुप से बाहर समाज के अन्य ग्रुप में अपनी बात पहुंचानी है, साथ ही जो हमारे व्यक्तिगत परिचित लोग हैं उन्हें हमें व्यक्तिगत रूप से संपर्क करना है, तभी हम संपूर्ण समाज तक पहुंचने में सफल होंगे। इसलिए अब प्रयास ऐसा हो कि हम संपूर्ण विश्व में फैले अपने सभी भाइयों को अपने से जोड़ पायें।

आप सभी से इस सामाजिक कार्य में सतत सक्रिय सहयोग की अपेक्षा है और अगर किसी को गूगल फॉर्म भरने में कोई दिक्कत है तो वह नीचे दिए physical फॉर्म को भरकर मुझे watsup no.9820132000 पर भेज सकते हैं। —धन्यवाद



श्री माथुरा चतुर्वेदी महापरिषद

(चतुर्वेदी समाज का अपना मंच)

ए-4 भास्कर एनक्लेब 11, पत्रकार कॉलोनी, जयपुर

1. नाम
2. पिता का नाम/ पति का नाम
3. उम्र
4. जन्म तिथि पुरुष स्त्री
5. लिंग वैवाहिक अवैवाहिक अन्य
6. वैवाहिक स्थिति
7. परिवार के मुखिया से सम्बन्ध
8. वर्तमान पता
9. वर्तमान शहर का नाम
10. मूल पैतृक घर का पता स्थाई
11. मोबाईल नं
12. ई-मेल पता
13. गौत्र
14. ब्लड ग्रुप A- A+ B- B+ AB+ AB- O+ O-
15. परिवार के सदस्यों की संख्या
16. शैक्षिक स्थिति- प्रारम्भिक शिक्षा 10 पास स्नातक बी. काम बीएससी
बी.ए एम.कॉम एमससी. एम.ए अन्य
बेरोजगार नौकरी व्यापार अन्य
17. व्यवसाय-
18. कार्य की प्रकृति
19. पारिवारिक आय (लाख में) 2.5 से कम 2.5 से 5 5 से 10 10 से ज्यादा
20. किसी प्रकार की सहायता शिक्षा स्वास्थ्य रोजगार वृद्धावस्था पेंशन
बच्चों की शादी के सम्बन्ध में कानूनी सलाह अन्य
21. अपने विचार-

श्री माथुर चतुर्वेदी महापरिषद उत्तराखण्ड प्रदेश कार्यकारिणी की प्रथम बैठक हरिद्वार में संपन्न



श्री माथुर चतुर्वेदी उत्तराखण्ड परिषद की प्रथम परिचय सम्मेलन दिनांक 23.04.2023 को हरिद्वार स्थित चेतन देव कुटिया कनखल में प्रदेश अध्यक्ष उत्तराखण्ड श्री (रवि) रविन्द्रनाथ चतुर्वेदी, संरक्षक श्री हर्ष चतुर्वेदी, महामंत्री श्री कीर्ति पाठक, उपाध्यक्ष श्री गोपाल चतुर्वेदी, (एडवाकेट) द्वारा आयोजित करायी गयी बैठक में सभी माथुर चतुर्वेदियों को जोड़ने का प्रयास किया जा रहा है जो भी चतुर्वेदी मथुरा से निकल कर देश-विदेश में रह रहे हैं उनको समाज के साथ जोड़ा जा रहा है। पिछले महीने माथुर चतुर्वेदी परिषद की कार्यकारिणी की प्रथम बैठक चंडीगढ़ पंजाब में प्रदेश अध्यक्ष श्री किशन चतुर्वेदी द्वारा आयोजित करवाई गयी जिसमें सभापति श्री नीरज चतुर्वेदी, जयपुर महासचिव श्री प्रणव चतुर्वेदी, कानपुर सभी संरक्षक एवं 15 राज्यों के प्रदेश अध्यक्षों ने भाग लेकर अपने-अपने विचार रखे माथुर चतुर्वेदी परिषद का सबसे पहले अपने समाज को जोड़ने का कार्य बड़े जोर-शोर से किया जा रहा है। अभी तक पूरे देश-विदेश से लगभग 5 हजार चतुर्वेदियों को जोड़ा जा चुका है। माथुर चतुर्वेदी परिषद अपने स्तर पर गरीबों की आर्थिक मदद एवं बेरोजगार युवक-युवतियों को रोजगार देने सम्बन्धी कार्य कर रही है। इसमें चतुर्वेदी लड़के व लड़कियों के विवाह सम्बन्धी कार्य भी किया जा रहा है। अभी तक चतुर्वेदियों के 35 परिवार देहरादून एवं 25 परिवार हरिद्वार में रह रहे हैं माथुर चतुर्वेदी परिषद में 15 राज्यों में कार्यकारिणी बना चुकी है। राष्ट्रीय स्तर पर महिलाओं की पूर्ण कार्यकारिणी बन चुकी है। जनगणना हेतु श्री सी०पी० चतुर्वेदी राष्ट्रीय संयोजक के

नेतृत्व में 5 सदस्यों की टैक्निकल टीम का गठन किया जा चुका है जो वैवहिक एवं न्यायालय प्रकरणों में मदद एवं सामंजस्य स्थापित करने के उद्देश्य से कार्य कर रही है। एक टीम एडवोकेट की तैयार की गई है जो न्यायालय का कार्य निशुल्क करेगी चतुर्वेदी जनगणना का कार्य लिंक द्वारा किया जा रहा है। एवं शपथ पत्र भी भरवाये जा रहें हैं। अन्त में माथुर चतुर्वेदी परिषद उत्तराखण्ड से पधारे सदस्यों का

आभार एवं धन्यवाद प्रकट करता है। बैठक में उपस्थित सदस्यों का श्री पियूष चतुर्वेदी हलद्वानी श्री गुड्डू चतुर्वेदी प्रबन्धक मंत्री श्री तरुण चतुर्वेदी मंत्री श्रीमती रीना चतुर्वेदी महिला प्रकोष्ठ मंत्री एडवोकेट श्रीमती विदुषी चतुर्वेदी सलाहकार मंत्री उपाध्यक्ष श्री गोपेश्वरनाथ चतुर्वेदी उपस्थित रहे।

प्रदेश अध्यक्ष उत्तराखण्ड
(रवि) रविन्द्रनाथ चतुर्वेदी

लखनऊ में गोष्ठी आयोजित

श्री माथुर चतुर्वेदी महापरिषद, उत्तरप्रदेश प्रांत के प्रांतीय अध्यक्ष डॉ० सुजीत चतुर्वेदी एवं प्रांतीय महामंत्री हरीश जी द्वारा जनसम्पर्क कार्यक्रम के अंतर्गत नवीन जी के आवास गोमतीनगर पर रविवार दिनांक २३-४-२०२३ को एक अनौपचारिक गोष्ठी का आयोजन किया गया। इसमें महापरिषद की गतिविधियों पर चर्चा के अतिरिक्त सम्बंधित महानुभावों के परिवारों से सम्बंधित जनगणना प्रारूप और संकल्प-पत्र पूर्ण करवाए गये।

गोष्ठी में डा०शिप्रा जी, अनिल जी 'टिल्लू' संरक्षक उ०प्र०प्रांत एवं सुबोध जी, संरक्षक केंद्रीय कार्यकारिणी की भी उपस्थिति उल्लेखनीय रही।

हरीश चतुर्वेदी
महामंत्री



भूल-सुधार

अप्रैल माह की पत्रिका में प्रकाशित होने से छूटे नाम

- 1- राष्ट्रीय कार्यकारिणी में उप सभापति -
(क) डॉ. आर. एस. चतुर्वेदी जोधपुर
(ख) मंत्री- श्री मोहित चतुर्वेदी प्रयागराज
- 3- संयुक्त सचिव -
(क) श्री सर्वेश चतुर्वेदी कानपुर
(ख) श्री सौरभ चतुर्वेदी करंटी
- 4- राष्ट्रीय कार्यकारिणी में संगठन मंत्री -
(क) श्री मिर्दुल चतुर्वेदी जबलपुर,
(ख) श्री राजकुमार पाठक अहमदाबाद
- 5- राष्ट्रीय सांस्कृतिक मंत्री -
(क) श्रीमती गंगा रानी चतुर्वेदी
- 6- राष्ट्रीय सांस्कृतिक कार्यक्रम मंत्री -
(क) श्रीमती कल्पना चौबे नागपुर
(ख) श्रीमति पंकज चतुर्वेदी सृष्टि दिल्ली,
(ग) श्रीमती मीना चतुर्वेदी कलकत्ता
- 7- श्री माथुर चतुर्वेदी महिला महापरिषद की राष्ट्रीय प्रभारी-
श्रीमती प्रीति चतुर्वेदी कानपुर
- 8- राष्ट्रीय संयोजक युवा परिषद -
श्री आशीष चतुर्वेदी मथुरा
- 9- पश्चिम बंगाल महिला प्रकोष्ठ में राखी चतुर्वेदी का नाम
अप्रैल के अंक में भूलवश छूट गया।
- 10- राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्य नवीन कुमार चतुर्वेदी कानपुर
का मोबाइल नं० 7398384858 सही है।

जनम चतुर्वेदी कुल लीना

(सभी चौबे भाइयों को समर्पित एक रचना)

पूरब जनम पुन्य कछु कीना,
जनम चतुर्वेदी कुल लीना।
चक्क माल हम दाबनहारे,
खूब करौ हमरे मनुहारे
भाग छान बन जायँ बिधाता,
लोटा में यह विश्व समाता।
दूध मलाई के सौकीना,
मस्तराम सब कला प्रबीना।
रबडी राजभोग अरु मेवा,
हम सौं बढकें और न देवा।
चंद्रकला मेसू सुखादाई,
रस में डूबी चक्क मलाई।
जो श्रीखंड सामने आवै,
रुच रुच चौबे भोग लगावै।
रुखे सूखे माल न भावें,
सदा रसीले भोजन पावें।
मूंग भात कौ स्वाद बखानों,
सखरौ साग मनहि हरसानों।
सूखी अरबी बिबिध अचारा,
नित्य मनं हमरे त्यौहारा।
फूली फूली झोल कचौड़ी,
हलबाई दै गयौ किरौड़ी।
सन्नाटौ सब कब्ज मिटाबै,
रोग धोग सब दूर भगाबै।
भोजन करिबे हमें बुलाओ,
चौबेजी सौं आसिस पाओ।
चौबे जी कौ भोग लगाओ,
जनम जनम के पाप भगाओ।



डॉ ब्रजभूषण चतुर्वेदी 'दीपक'
वृन्दावन

मेरी माँ

मेरी माँ सबसे प्यारी हैं
मेरी माँ सबसे न्यारी हैं
जब मैं माँ की गोद में आई
सब लोगो ने दी बधाई
घर आंगन में खुशिया छाई
जब माँ शब्द बोलना सीखा
मुझे देख खुश होती माँ
मुझको गले लगाती माँ
ऐसी हैं मेरी प्यारी माँ
हाथ पकड़कर चलना सिखाया
मुझको जीवन जीना सिखाया
मेरी प्रथम गुरु है माँ
जग में सबसे न्यारी है माँ
पढ़ना लिखना मुझे सिखाया
सर्व गुण संपन्न बनाया
अच्छे बुरे का ज्ञान कराया
आत्म निर्भर बनना सिखाया
फिर भी करती थी मनमानी
माँ ने बोला यह सब छोड़
ले जीवन में एक मोड़
मेरी बिटिया हुई सयानी
छोड़ दे तू अपनी मनमानी
जीवन में कुछ करना है
सत्य की राह पर चलना है
तभी बनेगी मेरी बेटी महान
जग में होगा तैरा नाम
मुझसे बोली वचन मुझे दे
ज्ञान की ज्योति जलायेगी
खुद पढ़ लिख कर दूसरों को पढ़ाएगी
मैंने दिए वचन को निभाया



श्रीमती रेखा चतुर्वेदी
मंसूरी, उत्तराखण्ड

गजल

छुप- छुप के बार-बार खँगाले तुम्हारे खत।
हमने हैं कैसे-कैसे सँभाले तुम्हारे खत।

पढ़कर मिले सुकून दिल-ए-बेकरार को,
मेरे लिए हैं जैसे रिसाले तुम्हारे खत।

गोया कि मिल गये हों वो बीते पुराने पल,
लगते हैं तीरगी में उजाले तुम्हारे खत।

घुल-मिल गए हैं जिसमें अहसासो-ख्वाब सब,
लगता है वस्ल के हों पियाले तुम्हारे खत।

इतने अलग हैं जाविये रंग-ढंग कि क्या कहें,
हमको लगे हैं सबसे निराले तुम्हारे खत।

होती हैं खुशबुओं से मुअत्तर ये धड़कनें,
हमने कभी जो यूँ ही उछाले तुम्हारे खत।

हमसे तुम्हारे इश्क का होगा न तजकिरा,
लब पे लगाएँ आज भी ताले तुम्हारे खत।

अब तो बचे न खत न खतों का वो इंतजार,
यादों के जैसे हैं ये शिवाले तुम्हारे खत।

चलती रही है भीड़ में 'रूपम' तो फर्द ही,
जह्नो- जिगर में अपने सँभाले तुम्हारे खत।



निरुपमा चतुर्वेदी 'रूपम'
4/206, रॉयल ग्रीन अपार्टमेंट,
सिरसी रोड, जयपुर (राज.)
मो0-9352765922 ,9983912042

चतुर्वेदी यशोगाथा

ब्रज रज कण कण साक्षी है। मथुरा का जन जन साक्षी है।।

वनस्थली जो ऋषि मुनियों की,
कुटियों का त्रण त्रण साक्षी है।।

यमुना की झिलमिल लहरों में,
ब्रज के गांव गांव शहरों में।

चतुर्वेद, संहिता पुराण में भक्तों की अरदास में।
पढ़ी चतुर्वेदी यश गाथा, हमने तो इतिहास में।।

सरस्वती के परम उपासक।
चरण वंदना करते शासक।।

शास्त्रार्थ और मल्ल अखाड़े।
धीर धुरंधर वीर पछाड़ें।।

वेद ऋचा और मंत्र प्रणेता।
साक्षी है द्वापर और त्रेता।।

पंडित, वैध, कवि गुणग्राही, हास और परिहास में।
सुनी चतुर्वेदी यश गाथा, हमने तो इतिहास में।।

कृष्ण हुए थे सखा हमारे।
वे हमको हम उनको प्यारे।।

कहती ये सब कथा भागवत।
यदुकुल के हम गुरु पूज्यवत।।

तुर्कों से रण किया भयानक।
रहे पूज्य, युद्धों के नायक।।

सरस्वती के परम उपासक, सदा हर्ष उल्लास में।
सुनी चतुर्वेदी यशगाथा, हमने तो इतिहास में।।

समय चक्र के बदले पाये।
संघर्षों ने हम विखराये।।

मथुरा छोड़ हमारे ही परिजन।
अन्य ठौर पर बसे बहुत जन।।

कहलाये हम माथुर भैया।
बसी हृदय में यमुना मैया।

दीर्घकाल में युग परिवर्तित।
आपस में हम हुये अपरिचित।।

पुनः प्रयास किया परिषद ने लिए सभी विश्वास में।
सुनी चतुर्वेदी यशगाथा हमने तो इतिहास में।।

रचियता- रामस्वरूप चतुर्वेदी करौली
संगठन मंत्री श्री माथुर चतुर्वेदी महापरिषद



चौबे जी की मस्ती

डार अँगोछा चले बगीची,
छनवे की तैयारी है।
केसर, पिस्ते, सौंफ, इलायची,
गुलकंदी रस वारी है।

बैठे भये संग हमजोली,
होन लगी अब हँसी ठिठोली,
लम्बी लम्बी तान लगावें,
रस भक्ति कौ मिल बरसावें।

पट्ट झाड़ कें बिछी चटाई,
सिल लोढ़ी भीतर सों आई।
ठंडे जल कुआ के आये,
भर लोटा छिड़काव कराये।

चटकन लगे कंठ अब सबके,
हेला पड़कें घर कों लपके।
कुल्हड़ हाथ दही कौ कीन्हो,
बूरौ डार प्रेम सों लीन्हो।

कारी मिर्च अमनिया कीन्ही,
घुटवे कों सिल पे रख लीन्ही।
एक एक कर समिग्री आवै,
पिस पिस कें गोला बन जावै।

मूँद आँख ब्यारु कर लीन्ही,
आसमान सों बातें कीन्ही।
नित्य कृपा प्रभु यों बरसाओ,
जीवन नैय्या जीवन पार लगाओ।

संकलन कर्ता— मनीष चतुर्वेदी
इटावा वाले

बैठे सब घेरी सिल ऐसें,
मेला लगौ होय कोउ जैसें।
मलमल की साफी लै आये,
बारी सों गोला छनवाये।

हो हल्ला होवे है भारी,
अब प्रसाद की है तैय्यारी।
टीप लगामें बृज के राजा,
लोटा लैवे जल्दी आ जा।

“पालागन”

पालागन प्रेम है,
पालागन अनुशासन है
पालागन शीतलता है,
पालागन आदर सिखाता है
पालागन से सुविचार आते हैं,
पालागन झुकना सिखाता है
पालागन क्रोध मिटाता है
पालागन आँसू धो देता है
पालागन अहंकार मिटाता है,
पालागन हमारी संस्कृति है,
और हमारी संस्कृति ही,
हमारी अमूल्य विरासत है।
जिसका संरक्षण अति आवश्यक है,
आगे संकल्पित हो पालागन करें,
पालागन का दिल से सम्मान करें।
(सादर—पालागन)



भर लोटा ठंडायी पावें,
बड़ी सुरीली सभी बतावें।
निकर सरोंता कटी सुपारी,
बनै टैम होवै तय्यारी।

लोटा लै कैं दल चल दीन्हो,
कौन्हो पकड़ खेत को लीन्हो।
झूमत भये लौट कें आमैं,
चेहरा ते सिगरे मुस्कामैं।

आशुतोष चतुर्वेदी “आशु”
जयपुर

शोक संवदेना

- 1- मनीष चतुर्वेदी के लघु भ्राता अनूप चतुर्वेदी सुल्तानपुर का ट्रेन एक्सीडेंट में निधन होने पर विनम्र श्रद्धांजलि।
- 2- चि0 मनन सुपुत्र श्री मनोज कुमार पिनाहट/चारबाग का 19 दिसम्बर को दुर्घटनाग्रस्त होने के बाद लोहिया अस्पताल में निधन होने पर विनम्र श्रद्धांजलि।
- 3- मनीष चतुर्वेदी पुत्र स्व0 हरेश चतुर्वेदी एडवोकेट मैनपुरी/इलाहाबाद का दुर्घटनाग्रस्त होने के बाद 21 दिसम्बर को निधन होने पर विनम्र श्रद्धांजलि।
- 4- श्रीमती आशा पत्नी श्री अशोक कुमार चतुर्वेदी बिजकौली/ग्वालियर में निधन होने पर विनम्र श्रद्धांजलि।
- 5- अनिल चतुर्वेदी पुत्र स्व0 कामता प्रसाद चतुर्वेदी होलीपुरा/रिषडा का निधन होने पर विनम्र श्रद्धांजलि।
- 6- शिवलाल जी चतुर्वेदी मथुरा निवासी का निधन होने पर विनम्र श्रद्धांजलि।
- 7- श्री प्रमोद चतुर्वेदी (विट्ठल) पुत्र स्व0 श्री रामनरेश चतुर्वेदी गोहद प्रवासी ग्वालियर अमरकंटकर एंक्लेव निवासी का निधन होने पर विनम्र श्रद्धांजलि।
- 8- श्री अवधेश चन्द्र चतुर्वेदी मैनपुरी का वसुंधरा में निधन होने पर विनम्र श्रद्धांजलि।
- 9- श्री राजबहादुर चतुर्वेदी (घसीटू चाचा) होलीपुरा/गुडगांव का निधन होने पर विनम्र श्रद्धांजलि।
- 10- सौरभ चतुर्वेदी की माँ श्रीमती साधना चतुर्वेदी का निधन होने पर विनम्र श्रद्धांजलि।
- 11- श्री हरि प्रसाद चतुर्वेदी पुत्र श्री भगवती प्रसाद चतुर्वेदी का आकस्मिक गंगापुर सिटी में निधन होने पर विनम्र श्रद्धांजलि।
- 11- श्री प्रकाश चतुर्वेदी (मुन्ना) का दुखद निधन जयपुर में होने पर विनम्र श्रद्धांजलि।
- 12- श्री रवी कुमार जी के निधन पर विनम्र श्रद्धांजलि।
- 13- श्री सिद्धार्थ चतुर्वेदी पुत्र श्री सलिल चतुर्वेदी (बंटी) कमतरी/कानपुर का निधन होने पर विनम्र श्रद्धांजलि।
- 14- श्रीमती कस्तुरी देवी पत्नी स्वर्गीय श्री इन्द्रजीत चतुर्वेदी कछपुरा/आगरा का निधन होने पर विनम्र श्रद्धांजलि।
- 15- श्रीमती पूनम चतुर्वेदी (हटिया/कानपुर) का निधन होने पर विनम्र श्रद्धांजलि।
- 16- श्री राजेन्द्र कुमार चतुर्वेदी "रजुआ" भोपाल निवासी तालगांव प्रवासी का निधन होने पर विनम्र श्रद्धांजलि।
- 17- श्रीमती प्रतिभा चतुर्वेदी पत्नी श्री बटुकनाथ चतुर्वेदी कमलानगर आगरा/चन्द्रपुर का निधन होने पर विनम्र श्रद्धांजलि।
- 18- श्री पंकज चतुर्वेदी पुत्र स्व0 कृष्ण चतुर्वेदी मैनपुरी का कैंसर की लम्बी बीमारी के बाद निधन होने पर विनम्र श्रद्धांजलि।
- 19- श्री बालकृष्ण जी चतुर्वेदी के आकस्मिक निधन पर विनम्र श्रद्धांजलि।
- 20- श्री गौरव चतुर्वेदी पुत्र स्व0 श्री रमेश चन्द्र चतुर्वेदी निवासी चन्द्रपुर प्रवासी दिल्ली का आकस्मिक निधन होने पर विनम्र श्रद्धांजलि।
- 21- श्री वीरेन्द्र चतुर्वेदी (लटूरी) के सुपुत्र मनीष चतुर्वेदी का अल्पआयु में जयपुर में निधन होने पर विनम्र श्रद्धांजलि।
- 22- श्री हितेन्द्र नाथ चतुर्वेदी के पुत्र अंकित चतुर्वेदी की पत्नी रश्मि का मुम्बई में निधन होने पर विनम्र श्रद्धांजलि। सभी दिवंगत जनों को प्रभू अपने श्री चरणों में वास दे एवं पूरे परिवार को दुख सहने की शक्ति प्रदान करे।
- 23- श्री त्रिलोकी नाथ जी सुपुत्र स्व0 ताराचन्द्र जी होलीपुरा का 76 वर्ष की उम्र में कोलकाता में निधन होने पर विनम्र श्रद्धांजलि।

श्री माथुर चतुर्वेदी महा परिषद परिवार द्वारा सभी दुखी परिवारों के आत्मीजनों के प्रति संवेदना प्रकट करता है।

मेथी मून्ग का साग

साग तो आप पर कई तरह के खाये होंगे आपको जो साग बताने जा रहे हैं वह हरी मेथी और मूंग की छिलके वाली दाल के साथ बनाया जाता है आइये प्रारम्भ करते हैं-

सामग्री

हल्दी आधा चम्मच

बेसन 3/4 कप

छिलके वाली मूंग दाल 3/4 कप

मेथी के पत्ते एक कप

मट्ठा आधा लीटर

1.5 ग्लास पानी

नमक स्वाद अनुसार



तड़के के लिए सामग्री

राई आधा चम्मच

हीन्गा चौथाई चम्मच

मेथी दाने 15

सरसो का तेल दो बड़े चम्मच

सुखी लाल मिर्च चार टुकड़े कर के

पिसी लाल मिर्च एक चम्मच

सर्वप्रथम मेथी के पत्ते और छिलके वाली मूंग दाल को अच्छे से धो कर एक प्रेशर कुकर में एक ग्लास पानी डाल कर पांच सीटी आने तक पका लें। इधर दूसरी ओर बेसन, हल्दी, मट्ठे और 1.5 ग्लास पानी को एक बड़ी कढ़ाई में डाल कर अच्छे से मिला ले अब इसे गैस पर रख दे. गैस को मध्यम रखे और इसे तब तक चलाते रहे जब तक इस मिश्रण में उबाल ना आ जाये. जब उबाल आ जाये तो प्रेशर कुकर से दाल और मेथी को निकाल कर इसी में मिला दे और नमक डाल कर फिर उबाल आने तक चलाते रहे ध्यान रहे चलाना इस लिये जरुरी है क्योंकि नमक डालते ही मिश्रण के फटने का डर रहता है तो जब तक उबाल ना आ जाये चलाते रहे. अब उबाल आने पर पांच से दस मिनट तक और पकाये .

अब तड़के के लिये एक पैन में सरसो का तेल डाल कर गरम होने दे फिर इस में हीन्गा ,राई ,मेथी दाने, सुखी लाल मिर्च और लाल मिर्च पावडर डाल दे. तड़का तैयार है इसे कढ़ी के उपर डाल दे. अब गरम रोटी या चावल के साथ खायें।

वन्दना चतुर्वेदी

पत्नी श्री अनुराग चतुर्वेदी, चंडीगढ़

श्री माथुर चतुर्वेदी महापरिषद की पत्रिका में प्रकाशन के लिए प्रस्तावित सहयोग राशि की सारिणी

1	अंतिम कवर-रंगीन	5000.00
2	भीतरी कवर -रंगीन	4000.00
3	पूरा पृष्ठ -रंगीन	3000.00
4	पूरा पृष्ठ-श्वेत श्याम	2000.00
5	आधा पृष्ठ-श्वेत श्याम	1000.00
6	चौथाई पृष्ठ- श्वेत श्याम	500.00
7	शुभकामना संदेश-श्वेत श्याम-1/6	500.00
8	श्रद्धांजलि-पूर्ण पृष्ठ श्वेत-श्याम	1000.00
9	श्रद्धांजलि-आधा पृष्ठ श्वेत-श्याम	500.00
10	श्रद्धांजलि-पूर्ण पृष्ठ रंगीन	2000.00
11	श्रद्धांजलि-द्वितीय/भीतरी कवर रंगीन पृष्ठ	3000.00
12	बधाई/शुभकामना पूर्ण पृष्ठ रंगीन	1000.00
13	श्वेत-श्याम 1/4 पेज	500.00

मिलन का श्री गणेश कुछ ऐसा होगा कल्पित नहीं था श्रुतुल वी एन चतुर्वेदी

विश्व भर में प्रवासित एवं निवासित चतुर्वेदी बांधवों को अत्यधिक हर्ष का अनुभव तब हुआ जब चंडीगढ़ में राष्ट्रीय कार्यकारिणी की बैठक पहली बार संपन्न हुई। क्या अद्भुत दृश्य था। कैसे कैसे महानुभाव परस्पर मिलकर आत्म विभोर थे। सच मुच आत्मा को स्पर्श करने वाले मनोहारी पल सर्वदा अमिट छाप के साथ में मन मस्तिष्क पर अंकित रहेंगे।

श्री माथुर चतुर्वेदी महापरिषद की प्रथम कार्यकारिणी बैठक 09 अप्रैल 2023 को चंडीगढ़ में आयोजित की गई जो अपने आप में अद्वितीय थी। पहली बार देश के विभिन्न कोनों में रहने वाले बांधव एक छत के नीचे एकसाथ एकत्रित हुए और उस क्षेत्र का प्रतिनिधित्व किया। जहां हजारों की संख्या में अपने चतुर्वेदी बांधव निवास करते हैं। अल्पसमय में प्रथम पत्रिका का विमोचन भी सबके प्रयास से संभव हो सका जो बहुत ही सराहनीय रहा। आधे दर्जन से अधिक आदरणीय संरक्षक जनों का शामिल होना और उनका मार्गदर्शन मिलना जिसमें पंजाब प्रदेश अध्यक्ष भाई किशन चतुर्वेदी जी एवं उनकी टीम द्वारा की गई व्यवस्था ने चार चांद लगा दिए। चंडीगढ़ के महानिरीक्षक पुलिस राजेश सोढ़ी,

संरक्षक बृजमोहन जी, हीरा लाल पाण्डेय, महेश मिश्रा, एडवोकेट वी एन चतुर्वेदी, सुबोध चतुर्वेदी, निकिता चतुर्वेदी, आशीष चतुर्वेदी, यशस्वी सभापति नीरज चतुर्वेदी, जनगणना संयोजक सी पी चतुर्वेदी के ऊर्जा प्रदान करने वाले उद्बोधन और प्रणव चतुर्वेदी चेतन का सफल संचालन ने कार्यक्रम को जो भव्यता और गरिमा प्रदान की। कई ज्वलंत मुद्दों पर सार्थक चर्चा का होना। जैसे चतुर्वेदी समाज की जनगणना और उसके लाभ, महिलाओं की समस्याएं, युवाओं की समस्याएं, बच्चों के 12वीं पास करने के बाद कैरियर काउंसलिंग तथा व्यवसाय के अनुसार लिस्ट तैयार करने पर बल दिया गया। जिससे समाज के लोगों को चतुर्वेदी डाक्टर, वकील, इंजिनियर का सीधा लाभ प्राप्त हो सकेगा।

इस बैठक में पधारने वाले सभी वक्ताओं के विचार और बिना बोले भी लोगों के दिलों और दिमाग में उतर जाने वाले भाव भविष्य में हम सबको मार्गदर्शन करेंगे और आत्मबल प्रदान करेंगे ऐसा विश्वास है। आने वालों एवं ना आने वालों को भी इस राष्ट्रीय समागम की बहुत-बहुत बधाई।

कैमरे की नजर से कुछ बोलतीं तस्वीरें.....



≡ समाज दर्पण ≡

जनगणना एवं सदस्यता अभियान



गुरुग्राम हरियाणा में प्रवण चतुर्वेदी द्वारा सदस्यता एवं जनगणना फार्म भर्वाते हुये



इटावा (उ०प्र०) में कपिल चतुर्वेदी द्वारा सदस्यता एवं जनगणना फार्म भर्वाते हुये



गौरव के पल

राष्ट्रवादी संगठन सैल्यूट तिरंगा संस्थान ने दिल्ली में 50 महिलाओं को किया सम्मानित
जनपद से उ०प्र० महिला प्रकोष्ठ की प्रदेश कार्यकारी अध्यक्ष
विनिता चतुर्वेदी इटावा को मिला सम्मान



विनिता चतुर्वेदी को सम्मानित करती हुई उत्तराखण्ड विधानसभा स्पीकर रितु खंडूरी एवं सुरभि तिवारी

राष्ट्रवादी संगठन सैल्यूट तिरंगा ने नई दिल्ली के वेस्टर्न कोर्ट में एक विशेष महिला सम्मान समारोह का आयोजन किया गया जिसमें देश भर से आई हुई 50 महिलाओं को सम्मानित किया गया। जिसमें से उत्तर प्रदेश से दो महिलाओं को सम्मानित किया गया था।

इस विशेष कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में उत्तराखण्ड की विधानसभा स्पीकर श्रीमती रितु खंडूरी उपस्थित रही व संस्था के राष्ट्रीय अध्यक्ष राजेश झा, राष्ट्रीय महामंत्री जी के पाठक, उत्तर प्रदेश के अध्यक्ष राजकुमार सिंह "मान" और अन्य पदाधिकारी सम्मिलित हुए।

कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि के रूप में नई दिल्ली सांसद मनोज तिवारी की पत्नी सुरभि तिवारी भी उपस्थित रही और उन्होंने मातृशक्ति को संबोधित करते हुए कहा कि मातृशक्ति पहले

अपने आप को पहचाने और कौशल्या, जीजाबाई और भागीरथी सिपारे जैसी मां बनें तब ही श्री राम, शिवाजी और लक्ष्मी बाई जैसी संतानों को जन्म मिलेगा। उन्होंने इस अवसर पर स्वरचित गीत सुनाया "आओ संस्कार वाले बच्चे जनें आओ राष्ट्रीय निर्माण करें"।

इस विशेष कार्यक्रम में उ० प्र० से जनपद इटावा की सैल्यूट तिरंगा महिला प्रकोष्ठ की प्रदेश कार्यकारी अध्यक्ष विनिता चतुर्वेदी को उनके द्वारा महिलाओं के उत्थान के लिए किए गए कार्यों के लिए मुख्य अतिथि श्रीमती रितु खंडूरी के द्वारा सम्मानित किया गया। उन्हें सम्मानित किए जाने पर श्री माथुर चतुर्वेदी महापरिषद के राष्ट्रीय सभापति नीरज चतुर्वेदी जी, महामंत्री प्रणव चतुर्वेदी चेतन एवं महामंत्री निशीथ चतुर्वेदी ने बधाई देते हुए विनिता जी को उज्ज्वल भविष्य के लिए मंगलकामनाएं दी हैं।

chardham



12Night/13Days

yatra

5 july 2023

yumnotri
Gangotri
Kedarnath
Badrinath

package Include

. Stay .Meals.
Transfers .Tour guide

Mr. Shriram Chaturvedi

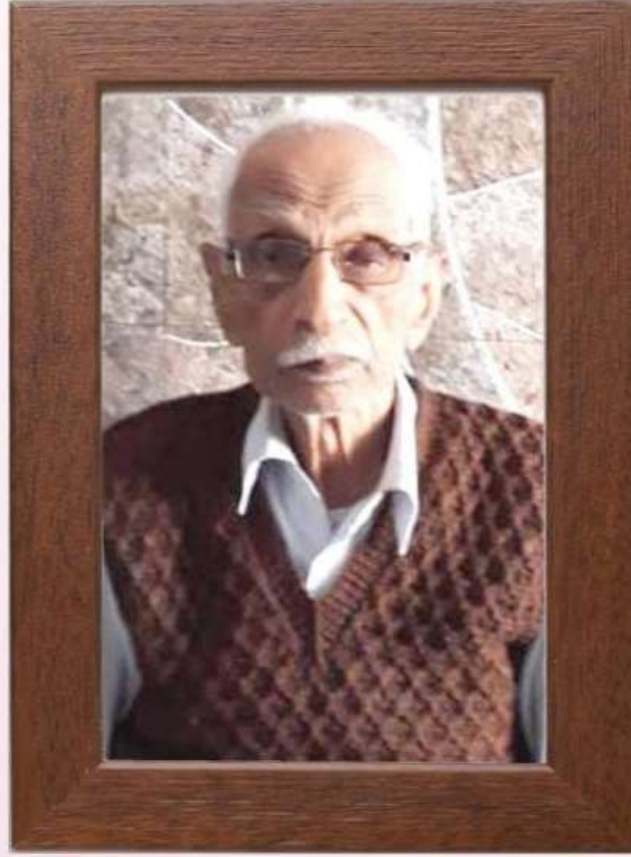
For more Details Contact Us At

9826488213 , 8770433936

Youtube 

→ Hitamvande Rasdhara

श्रद्धाजंली



-: जन्म :-
06.09.1922
-: स्वर्गवास :-
05.05.2020

स्व. दिनेश चन्द्र चतुर्वेदी

सुपुत्र स्व. बाबू राम चतुर्वेदी (मैनपुरी)

भूतपूर्व संपादक चतुर्वेदी पत्रिका

श्रद्धानवत परिवार

पुत्र एवं पुत्रवधू- गिरज किशोर (काका) - सुनीला, नीरज, मुकुल - छाया
पुत्री एवं दामाद- कश्मीरी - स्व.जयकृष्ण, सुमन- देवेन्द्रनाथ
पौत्र एवं पौत्री- कैप्टन विनीत - कृतिका, विशाल - आकांक्षा, श्रुति-अभिषेक, शुभ्रम
प्रपौत्र एवं प्रपौत्री- युवान, नायरा
मोबाइल नंबर- 8779352835, 7042424054